No 2

अथ विवाह के पद लिष्यते ॥ राग रामकली ॥ सुत तेरे चलत न ब्या
ह की बात मेरो कह्यो मानि मन मोहन जत जाग जोरी की बात १ ल
रिका दैव बडी भई तिसी लाते संजन संकाल हूधर है हौ पुनि बहुते
रो कहे हूं पअै घर जात ॥ २ ॥ सुंदर रसनौ रिसुलज्जन कन्या चंपकव
ने गात परमानंद स्याम लीए आवत घरी सांझ के प्रात ३ ॥
अगिन छाडि मान कह्यो मेरो चपल चोर होए अहे अहे डोलत
कोन करैगो विह्याउ तेरो ॥ १ ॥ सील गहे तो सब ब्रज जन के आयो
जसोमती पुत्र भलेरो कीरति सुता मांगनो करहो वृषभान वस
त है नेरो २ मध मेवा पकवान मगाई मांग्यो सो सब नेरो प्रान जीव
न धरु मर घोरी को है अब पुनि दरधि दूध प नेरो ३ पद १२ सारंग ॥
अपने लाल को ब्याह करोंगी बडे गोप की बेटी जिन सो हमारो जलि
आचारो जो जनन मेरी बेटी १ मात जसोदा लाड लडावै तैं अंग सिंग
र बनावै कसतूरी को तिलक बनावै चंदन सो हेत चढावै २ का है
धौं मैया कब लावैगी मोकों दुलहिन ना का आछे पुरुस प्रिया वे मो

कोराठिचूपरघानकी ३ चेसनसखावरातचलेंगेहोजबठगोपी
री जनपरमानंदपानखलावतनीडानहरिभरीजोरी ४ पद१३॥
मैयामोहएसीवनरी[illegible]आभावे जैसाहेकाउकीछुठरीपारनकरु
नककर०आवे १ करिकरिपक्वरसालरसोईमोहूपरोसजिवावे
हेरूहरपटनओटवावारेठीवांहाघरावे २ लेतउठाइगोदनंदरा
नीकरमनहारसूनाने आमहोमरेलालकहोनावालो: लेरयाहक
राने ३ नेरनाइनेंरानीहिलिमिलिआनंदसिंधुबठानेहरिके
उपरकरिनोछावरजनपरमानंदपावे ४ पद१४ दूसीजोसाध
नंदमरेमनकीकरूविहारेदूएननेनाडलेहिनअवनेलेलन
की १ ब्रजपुरमोहिविचारेकमा: कोउगोपसदनकीरूपअतुप
सकलअंगसुंदर: जोरीसावलेतनकी २ कबदेखोसिरमोरचै
ह्रिको: पनरजटापवदनकी अनीउतीग घोईनाती बठिअर
सिरचेवरछरनकी ३ राइलोनउतारेलालनावर: लोनदहिछिडु
र नकी परमानंदअभूकरिनोछावरसोभारूपसदनकी ४ प०१५

रागश्रीनायकी गहिकुंजभवनअटपटीपाग औरछूटिअलै
कावली घूमत नैंनसोहैं अरुनबरन १ काहाकहौं अंगकीसो
भादेखतमनमुरझाई गोविंदप्रभुकीबानक निरखत पैंति
तिगयो लजाई २ पद १६ रागश्रीसामेरी सारंग बरसानेप्रभ
नदुलारी चंद्रनवंदति मृगलोचनिप्यारी चरनकमल अठरु
चनरसाला खेलनचलिजहांनंदलाला निरखिबदनललनंद
जूकीरानी जोहउगायभवननमेंआनी बलगउठाढभुवनमेंआ
नी आभूषनपहिराइप्या सूरकेप्रभुसाजनरवसखिपारीपरही
पगपा १ अरीमेरीप्रानप्रियप्यारी भोरहीखेलनकहांसिधारी कुं
कुमभाललीलकक्किनकानौ किनसघमगहकौ निंदराछाड़ो ॥
बलए किहाजमघमहहीपो मलकनिरखिसखिसंलेपट्यो ॥
सरनिसाकोकिजाछूरनमेनमहहरपेहस्यो: हांहेरिहमुखक
हतजननी: अपेलेवेनीकेनगुहि सूरकेप्रभु मोहनकेछवि
किनमननमघमहि॥ २॥ नेदमहरिकोजुधरनीसोहै मेरेवंदं
नतनकिरिकाजोहै खेलतडोलतठिगहीबैठारी कछुकम

नमे आनंद कियो जारी ठारी आनंद मनमेकी औभारी निरखि
सुतविवल भई बाबाजूको नाम लेले जो हसिंगारी हुई पटीपार
संवारि भुषन: जो हमे मेवा भरी सूरके प्रभु निरख मनमें विधना
सेविनती करी ३ सुनियह वाकी रती मुख वानी में ब्रजरानी
के जीय के जानी मेरी सुत है रूपकी रासी कितो कान्ह वनवा
सी उदासी वलए कान्ह वनवासी उदासी: रंगढंग जसे वनें मे
र दुगतो रत्न अमोलिक काच कंचन क्यों सने ललिता विशा
खासी कह्यो तू लाल तजिके कित रही सूरके प्रभु भुवन वाहरि
जोनमत ही जो कही ४ हिन दशपा न अहक जवका मोही
सुहर स्याम हीखाइ दीनी सुरूपरी तन सुधि न संभारी प्यारी
उसी [illegible] भुजंगम कारे ॥ वलए ॥ कारे भुयंगम डशी प्यारी गारु
रिया हारे सवे मंत्र नंदनमेंण विनयो सखी विखना ही रवे मनु
हरि किरि मोहन की ल्याए ॥ सकल विष हे मत हने सूरके
प्रभु जोरी अन चले जो लोजु गजुग हो उ जैसे ५ ॥ संसे
[illegible] वे गि है विपु वदन विनारे [illegible] मोहन तन न अंग

उरवैठी मनभयो हुलासा कीरतिगई मैं पति अपनेजु पासा॥
बलए अपनेजु पतिपे गई कीरति। प्रातकी रीति बीचार ही
मैं त्रकी न्हो कि वाहू को सब सखियन मिलके उ विचारही
वृंदावनजु वनमे रच्यो स्वयंवर पुरुष मरूप दिखायो सूर कै
प्रभु स्याम दुल्लह भये श्री राधिका वर पायो॥६॥ विविधि वर्न
सब कीनो मैं रूप भरि भरि भोर दिखानो विविधि सुनन व
धीई ब्रज भवति आनी हम री गाई॥ ठार॥ आनी भरि ब्रज
जुवतीगाई हरखि कै कन छोर ही एसो मिलि सुमंडच कि
लानो लै भि हसि मुख मोर ही छोर्यो न छूर हो रहो व
सीतकी रीत मम भई सूर के प्रभु ब्रज जुवती गार मन
भावति हई॥७॥ राग श्री विलावल॥ ललिता जु के आ
जब धायो श्री वृंदावन में बाहर चौ यो सखी सब बोल
पठई वे मंगल निधि नौते ल्याई ठार लाई मंगल नि
धिजु नौति मंडल आप रूतरची विधि वंदनवार च हूदिस

दामिनीघनघोटिवारे: जवनिहारेमुखछबिकुंडलवि
राजत्तगंडमंडित्त: नाहिनसोभासरोरवी तवऽऔरकौन
समान्नत्रिभुवनसकलगुनतानाही मोरनित्तेतसंगडो
ले: केमुरकीपरछांई ॥६॥ गोपीसवनोतेऽआईहरि
मुरलीधुनीपगयेबुलाई सवमिलमंगलगावे एवकुक
लेमंडपछावे ठार छायोरासमंडलकुंजमंडपफूल
मेवेहारची वे ठेस्पा माख्यामवरत्रैलोक्यकीसोभारुची
रतिकोकिलाधुनिकेरेकुलाहलउतसकलब्रजनारी
ऽआइजुनोतेवहुदिसातेगावतऽआनंदमेंगारी ७
पाणिग्रहनविधिकीनी मंडपभरीकेभावरीदीनी
ठार॥दीनाभांवरिरासमंडलऔतीगाठजुदेपरीसर
हनिसिरूप्योनमिलनिकविदासुभघरी गावैगीतपुनी
तसहरीवेहरुचिआतुधुनीनेहसुतब्रषभानतनरासमे
ऽऽजोरीवनी॥ ८॥

रासमैइललेन्हुजजोरी हरिहिसाबलैराधाजुगोरी मनम
थसेनबराती एडुमरूलेनानामोति वं दिजन हरिजस
गाने मघवानाजेत्रन जावे चार बाजंत्रबाजेसकलवैरु
निजनपोयपंअजुरी बरषही दिनदानविमानचढिजैजै
सष्करिहरषही सुनिसूरदासमनभायो आनंद फजीमन
कोसाधामदनमोहनलालउद्धलहोउलउहानिश्रीराधा ।१।
रागश्रीविलमलल ।। प्रथमनिहाविधिहोपरहीकरकेक
नचारूविचार हसिहसिकसिकसिगांठिबनाबतनवलति
पुनश्रजनार नछूटगिरधुडोरेनहोई ।सहोकसिनाधोल
उतिजूकेपालिनछूटगिरिधरडोरेनहोई ।१। बडेहोभो
तवछोडीभोहीबुनीजाखकेराये करिजोरेविनतीकरैना
तरछहोलउतीजुकेपाए नछूटगिरिधरडोरेनहोए ।२।।
रहिनहिगिरिकोधरिबोउनिहो कुंवरगोपिनाथबहेते
अंगबतहोआपुनकेषैकांपनलालजेहाथ ।। ३।।नछ

द सेतसिथलनकरपवकरलीनो छोरसंभार किलकिकहे ॥
सषीस्यामजूकी अवलुमछीरी सकुंमार ४ नछूटे लडेती
डोरी न होइ अहीक सिवां ध्योगिरिधरजूकेपानि ४ का
हेकोकरतसहायेसखारी छाडे अधिकसयांन ॥ छोरन
नहै हो कुवरीको कंकनके गुनावो अब भान ५ नछूटे क
मलन कमलकरचरन हीप्रानपियाकी नाल अव फकक
विकुलसो चोभये: भइहे कटिलरी नाल नछूटे ॥ ६ ॥ ज्यो
ज्यो छूटे डोरनो त्यो व ठो प्रेमडोर हेयिहो अनकी प्रीतसषी
जनहसति नहनमोर नछूटे ७ लाला लिलतमुकुंद चंद
कीकरहोरसिकरसपान यह जोरी अवचरन हूं हावनव
लिवलिहासकन्यालन ॥ ८ ॥ राग श्री विलावल ॥ लोचन
लोलललित एकलिरकी वातकरत तेरे ठो ठासो जासोम
तिहे खिसंक नहीडरको १ कहत रही निगजमोतिन की
स्याम हई वाकोइहलरी जरेको माहि दोवि ग्रीउजीन द ईस्याम

कोपेंचीवोलिअपनेकरकी २ तबवेबोललईनैंहरानीवेरी
आवेकुंवरिहिगसरकी बहनहेखिहोउजननीतब आपस
घपरस्परसुरकी ३ एसाजोहीस्यामकोलोभावेठेसवनिलघर
कीपरमानंदविरचाविनाईजोरीअद्भुतरसिकगिरधरकी ४॥
रागश्रीकाफी॥ नेनाअटकेरूपसोपलपलिपलनहिलागे॥
निसिवासंरयोहीरहेलोवेनहिजागे॥१॥ हसनलसनभूसन
सजेपीयकेअनुरागे॥ महनमूरतीजायमेवसेअनेलागे
॥२ रामहासअप्रुनीकायोसबसंतसमाजे॥ छुटीछाग्रातनके
स्योहरिपंथतेलाजे॥३॥ कोलरसोनेरसभरेनेनामहमोने॥
उरमेरहेसरसैनहिकोनकिरंगराते॥१॥ लालकहाकरनलेम
आलीएहोसोलोमोसोकैतेभवनगवंनलालविजिनकरोठाठे
वारेरहिते॥ २॥ लालजोतिआजुमममनवसीयाकेपाउधारे
हरपनलेठाढीरहीवनैकुंवरनिहारो॥३॥ तेतागहपेरहन
कीलापमेस्योकोजेसकुतसनेहरहेजापारिपेकतरीजैधुअई

रु सतसिथल कपवकरलीनो छोरसैभार किलकिकहै ॥
स्थांस्यामजूकी ॥ अवलुमछीरी सनकुमार ४ नरछूटे लडेती ।
डोरीनहिइ ॥ अहोक लिवा[illegible] ध्योगिरिधरजूकेपालि ४ का
हकोकरतसहायेसखारी छाडे ॥ अधिकसयान ॥ छोरन
नहैहोकुवरीकोकैकनकेजुनावा व्रजभान ५ नरछूटेक
मलनकमलकरचरनहीआनपियाकीनाल ॥ अवककक
विकुलसाचीअपः भइहैकटिलरीनाल नरछूटे ॥ ६ ॥ ज्यो
जोछूटेडोरनोलोवठौ अमडोर हेरिहो ॥ अनकी आत्तसघ
जनहसतिनहैनमोर नरछूटे ७ लीलाललितमुंकुइचइ
कीकरहोरसिकरसपान यहजोरी ॥ अवचरनलहूहावन॰
लिवलिहासकन्यानन ॥ ८ ॥ रागश्रीबिलावल ॥ लोचन
लोललित एकलिरकी वातकरत तेरेठौठासो जासोम
तिहैखिसकनहीडरकी १ कहतरही निगजमातिनको
स्यामहईवाकोइलरीगरेकीमाहि हैविहीउजैनहईस्या
त

कोपेंचीबोलिअपनेकरकी २ तबबेबोललईनैंहरानीबेरी
आबेकुंवरिहिगसरकी बहनहेखिहोउजननीतब आपस
धपरस्पर मुरकी ३ एसाजोहोस्यामकोलोभावेठेसबमिलघर
कीपरमानंदविरचविनाईजोरीअद्भुतरसिकगिरधरकी ४॥
रागश्रीकाफी॥ नैनाअटकेरूपसीपलपलिपलनहिलागे॥
निसिबासरयोहीरहेसोवेनहिजागे॥१॥ हसनलसनभूषन
सजेपीयकेअनुरागे॥ महनमूरतीजापमेवसेअनननेलापागे
॥२ गमहालअद्भुतोकोपोसबसंतसमाजे॥ छूटीछाराजनके
स्योहरिपंथलैलाजे॥३॥ कालरसीलेरसभरेनेनामहमोने॥
उरझरहेसरझेनहिकोनकिरंगराते॥१॥ लालकहाकरनतुम
आलैएहोसखी तोमोसोकैसे अबनगबंन लालखिजिनकरोठाठे
बोरेरहिते॥२॥ लालजोतिआजुमनमनवसीवाकेपाउधारे
हरपनलेठाढीरहोवनैकुबदननिहारो॥३॥ एतागहपरैहन
कीलापमेस्योकोजेसकतसनेहरहेजोपारिपंकलरीझेधुअई

इनका लहासविलासविशी नाहे के जाय हे सेविचारी ॥ च
त्रभुज प्रभु भुमचे तुरहोरमा प्राति तीहारी ४ ॥ ॥ अ
थ श्रीरुकिमणी विवाह लिष्यते ॥ राग समेरी होहा ॥ ॥
कुंडनपुर को मांडवो नाहो पति को जान परण न रांति रुकिम
णी वर दुलहो घनस्याम ॥ १ ॥ ढाल ॥ विडुम हे सकुंडनपुर न
गरी मांमें भकनपत हो नवनिधि स घरी पांच पुत्रं जाकेक
न्याहे रुकमीणी तान कुलमे करतहुनी सरस बनी खूब हे तहनी
तानीलोगरवानी सुहस्त अ पापचिरचिरंग मूर्ति मोगारवर
एक अंगनाहि नवची सुजुग लस षोडस लछुन लल नाभ
र घपिंगल पारषा षोडश आभूषन अंग विराजत हिन हीन षोड
शवारषी मगराजकटी कटमगज लोचन मयंक वदन सहेस
हि कहत मुखो हास गिरिधर उपजाविदुम हे याहि ॥ १ ॥
होहा ॥ कुंडनपुर नगर भई कन्या रुकमनी नाम व्याह करके भीम
कनपत सुना रसवगाम १ ॥ ढाल ॥ रुकमयो राजा सव हेरी

वर पायो सिसुपाल चंदेरी ॥ रुकमनी केजी पनाहि न भायो। आ यकसुता एकविदु लायो॥ छंद॥ बुलाए विप्र सद सो सव क ह्यो कागद लिक दियो रुक्मीनि नाक कसि के विप्रनाद कीनी वहुरी जायो त्यो तर गोमति रूरु तो काहा की रे भालन एही निज द्वारामती स्नानकरि विप्रतिलक द्वानो भेरते भानु र चल्यो सुगनको फल तुरत पायो॥ गरे ज्यो द्रोपति पति नि त्यो जाय विप्रचरन परसे हाथ लेपाति देई वेगकंत पुकार सुत अमोअपसुके वसहम भई तवजोरी कर द्विज कविनती सपंनर राजा जुरे हय हलगज दलपाहोदि थल घाव निसानाघु रे लिखि वलकेलि स्पाल पाव मेरे त्तो द्दल एकस्याम है कल्योहा सजि दिधरुकमयो सिसपाल है॥ भाषो हा॥ नृपजुरे कहत चहुदेश के भ्रागनगुरे निसान अजउन आए है सखी रुक मनी के देसन १ ठाल वहुरि सुनिदाजुवतीयो रुक्मिनी है तुसा तल भइ रखुतियो वेद्विज अपने रथवे ठारे हरि जू ने ए पुरकु

सिधारे छंद: आपोकुंडनपुरहीपोचे विप्रलवमंगाद् आ
पोछेतेदलसाजिहलेधर आई हरिभेलोभयो हरूविप्रसेदेस
रुकमनी अंबिकापूजनचली धूपदीपनैवेद्यघृतपकसंग
वहूलीए अली पूजागोरीमनायेसंकरभीमुकसुतविनतीकरै
वरदेहोदीनानाघडलहोरुकमनीपावनपरी कृष्णतरनरथसा
जिगढेसस्रकरनप्रभुपातिपा कहतहूसोहासगिरिधरव
रुरिहुनाद्विजवातीपा ३ दोहा सरवीयनसोरुक्मिणीकहे
कहांगयेयदुपतिराज आननवनास्वयंवररच्योलाजतुम्हेमे
जराज १ जोर्येधोरुपेवहुररवुवारे मनमेसुहितफिरे सिसपाले
देवापूजरुक्मिणी आई जोधाधरनिपरेमुरझाई छंद मुर
झाईजोधाधरनिगिरिपरे कृष्णेसवरुक्मणिहरी कोपिहित
लधनुषकरगहजेलरुकमयेकरी जरासिंधसिसुपालपकु
वाननकीवर्षाकरी अमरसेनलिहार हलधरकृष्णसारंगकरध
री तवकेरिरथहरिकायो सननमुखजुधरुक्मयेकीयो मूछमता

हरिलीलो घकि तुम ये चहुं ओर ॥१॥ राग सोरठ ॥ तारन बांधि त्रिभुवन रा
या जो हो छूपन को टिन्हु रि आपा नारी गावैं गारि मन ॥५॥ =
कमल अलि विंधि रथ पाछे हो गो तव हि नवाइ कवर सरुक मनि
रुक मयो मस्तु उवर कहत वल भई बात अजगत वडे घों नाहि
करे छाडि है द्वार को आये छल स्य कारन सब घरे कसो हास ग
हि धर: जो धाम स्न आई परे ॥४॥ दोहा ॥ कमल नैन करुणा करी
आतजुद्र जु ठोर मगनैनी मन हरषी हारा मानिक मोति वरषी
नवरंग नेहति हारि तुंजु जसोदा जु को प्यारो ॥ राग सोरठा ॥ १॥
हो नवरंग लाल विहारी लालन कुं उनपुर की नारी तो ह हे त पस
र गारि होन टरंग लाल विहारी १ गारी गावे हरि जु को सारी
तुम ब्रुहो कुं नरवन नारि हो २ तो ह गारि का ह को दीजे ते रु रूप
नैन भरी पाजी ही ३ तो हि कैसत लो उर लाम्यो रु तो वर वमे भा
ज्यो ही ४ हरि जसोधो पनि हारि सो तो कुं गोल की मै वारि हो ॥५
तेरो हो उनाप जग जाने सो तो वेद पुरान वखाने हो ६ वसुदेव
देव की जायो ना नन्द महर को कि कायो हो ७ हरि तिहारि
वात मै जानी तो हो उषल वांधो तां ष्ठौं नाहो ८ हरि जसो

हापासिवैधायो हामो हरनामधरायो हो ९ तुमजमुनाअ
र्जुनमोडो तुमपापदो षकहा छोडा हो १० ईहावन बाईवं
सी तुममामो केसाहो ११ तेरासोलासहस्त्र भजनारी तुम्ह
को क्यो कहायेब्रह्मचारी हो १२ ईहावन वैसी वजाई पर
नारिलेलांइ हो ॥१३ तेरीकवा भर मगनायो तिन कर न
कुवारेजायो हो १४ तेरीवेनसुभद्रा जानी अर्जुनके रूपलु
भानी १५ हरिद्रुपादी हालितिहारी सोतोकेतु पंचभर्तारी १६
एतोक्रस्नोही जाडो गावे सो तोरहस्य वधाई पावे ॥१७॥ होह
हरिजुके वर वेहडो वधायो तवकुंवरकलेउ ल्यायो ॥ १८ ॥
रागश्री मारू ॥ कुंवरकलेउ करमआरोगे नारीगावैगारी तुम्हारी
१९ ॥ मायाभुवन नवतुई शव्याहन नवलननारी जोवभरीजरान
ही आवे सदाकुंवरसुकुमारी जेनकृस्नो कोनेगहिवा आजो
कछुलाजव्यारी पद॥६॥ वेहि वहि त हरिसवसीनना नो
नतषिवाल केनकर ईभतोर णहि वे चोरिचहेगोपाल १

रागसोरठा॥चौरिचढेगोपालसुरारी वेगिहछुनरुक्मिनीना
रि ट्रीनोहथलेवोसकुमारी मानोविधिसंवारीकुलोडुरन
हुनीसुंदरआदिजोरोकोटिकरतिपतिवारी॥दोहा॥ब्रह्मासा
वित्रीसहितमहेसआपिइंद्रसचीसहितजहांपरणतरूकम
नरेस १ जहांपरणतरूकमनरेस आयेचीहगनेस घनेस
आए॰सुकसनकादिकसेस आरनारदसुनिउपदेसा आ
येछप्पनकोटितेतीसा॥दोहा॥छप्पनकोटिजादुसुरेउग्रसे
नवसुदेवदेवकीमातारोहनीजुवतीजननाहिनछुहि
५॥रागसोरठा॥जुवतीजनजुरीअपारमिलिगावतिमंग
लचारविप्रकरतेंवेदउचार। घरनहोमेअगनिसुरनधार
त्रिभुवनभयाजैजैकारपरतोनसुदेवसंकुमार॥दोहा
परणीपधारावडुपतिआंगनपुरेनिसान जाचकमागध
रचाहि रहसबधाईहान ठान मांगेरहुस्वपैंवधाईदोना
स्त्रीराउधोआहिबडिजानाकितेवागनसवउ हौंना॥

जाचकनेनदीखमाना एसोत्रिभोवनवस्तनाहिन ॰ आनाजी
त्योजीत्योगोवरदुनदाना रागमारू जीत्योजीत्योहेगोवर्द्धन
रानो वसुदेवघरवधावानो राग ॰ आजनन्दोकपुराए भयो है
कलककलमनभावनो छंद भयोसकलमनभविजदुपति
वंदनचोकपुरालो ॰ आरतिसाजिजोसवुदावेनी धूपदीपले
॰ आये वेठस्यामसिंगासननरूकमनी ॰ आरतीजोनकराई रत
नजटितसिरसेहरोसोहे सेसनवरन्योजाई ॰ अधिकवि
राजतदंपतिदोउरूपाजरूपसिलाई जोरेपरस्पर छोरन
लागेडोरेछोरानाजाई रूकमिनीपितावरंचिभयो है
सुरपीहरघरदाद ॰ आनकारन करतसकलविधिव्या
हतव्योहार रूकमीनीहाथविधातावांध्यो हइगांठघुरा
इ तेरेकरहिन छूटेलाडनवरदेवकीमातवुलाई ॥ ॥
रागधन्यासरी॥ देवकीहोतेरीलाए वुलाएवसुदेवहोत
रोपितावुलाए वेतरेकरहिन छुटयो जाये अमलादोदईगांठ

ऊँरहोनछोस्योजाये बलभद्रहोतेतेनारनुलाएसवदाहोते
रीवेहनजुलाए तेरेकरहीनछोस्योजाये कुंतीहोतेराकूकी
बुलाए उधोपर्जुनसखाजुलाए तेटेकरहीनछोस्योजाये
नेरऔहोतेरोतातजुलाए ब्रजवासीसनजीयेजुलाएते
रेकरहीनछोस्योजाये छंद ब्रजवासिनकोनामसुनत
ही विथलभएहरिराई निजपरमसुखविसरगयो त
ननैननीभरभरिआई वृंदावननैसीवटजमुनासुर
नीमधरिवजाई मोरमुकटगुंजामनिभूषनबालकेलसु
धिआई ब्रजवासिनकीपदरजअंगलगतिरपरमपायेचगा
ईएकएकरोमअनंतकोटिसमतिश्यसत्रिभोवनराई पय
सोरोहिनसोधिमुक्तरतभीतरभवनपधारे दुग्धफेन
समसेजहीउपरवरवधूवेगारे प्रथमसमागमसुरतकेलरस
संवादिपरघरनोनिधकल्पवृक्षहि घरघरउपवनवा

कंचन खचित जटित नग मंनि मंडित पाजस बार संवारी पना
घी षपिरो जा भूषन विद्रुम खै भा भारी मानिक कक सफ
टिक मनि कुंगरा मकरस मोर मंडाए ग्रगर धूप धूप नि
कसित तोर्ष· मानि जिटि वर बाहर छाए सोरै सहस्त्र एक
लोक न्या नर क्रासुर व धल्याए एक सूर तस व हूपर
तो पार अल वर पाये रुकमनी जंबुवती सतभामा सा
ला भद्रा रोनि लक्ष्मना कालिंद्री मित्रविंदा ए ग्राग पट
रानी इश वरशा पुत्र एक एक कन्या तरुना तरुनी अवता रीने नि
रंकार निरलेप निरंजन पो मायापार सभी में ने पुरीन को उद्धा
रमती सखवरन ही जो मता सारी रूप समान देव न ही दूजो
अगु लता उर धारि भूपन को टिपइकुल धंन धंन नित ह
री हरसन पावे पुरी द्वारामता देखन कारन सकल जग्र ... गु
नगावे तीरथ चक्र गोमती संगम षट् दिन करत न्हा

नरनारिसबहारचतुर्भुजश्रीपतिरूपसमाना रुक्मिनिव्या
हकथेजनकल्लोलिरवेसुने अरुगावै धर्म अर्थ अरु काम
मुक्तफलचारप्रहारयैंपावै भक्तहेत अवतारविमलजस
भूतलजो जाधारि गिरिवरधर राधावर उपरजनजाये
बलिहारि ॥७॥ इतिकल्लोलदासैकृत रुक्मिनी विवाहसमाप्त
रागश्रीविलावल ॥ देवदेवारीसुभरकादरशी हरि प्रबोध
किजेहो आज निंदत्तजोउमोहो जोविंद कमलनैनकेहित
काज १ घरघरजोपामंगलगावत सबव्रजजन अभयमन
सुखदायक अतिआनंद भवन भवनप्रति मोतिनचौक
पुरायक २ जहांजहां भीर परे भक्तन कों तहांतहां होत सहा
यक २ परमानंद दासकौ ठाकुर जन के मन वच कायक ३
रागकानरो प्रबंध जो जनतापनिवारन चारभुज चारआ
युधल्ते: नारायण भूयभारउतारन: १ चक्रसुदर्शनशोधस्लोक

मलेकर: भक्तन के हित जाके कारन लीलधर्यो रे उदर विदा
रन गहा धारि हे उडुहे संघारन २ दीनानाथ दयाल जगत
गुरु आरतिहरन भक्त चिंतामनि परमानंददासको ठाकुर
भूतल के काज करत भक्तपे नेन ३ राग पूर्वी मोहन नंदराय
कुमार प्रगट ब्रह्म निकुंजनाइक भक्तहित अवतार १
प्रथम रचेन सरोज वंदो स्याम घन गोपाल कनिक कुंडल ग
लमंडित अरुन नैन बिसाल २ बलिराम संत विनोद
लीलासिससंकर्षन हेत दास परमानंद प्रभु हरि: आगम
नवोलि नेत ३ वंदो धरन गिरिवर भूप राधिका मुखके
मलेलंपट मैन मधुप स्वरूप १ वंदो रसिक रस संगीत सु
खते घकुंनि तवन अनूप कृष्ण दास उ हार उर पर लोल
माला अनूप २ श्री कृष्णाय नम: अथ विवाह खेल लिष्यते ॥
राग श्री मारू ॥ ब्रज वे हविहरत बरसानो वृषभान गोप

तहाँ रनी ताकी राधा रुचिर कुमारि पिता मात प्रानप्यारी २
गुनरूपरासिविवह नारत्तिरमाउमामदकनी ३ भई वर्षसात
की बाला लागा खेलन खेलरसाला ४ तहां सखि वृंद रहधी
री मानो पेमरस की चेरी ५ वृषभान भुवन हिन आवें कु
तूहल नाना भावै ६ एक दिवस सवे मिलि आई निज
ताकौ हीरिमिहिर सुनाई ७ आजु उपवन खेलन जे है
जो वेलं गराधिका पे हा ८ जहां फूली कुसुम समत के वे
लि तहां खेल सवे सहेली ९ सुने मे हारि कुं वरि सिगारी
नखसिख आभरन अनुहारि १० दुलहनिसी वनी लडे
ती सखी पन में गुन निवडेती ११ दोरवरी झी री हि मह तारि
करई दुरी विहुरि विदारि १२ लली आपा मांग सी धारि सं
गनि वेध आहार कुमारी १३ एकसा मवरन एक गोरी एक
बाला एक तिसोरी १४ भुजके उपर स्पर मेली चाली जावती
सुरंगसहेली १५ सुख पंकज पंकति राजे शति विंवकपोल नि

मत्तकर: भक्तनकेरिच्छाकेकारन लीअधस्योरेउद्धर विहा
रनगहाधारि हेउदुष्टसंघारन २ हौनानाधहयालेजगत
गुरु ॰आपन हरन भक्तचिंतामणि परसौ नेहहासकोगकुर
सुतलकाजकरतभक्तपैनेन ३ रागपूर्वी मोहननेहराय
कुमारवर श्याटे ललनिकुंजनाईक भक्तहित ॰अवतार १
प्रथमरचैनसरोज वंहोस्यामघनगोपाल कनिककुंडलग
लमंडित ॰अरुन नैनविसाल २ वलिरामसंतविनोद
लीलासिससंकेलहेत हासपरमानंदप्रभूहरि: ॰अगम
लबोलैनेत ३ वंहोधरनगिरिवरभूपराधिकासुखकै
मत्तलंपट मैनमथकपलरूप १ वंहोरसिकवरसंगीतसु
खतैघकुंनितवैन ॰अनूपरूपस्म हाउसउहारउरपर लोल
मालारूप २ श्रीकृष्णायनम: ॰अथविवाहखेललिष्यते ॥
रागश्रीमारू ॥ अजवेहविहतवरसानो प्रथमभानगोप

तहांरानीताकीराधारुचिरकुमारिपितामातप्रानप्यारी २
गुनरूपरासिबिबहुंनारत्तिरमाउमामदकनी ३ भईबर्षसात
कीबालालागीखेलनखेलरसाला ४ तहांसखिबृंदरहाघी
रीमानोयेसबयाकीचेरी ५ ब्रषभानभुवनदिनआवै कहु
खेलीमनतनभावै ६ एकदिवससबेमिलिआई तिन
ताकहीरिमहिरसुनाई ७ आजुउपवनखेलनजैहे
जोपैसंगराधिकापैहे ८ जहांफूलेकुसुमसमतकेवे
लितहांखेलैसबैसहेला ९ सुनैमैहरिकुंवरिसिगारी
नखसिखआभरनअनुहारि १० दुलहनिसीबनीलैई
तीसखीयनमेगुनजिवडैती ११ दौरिखीरीरहिमहल
करईदुरीविदुरिवारि १२ लजीआपामांगसी
जनिवेधआहारकुमारी १३ एकसामबरनलसे
बालाएकतिसोरी १४ भुजकेउपरसपरमेल्यो
सुंभगसहेली १५ सुखदेकजपंकतिराजे

मत

राजे १६ मानोसखिसखि अगनि बिंद्रा अरुवृंदाराजेसेवें हां
१७ तउपमाउनहीपे नाकी जा पायेजानतहेजीयुकी १८ ॥
सबबालाउपवनआई जहां खिलितलतामन भाई १९ तहां
रंगरंगकुंसुमसुबासा अलिगनगुंजेतहेपासा २०॥ अलि
नलेनभरीभरीलावै ताकेभूषनविविधबनावै २१ फूल
लकनकेलेआअंगीआं पहुचीफूलनबहुरंगीआ २२ सब
फूलीफीरिलहैला मानोजगमकेचबेला २३ तामेराधाअ
कहुहांई सबहीमनेरहीसुखकाई २४ मिलखेलनरसाला
तोहां आएमिलिनंदलाला २५ संगबहुतगोपकेछैया
वेनरकहलधरभैया २६ करिलेनेगेंदचोगाना लागेखे
लनरूपविधाना २७ जबपरिहरखी ब्रजबाला तबच
कृतभयेनंदलाला २८ हैराधारूपगुनगहेरी फू
लनके आभरनपेहेरी २९ तबमनअभिलाषाबाढिने
कुहैखाजोपेठाढी ३० हरि येकउपायबनायो: ३१

जबचरनसपापेआयौ तबनिजकरनारउगायो ३२ तहां
आयेरहे हरिनेर गेंदुकैमीससबअंगहेरै ३३ हसिकह्यो
गेंदमीयुरहिजो एसीहांसीकबुहनकाजि ३४ कहेकामिनि
गेंदुकैसोकहांवोललवचअनेसी ३५सखीहाथदरएके
दीनेस्योत्योलालअधिकरसभीनी ३६ हरिकेहतगेंदचु
रायोछुघटपटओटदुरायो ३७ स्यामाकहे छृगपटमेरे
ओपपायेवैतौलेतेरा ३८ योकहिकहिअंगेगेहिखावैहरि
हरसपरसबुखपावै ३९ तबसखीमतौमिलिकीनो नेहला
लहीउत्तरहीनो ४० जोप्रभुनेखेलखेलो तौविहांखे
लहिमेलो ॥४१॥ जोगेंदुफअनौपेहो नाहारी तेकरदजेहो
४२ तुमदुलहोहोउतिहारी दुलहनीभ्रषभानकुमारी
४३ जुबनीरीछुरस्वनहे तबषेलसरसहमागनहे ४४ सु
निस्योंसलालनचितयो कह्यो त्योरवारिभलोहमहितयो
४५ यहखेलाएखेलहेनीको मातेखेलहमारेफीको ४६

४७ स्तुति सुर
रिवार नर रसु नाघौ विधि बिहार सुख की ठानी ४८ एक भई
हरि सब मुलीकानो एक ग्वावलो बलनि मैं पा ४९ तब दुलै हनि
हुलसहनी का मया एक ग्वावलो तन पहराई ५० मन सो हैं मैं नज
उ नहै बैसाई ५१ रूपन तन तन पहराई घसि दीनो ५१ एक सघन कर
नकीनो निज भाल तिलक घसि दीनो ५२ होउ सुमन सयानन
मनकी छोई नरनारि भरै एक गई पर ५२ होउ सुख होउ बैग ये
बिन होउ० भ्रासन हिंगा कि ५३ तहां सन सुख होउ बैग ये
मिलि मो तिनी भाग लग गाये ५४ चित अंतर पट जब धारयो
तक भालुर भये इग चाल्यो ५५ मानो हरसन बिन रहु जगवि
ल बिरहे बैन न कहि पाते ५६ तब करी जन नक हाति तब सब
मन भई सुहाति ५७ कछु सकुचित गर्व गलें हैली बरमाला
लाख उर मेला ५८ जत्यो पवन कमल ले हरि राई सबिसक
तन सार हा गाई ५९ होउ लोचन भरि भरि निरखे मानो निद्धप
रस्सुरकारवे ६० तब लं करी सब सुख पाई एक बारा है तन बनाई ६१

एक आनंद उर न समाई एक कुनि कुनि लेत तनु लाई ६२
सामा हूई स्याम सुखवारी तब गावति गारि अहीरी ६३ अरे
ग्वाल छाछ के भोगी कहा जानै पान अरोगी ६४ मेरी राधा जु
आजु सी खावै तौ तू परम सुन्य सुख पावै ६५ हारि निज क
बारी जोनी त्रिय सुख मेल न हित कीनी ६६ जब अधुर मै
अरु नत न हेरै तब सामा जु श्री मुख फेरै ६७ तब हसि उगि
... ब्रजनारी भजो ... र हि क्यो नैन नंद दुलारी ६८ एक है क
स्यौ तुन मेरो एक ही यो न बहेतेरो ६९ तेरो देह कौ तक की अति
कारी एक चनन वरन कुमारी ७० ऐसी छाडि दहा थल जो
कौ मदमेटन कद मके लोको ७१ तेरे करक गोरखन बारी
को पर सत हेस कुमारी ७२ ए
खे हरि हस्या माई ली खि राखे ७३
रस नावे सो सामोहन मन अति भावे ७:
तहा वो फिया हवनाई ७५ ...

एवचवसववनिमनआगे वरवधूतहांपधराये ७७ हुईछौ
रिपरस्परचांही धरतहोसेकुलासनमाही ७८ फिरिसात
वावरेश्याम दुम मंडलसाषहिवाए ७९ आरोगितसारके
सारावाठोमाह विमोरअपार ८० तैसीअधरनकी
अरुनाई प्रतिबिंबितनखतहाँई ८१ वेसोभावरदनक
मकलनकीअरुद्दलककपोलअनंतकी ८२ ताकीउ
पमाअगाऊं जोपैपटतरकोकछुपाऊ ८३ सवगावतगो
पकुमारीरससंगकुलोहलभारी ८४ तहांप्यारसुहाग
निआईलागेकानअवासुहाई ८५ तहांहांनसखीव
रहीनोनिजतनमनअरपनकीनो ८६ रासविहारलेलव
निहींआईसुंदरीसबुधारिपठाई ८७ एककुंजसदन
कीछांई वरवधूवैठेतेगांई ८८ होउनवसंगभुरसभेते
भराभरजोवनमदमाते ८९ रतिकेलिरसालेहोउ ताकोलालाल
सैलनकोउ ९० उमग्योरससिंधुअगाधा भ्रमसेहविहूतनराधा ९१

हरि पुहुप लगाए फरि नीनो कहां केरु नेह न कीनो ९२ भये
होउ अनन के मन भाये होउ गारे बोले अनुराए ९३ एक सूरु लीव
रलो हि भायो एक अँगुरी न चुन कर ठायो ९४ एक लेले कुंर
जगावे एक होहि हे शिस चुपावे ९५ पुनि स्यामसुंदर रसी
लौ ९६ हरि निरखे लनन तवे काहू मन लेना अंतन जेवो ९७॥
यों कहि कहि आं ख्यामा हीगा सब गोप कुंवर वड भागी
९८ सिरनाय चली अजवाला मानो कंचन मरकत माल
९९ तहां मध्य राधिका राजे खेलै सकमारि सुकमारि किसुलो
औ ९ १०० वृषभान[illegible]री उनन स चली आई तहां मेह
रि म हासु हीं चपाई १०१ गाई निज निज गृह सहेली श्री
राधा सुकुही अकेली १०२ आई जननी ठाग रही गठी
तन सलषु नसोभा नाहि १०३ तब रानी तुम री भेटी।।
कहि खोलि कहां बन बैठी १०४ अरी मय्या में नर पायो।
अलि सुंदर मो मन भायो १०५ ता सों बिहा कौ सुन सजनी।

दिनमाना लायो करत रजनी १०६ नेह नेद कोना ऊ लेव सलहे
गोकुल [illegible] ऊ १०७ सुनि आवन सुनत महतारी येबो लीवन
नवी चारी १०८ भरी वेसु नाप तु है कारो विपुकंचन वरन लि
सरो १०९ ताला खेलत कारो होये कहां भलेताहि न [illegible] पे ११०
नाना तेरी सोवरनी को मेरो परम भातो जायको १११ मेरो विहा
ताहि [illegible] सो करोए इहि नेम अटल जल धरोए ११२ तहां पर
परो सखि आई सुनि चित यासव सतुगई १३ तव हालि हालि
दे हे तारी भरी राधा कुइ है कारी १४ वे कारो सो वन खेला जिन
परस्यो को जस है का १५ तव वो ली अव आन कुं [illegible] दुलारी भरी
तुम को उन कारा १६ मेरो विहा करेगी मैया सरु सो गोकुल को
रैया १७ सुनि चाकृत कहे सव नारी तेरे उत्तर की वलिहारि
१८ वा सोमा हवि [illegible] नेह अपार कवि वरने कौन प्रकार १९
जहां सेस सारद हारे तहां कविजन कौन विचारे २० जाको पार
न कोउ पावै केसो हावन नारायण [illegible] गावै २१ इति विवाह खेल समाप्तौ ॥

श्रीकृष्णायनमः॥अथचंगकेपद॥रागकल्याण॥चं
गउडावतकुवरकन्हैया॥पचरंगपाटकोमोमोअ
नोपमशोभितहैंकरिदोउनैया॥१॥सुंदरप्यारच
नतत्रिविधिसुखदायकसोंसोंननमेंआति
सुखपैया॥चतुर्भुजप्रभुगिरिधरणलालको
मुखचुंवतव्रजरैया॥२॥१॥आजअटाचढि
नवललालडिलौचंगउडावतमाई॥संगसखा
गोपनकेलरकाऔरवलदाऊभाई॥१॥उत्तप्या
रीचित्रसारीपेंगाठीठीलीकानीजोरि।काटदै
ईतवरहगएचितवतनागरिनवलकिशोराइ

दन भवन वैठे गावे राग सारंग रंग मच्यो भारी ॥२॥ सारंग ॥ चंदन
निकुंज तामें चंदन के बंगला चंदन की ता पर बैठे दोउ सुंदरी ॥ चंद
न को बागो पहिरे चंदन की आवे लहर चंदन के फूलन न सुहार सुख
कंदरी ॥१॥ चंदन के चमर छत्र चंदन को सब शृंगार चंदन के भाज
न बहु भरे सुगंध धरी ॥ चंदन के द्रुमन पर चंदन के बेलन तानां चंदन
सों मिलि तें समर बहे तत मंद मंदरी ॥२॥ छुटत फुहारनी के तहुं नव
चंदन के चंदन की तान गावें चंदन के छंदरी ॥ चंदन के बिजना ढु
रावत बहु और दास जो बिंद निरख निरख मान तन आनंद री ॥३॥

राग सारंग॥ वे ते फूलनमें हे नमें दोउ राधा गिरिधारी॥
फूलनको हार सिंगार फूलनको फूलन हि पारो धारी
॥१॥ फूलनकी सेज जेंदु वातकीया फूलनकी पिछू
वारी॥ फूले गावत वेन वजावत रागरंग भयो भा
री॥२॥ फूले मधुपको किलो निरखत वहत सु
वन सुखकारी॥श्री विठ्ठल गिरिधरण लाल पर
तनमन धन सब वारी॥३॥१॥ सारंग॥ फूलनको रे
हेल फूलनकी सिज्या फूले कुंज विहारी फूली
री॥ फूले दंपति आनंद मगन फूले फूले गा
न प्यारी॥१॥ फूले फूलेक वललो
देखो ऊहें सुखकारी॥ हरिनरा

पियतिनपर वारों फूलनि चंपक वेलि निवारी॥२॥ सारंग॥
अति विचित्र फूलनकी चौखंडी बैठे जहां रसिक गिरि
धारी॥ रायवेली मालती माधवी चंपक बकुल गुलाबनि
वारी॥१॥ जाही जूही केवरो केतुकी सौरन सरस परम
रुचिकारी॥ पाडर जरी सेवती मच्छी बोलसरी रुचिरस्
चिर संमारी॥२॥ नवरसरंग परस्पर उपजत बनी
है संगराधा सकुवारी॥ चतुर्भुजदास कुसुम सिज्याने
करत विलास दोउ पियप्यारी॥३॥३॥ सारंग॥ बैठे
लाल फूलनकी चौखंडी॥ चंपक बगुल गुलाबनि
वारे रायवेलसी खंडी॥१॥ जाही जूही केतुकी कूंजो
करन कनेर सुरंगी॥ चत्रभुज प्रभु गिरधर जूकी
बानिक दिन दिन नवरंगी॥२॥ सारंग॥ बैठे ला

लफूलनके चौवारे॥ कुंदकदंबकुलमालतीचंपोकेलु
कीनवलनिवारे॥१॥ जाही जूही केवरो कूंजो रूप
वलि महकारे॥ मंदसमीररुकीरअतिकुंजतिमधु
पकरत झंकारे॥२॥ लधा रवनरंगनरेस्री दुतलो
वत मोर अख्वारे॥ कुंननदास गिरधरकी छबिपर
कोटिकमन्मथवारे॥३॥५॥ सारंग॥ फूलनके बं
गलाबनेअतिछाजिबैठेलालगोवर्द्धनधारी॥ चंप
कबकुलकुलाबनिवारे लालअनारसुधारी॥१॥
अतचवेली चितकोचोरत रूपवेलि महका
वस्मा नंददासको ठाकुर तनमनधनकी
बलिहारी॥२॥६॥

रागसारंग॥ फूलनकी मंडली मनोहर वैठे मदनमोहनराज
त॥ प्रसरत कुसुमसुवास चहुंदिस नुव्धाम धुप गुंजारत
गाजत॥१॥ पहरे विविधि नौति आभूषन पीतांवर वै
जैंती छा[illegible] जत॥ देखि मुखारविंद की शोभा रतिपति आ
तुरमयो अति लाजत॥२॥ एकरूप वहुरूप परस्पर वर
नौं कहा देखि मति राजत॥ रसिक चरनसरोज आसरो
करि वैकोटि जतन जीप साजत॥३॥७॥ सारंग॥ फूल
नकी मंडली वरमंदित फूल हिये पिय अंग लसे हैं॥ फू
लनकी सेज फूलनके आभूषन फूले फूलेकौटिककाम
म अ लसे हैं॥१॥ फूलवती अति दासनु जसखी सव फू
लेही येहु लसे हैं॥ फूलीनि शसि फूलि रहे गिर
धरलाल तें कुंजवसे हैं॥२॥८॥ सारंग॥ वैठे कुसुम

मंदिरमें दोउ पीय प्यारी मनहरत परस्पर॥ पोहोप माल पेहेराव
त लेमिलकर पत जाही पियउर॥२॥ गावत विकट राग सारं
ग लेउपजत तान बोकिलाउपर॥ रसिक पीतम की बानिक
निरखत प्रान हो न्योछावर॥३॥ सारंग॥ लाल बेठे कुसुम भ
वन॥ लटपटी पाग निघूर्णित लोचन मकरकुंडल सोहें श्र
वनन॥१॥ सीतलताई सुंदरताई सो रस छाय रह्यो लो
न॥ परमानंददास को ठाकुर भक्तन के मनरंजन॥
१०॥ सारंग॥ फूलन के महेल बने फूलन बितान
लन के छाजे झरोखा फूलन की किवार हैं॥ फू
दी गूंथी फूल ही सो फूल बेठे स्यामा स्याम
हें॥१॥ फूलन के आभूषन बसन बि
को दो फूलन के हार हैं॥ नंददास
साधि भले झकति बेदनार

सारंग॥ फूलनके अगरवी भारा जलसंग व्रषभानदुलारी॥ मोरचंद सिर मुकुट विराजत पीतांवर छविभारी॥१॥ फूलनके हार सिंगार फूलनके संग सखी सकुमारी॥ परमानंद दास को ठाकुर व्रजजीवन मनुहारी॥ २॥१२॥ सारंग॥ मुकुटकी छांह मनोहर कीये॥ सघनकुंजतें निसके सांवरो संग राधिकालीये॥१॥ फूलनको हार सिंगार फूलनको खोरि नैंदनकोदीये॥ परमानंद दासको ठाकुर ग्वालवालनसंग लीये॥ २॥१३॥ सारंग॥ नवल घनस्याम नवलवनिराधिका नवलनवकुंज नव केलिगानी॥ नवलकुसुमावली नवलसिज्यारची नवलको किलाकीर भृंगवानी॥ १॥ नवल सहचरी नंद नवलवीना मृदंग नवलसुरतान नवराग गानी॥ नवल जोपी नाथ हित नवलर

सरी लिपह नवलहरि वंश अनुराग जानी॥ २॥ राग विहागरो॥
फूलन सों वेनी गूही फूलन की अंगीया फूलन की सारी मानो
फूली फुलवारी॥ फूलन को दुलरी हमेल हार फूलन के फू
लन की चोकी चारु और रंग जरारी॥ १॥ फूलन के तरोनों कुं
डल फूलन के फूलन की किंकोनी सरस सवारी॥ फूल
मेहेलमे फूली श्री राधा प्यारी फूले फूले नंददास जाहि
वलिहारी॥ २॥ २५॥

श्रीनृसिंहोजयति

राग कानरो॥ इह व्रत माधो प्रथम लीयो॥ जे मानी भक्तन कों दुःखवे ताकी कारो न खनी ही यो॥१॥ जे भक्तन सों वैर करतु हैं पर मेश्वर सों परमेश्वर सों वैर करे॥ रखवारे कुं भक्त सुदर्शन माथे उपर सदा फिरे॥२॥ पराधीन अपने भक्तन को ताकारन अवतार धरूं॥ इह जकहो हरि मुनि के आगे अभिमानी को गर्व हरूं॥३॥ भजे तें जो जन जूं न ही कबहुं पारथ प्रति श्री मुख एउ भाखी॥ परमानंददास को ठाकुर ईश्वर सकल भुवन को साखी॥४॥१॥ राग कानरो॥ लों लों हों वैकुंठ न जैहों॥ सुन प्रल्हाद प्रति ज्ञा मेरी जो लों लों शिर छत्र न देहों॥१॥ मन क्रम वचन मानि जी य अपनो जिहि जिहि जाने तिहि तिहि रहूं॥ निर्गुन सगुन हरि सब द रयो लों सो न भक्त बहु दिन ही बहुं॥२॥ मेदे व त मेरो दास दुःखित भयो रहक जैक हों अबही चुके हो॥ हृदयक छिन पाखान है मेरो अबहो

हीनदयालनकहेहो॥ रागहितनुहीरणकश्यपकोंचीरयो॥ह
दयकाटिनरवरुधिरअघेहो॥ इहसुनवातताततेसुनसुरजया
कतकोफलनतुरतचखैहो॥४॥ रा॥ रागकानडो॥ हरिराखेता
कोडरकाको॥ महापुरुषसमरथकमलापतिनरकेशरिरव
समहेजाको॥१॥ वहुतजातनाकरीकरीदेखीनिष्फलभई
रह्यो॥ तावालककोवारनवाकोहरिकेशरनप्रल्हादगयो
॥२॥ हिरणपकश्यपकोउदरविडारयो॥ भयपराजप्रल्हाददी
यो॥ परमानंदस्वामीरूपाचितेतेंआपआपनोंभक्तकोनी
कोकीयो॥ र॥३॥ रागकानरो॥ जाकेतुमअंगीकारकीयो॥ ति
नकोकोटिविघ्नहरिटारअभयप्रतापदीयो॥१॥ वहुतस्मा
नदईप्रल्हादेसवहीनिशंकजीयो॥ निकसखंभमध्यतेंनर
हरिआपुनेराखिलीयो॥२॥ दुर्वासाअंवरीषसंतापको सा
फुनिखर्नगयो॥ प्रतिसारावीमदनमोहनप्रभुउनहीपेंपग

यो॥३॥ मतकमएहरि सबहि जिवाए इष्टहु अमृत पीयो॥ परमा नंदभक्त वश केशो इह उपको कौनवीयो॥६॥ रागमारूसिधो ३॥ जयति उग्र नरसिंह वरवीर भीषण जटाकोटि फाटत गगनमे घमाला॥ प्रवल भुजदंड परचंड नखवज्रवर असुर उर भीनक्र तमुख विकराला॥१॥ जयति भक्त प्रल्हाद हित सत्य बानी प्रगट नृसिंह गर्जत महा नादकारी॥ स्फुटित ब्रह्मांड नवखंड चल मेदिनी गर्भ अर्भकपतित असुरना री॥२॥ जयति आरक्त तकोर धरी लंबन तर सना लसत द सन कर कठिन नृक्रिकि टभ्राजे॥ ज्वलत दृश दीप्त महा ते जमय रूप धृत उग्रार निबैंद समने नराजे॥३॥ जयति भू त वेताल जंबुक महा डाकिनी दृष्ट शिवस्त हिसंहारकारी॥ सिध्यसा के सुधा नाम नर के जंत्र मंत्रा हि तिजन नमुरा री॥४॥ जयति ब्रह्म शिवस थ - एगएकथा

तरूमंन्होहु। हितजगतकर्त्ता॥ नीउगिरि श्रीजगन्नाथनरहं
॥ सोईहोसमाधोश्रततशोकहर्त्ता॥५॥ रागकल्यानवागे
श्री॥ आदिपुरूषनारायणनरहरि अद्भुतरूपदेषावो हो॥
सकलत्रभुवनपतिनिकसिथंभतेभक्तपेजपुरावे हो॥१॥ समे
प्रहोषरोम सगरगर्ज्जितपूरवनगरवसावे हो॥ नाकहुं सु
न्योंनाकवअवलोक्योकवलोनेदनपावे हो॥२॥ हरभयेब्र
ह्मादिकचितवतकोउनिकटनआवे हो॥ तवविरंचिप्र
हलादतुलाए करिअस्तुतिसमावे हो॥३॥ सोईनृसिंहतं
दसुतगोविंद प्रभुजयजयस्तुतिगावे हो॥ रुद्रवदनभव
ठिश्रीकृष्णदेउ देपतिहरसावे हो॥४॥ स्नानयात्रा॥
रागटोडी॥ करतजोपालेजमुनाजलक्रीडा॥ सुरनरमुनि
विधकितभयेनिरखतविशारिगए तनमनकीव्रीडा॥१॥
मृगमदतिलककुंमकुमाकेशारि अगरकपूरवासवहु

भुरकनी॥ कुचयुगगगनमंगन नंदनंदनकोमलपानिपरस्प
र। छिरकनी॥२॥ निर्मलशरदकालकी शोभावरखत स्वाति
बंदगजमोती॥ परमानंदकनक छबि जोपी मरकतमनि
जोबिंद छबि जोती॥ ॥ रागसारंग॥ मंगलयशास्त्री ज्येष्टपू
न्यों करतस्नान श्रीगोवर्द्धन धारी॥ घसि चंदन पुष्प तुलसी सु
वासीत केशरि जलघोरी झारतप्यारी॥१॥ चोवा चंदन मृगमद
फोरस सरससुगंध केशर निरन्यारी॥ केशो कि सो र सकल
सुखदाता श्रीवल्लभनंदनें वालिअधिकारी॥२॥ अरगजा
अंगअंग प्रतिलेपन कालिंदी मध्य केलिमहारी॥ सखिवन
जूथजूथ मिलछिरकत गावत तान तरंगनीन्यारी॥३॥
रागसारंग॥ जमुना जलक्रीडत नंदनंदन॥ गोपीवृंद मनोहर
चहुंदिस मध्य अरी छतीकंदन॥१॥ सोभित पानिपरस्पर
छिरकत लोचत तिर्छि भुजबंधत॥ मानुखव

पालिए जतन ज्यो हे श्रीग पाये चैहें॥२॥ भुज भरि श्रीकंठ आधि चलत
लेमानु लुब्धक बनफें दन॥ सूरदास स्वामी श्रीपति को जस गावे
भ्रुकति घ्रुदेन॥३॥ सारंग॥ राधे। छिरकत छीट छबीली॥ मानहु म
नगए हुग झ्सुगराज के कटि पर सोहत किंकिनी॥१॥ रच्यो जमुना ज
लकेलि श्रीतर प्रेम बढावत रसरेलि॥ नंदसुवन भुज वीच श्रीवर
जित भाग मनई रसभेलि॥२॥ वरषत कुसुम देव मुनि श्रीहरि इंद्रा
नि फुलत देहेलिनी॥ सूरदास स्वामी नीके विहरत जी जमुना धाके
ततरंगिनी॥३॥ सारंग॥ स्यामा स्याम सुभग जमुना जल निर्जय
करत विहार॥ स्वेत कमल इंदीवर पर मानो भोर नीकरत नि
हार॥१॥ श्रीराधा किर श्रीभुज भरि जलदि। छिरकत वारंवार॥ क
नक कलसा मुरकत सघन तन परहार जति। चित्रप्रकार॥२॥
अतसी कुसुम कलेवर वंदे अमतिनति विंबत तारा॥ जोति
शी वक गगन मंडे तल सलिल वकरत विहार॥३॥ धायपक
रत त्रैषभानसुता हरि सोहत सकल सिंगार॥ सुरवनिवा
जलद सूर निधि मनि वरषत अमल धार॥ ४ ॥

रूपहारी गा॥ सोहे [illegible]

उदये कहि से [illegible]

तवे ठहु कूलनी [illegible]

मात्य भुज भीर [illegible]

श्रीगनी चीर की॥ [illegible]

टकी॥ २॥ सारी गा॥ [illegible]

सपास जुवती जन [illegible]

कंचुकी टूटे छूटि [illegible]

नवजट्टो न [illegible]

दंडी का हूँ [illegible]

बरनें [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

छिरकनी॥ २॥ निर्मल शरद कालिंदी शोभा वरखत बुंद स्वाति जल मोती॥ परमानंद कनककनी गोपी मरकत मनि गोविंद तन जोति॥ ३॥
राग जैतश्री॥ विरह तजल जमुना रसभाने॥ मानहुं मत्त गजराज परस्पर कर निज जूथ संग लीने॥ १॥ तिनमें श्री व्रजभान दुलारिनी लसुरंग पट झीने॥ उरज दुराई उरज जुग चांपति मोहन कों वसन कीने॥ २॥ उभय वदन पर जलकन मानु जलज सरस छवि दीने। परमानंद प्रभु हेत वलो किल मुदित सजनी प्रान धन दीने॥ ३॥ ॥
रथयात्रा॥ ॥ राग मलार॥ देखसखी आजु नैन भरी हरि जू के रथकी शोभा॥ जोग यज्ञ जप तप व्रत तीरथ किजतु हैं जिहि शोभा॥ १॥ चारु चक्रमनी खचित विराजित चंचल चवर पताका॥ स्वेत छत्र मानु शशि शशि दिश उदित भयो निशि राका॥ २॥ स्याम शरीर सुदेश पीत पट शीस मुकुट मनिमाला॥ मानहुं घन दामिनी सवे तारागन उदित एकी ही काला॥ ३॥ उपजि छविक रत अधर शेखधु निसुनि प्रतिकें रत प्रसंसा॥ मानहुं अरुणक वल मंडल में कूजत हैं कल हंसा॥ ४॥ प्रति स्थान दित [illegible] हूदे

जननी कृष्ण माजननते जियभावे सूरदासगोकुलके वासी आननाथ
पियपाए॥५॥ राग मलार॥ तुमदेखे माई रथ बेठे व्रजनाथ॥ संकर्ष
नकेसंग विराजित गोप सखालीये साथ॥१॥ एक ओर राधा जुवत
सब छत्रचामर लजिताहाथ॥ विविध भांतिगोवर्द्धनधारी कृष्ण दास
कीये हे सनाथ॥२॥ राग मलार॥ तुमदेखो माई रथ बेठे गिरधारी
राजितु परम मनोहर सुंदर संग राधिका प्यारी॥१॥ मनि मानिक
रकुंदन खचित बिडउी पांचे सवारी॥ विधिकरि विचित्र रच्यो हे विध
ता आपने सुहाथ संवारी॥२॥ माहीसुंदरता फलासुंदर के
वाजनछबिन्यारी॥ छत्र अनोपम हाटक के नैसा कुमकुम
मुकतारी॥३॥ चपल अश्व तेउ बेल तहं सगति उपजत
आरी॥ दिव्य उोर पचरंग पाटकी करंगहे कुंज बिहारी॥
लब्रजविधुनी टंदावन गोपीजनमनुहारी॥ कुंभ
सुरमुनिजन परमानंद व बिहारी॥५॥३॥
विराजित आज॥ रत्नखचित रथ उपर बेठे
था॥१॥ सधन नाल्का छिनी लोमित

ओढ़ पीतांवर अंवुजनैन विशाल॥ ३॥ श्याम अंग आभूषन हे पे देखत
कत गोकुल कबोल। वारंवार चितवत सव ही न तन बोलत मीठे बोल॥
४॥ इह छवि निरखि नीरखि ब्रज सुंदरी नेननि भरि भरि लेही॥ फीरी
फीरी झरोखे झरोखे किं सुख देखत रोमरोम सुख पेही॥ ४॥ उतरी गोलमं
दिरमें ऐ भो मुरली मधुर वजाए॥ देखि देखि फूलती नंदरानी मुखचुं
वति छिग आए॥ ५॥ भति सोभित करिली ये आरति करत लिहाय
लिहाए॥ श्री विठ्ठल गिरधरण लालपर वारति तनमन माए॥ ६॥
राग मलार॥ वे पट पीत की फहरानी॥ कर गहे चक्र चरनकी धावनी
नहि विसरत वह वानी॥ १॥ रथ तें उतरी अवनी आतुर केंकंवरनकी
लपटानी॥ मानुशी हसे लक्ौ निकस्यो महामत गजजानि॥ २॥ जिन ही
जीपालनेमेरो पन राख्यो मिटि वेदकी कानि॥ सोई अव सूरसहाएहे
मारे प्रगट भए प्रभु आनी॥ ३॥ राग टोड़ी॥ प्रगट भमके फासपरे
हरि डोलत डोर डोर॥ सकल देखत पांडव के हो कलुहें हरि घोर
॥ १॥ जीहि कर संख चक्र गदा शोभित भोर न आयुध धोर॥ ते
ही कर चाम चमोरा लीने अर्जुन केर घ जोर॥ २॥ जिहि मुख के

दनिरंतर कहीयें तत्तिहीं मुख बोलत हो रे॥ यह विधि स्वारथ करत जगत
गुरु जानत नहीं हम को रे॥३॥ बलि बलि जाउं स्याम सुंदर की भक्त वछलता
मोरे॥ माधोदास कहे सब से करते दास आपुने चोरे॥४॥ राग मलार॥ गोपा
ल माई खेलत हैं चोगान॥ लरिका संग गोकुल के लीने वृंदावन में दान॥१
नंद नंदन जिन चावत आवत तिहि उरत गावत पानि॥ सब हित रथ गेंद
चलावत कहत बाबा की आनि॥२॥ फिरत निसंक नहि रत महा बल हरत
नृपति कुल मान॥ परमानंद दास को ठाकुर सब गुन रूप निधान॥३॥
राग मलार॥ गिरधर लाल नवे ठे ताजि॥ वाग वाम कर दहिन चाबुक सुंदरी
केसी के ज चले साजी॥१॥ वा के जलत बेनु सखा सब आए अमरपुरी सब
गाजी॥ परमानंद दास को ठाकुर रोपत आपुनी बाजी॥२॥ राग मलार
रथ पर बैठि चलत यशोदा आंगन॥ विविध सिंगार सकल अंग सोहत मो
हत को टि अनंगन॥१॥ बालक ली ला गावत नाचत किलकि हसत नंद नं
दन॥ उर विराजित हार कुसुम को चरचित चोवा चंदन॥२॥ अपुने अ
पुने घर पधरावत सब जु मीलि जुवति जन॥ हरखत बरखत सर्व सु
आपने बारत तन मन धन॥३॥ सब व्रज देखु भ आवत घर को मार

ति आरति यशोदा तन छिन॥ रसिक सदा हरि की यह लीला बसत हमारे ही
मन॥४॥ राग मलार॥ रथ बैठे हों डोलें जो री मैया॥ घर घर ते सब संग खेल
न कौं गोप सखा बन बोलें जू॥१॥ मो हें गठाय दे हु अति सुंदर सुरंग ही साज ब
नाए॥ करि सिंगार ला उपर मोकुं राधा संग बैठाए॥२॥ घर घर प्रति हों जे
हो खेलन संग ले हों ब्रजबाल॥ मेवा बहुत मंगाए मोहि दे फल अति बड़
हीर साल॥३॥ सुत के बचन सुनत नंदरानी फूली अंग न माए॥ सब विधि
करि हरि रथ बैठाए निरखि रसिक बलि जाए॥४॥ राग मलार॥ र
थ चढि चलत गोपाल ब्रज मे॥ संग लीये गोकुल के लरिका बोलत तब
बैन रसाल॥१॥ श्रवन सुनत घर घर ते दोरी देषन को ब्रजबाल॥
लेत बारी फेरी हरि की बलैया बार तिमोतिन माल॥२॥ सामग्री जे
आवत सीतल लेत हरष नंदलाल॥ बांटि देत ओर लरिकिन कों
फूले डोलत ग्वाल॥३॥ जे जे कार भयो त्रिभुवन में सुमन बरषें ति
हि काल॥ देखि देखि उमंगे ब्रजबासी सब ही देत करताल॥४॥
इह विधी बंदृ पो रपे आए मात तिलक करि माल॥ लेत उछंग
प धरावत घर में चलत मद मति चाल॥५॥ कर तन्यो छावरि

आपुनेसुतपरमुक्ताफलि भरिथाल॥ यहलीलारसरसिकसुनिरख
तसुमरतहो तनिहाला॥ ६॥ रागमलार॥ लमोहिरथबैठावतमैया।
इतकीओरबैठीहैं राधाउतकीओर बलभैया॥ १॥ गोपसखासबसं
गलेहोंगोअरुगावेंगेगीत॥ मेरेरथकीसोभादेखत सुखपावेंगेमी
त॥ २॥ ब्रजजनभुवनभुवनप्रतिगठी देखनकोमेरीगाठी॥ आ
रतिलैकेउतारेंगेमोपर कहें मारगमेंगाठी॥ ३॥ सुनतवचनआ
नंदि सी धुमें मगनभईजसुमतिमाई॥ रसिकमनोरथपूरणगोविं
दबैकुंठतजिब्रजआई॥ ४॥ रागमलार॥ रथबैठेगिरिधारी देखो
माई॥ वामभागवृषभाननंदनी पहिरी कसुंभी सारी॥ १॥ तैसोई
घनउनयो चहुँ दिसतें गरजतु है अतिभारी॥ दादुरमोर करत तैं
सेरट तैसी भोमी हरियारी॥ २॥ सीतलमंदसुगंध मलयानिलला
गतिअतिसुखकारी॥ नंदनंदनकीरहवानकपरगोविंदजिनब
लिहारी॥ ३॥ रागमलार॥ रथबैठेनंदलालदेखोमाई॥ अतिविचि
त्रपहिरपटभूषनउरबैजंतीमाला॥ १॥ सुंदररथमानिजहित
मनोहर सुंदर हैं सबसाज॥ सुंदरतुरंगचलतध

घोषसंबन्धी जि॥२॥ मानिमानिक हीरा कुंदन सों डोंडी पोच प्रवालन॥ विधि
सों विविध रचि विश्वकर्मा आपुने सुहाथ संवारी॥३॥ तालन पखाव
ज बेनु बांसुरी बाजत परम रसालने॥ जो विंद प्रभु पर लेउ डार तुहें नि
वि ध कुसुम ब्रजबालन॥ ॐ॥ रागमल्लार॥ तुम देखो माई र थ बनै गि
रिधारी॥१॥ राजित परम मनोहर सब अंग संग राधिका प्यारी॥१॥ गा दी
सुरंग ता फ ता सो नित फरी बाजत छवि न्यारी॥ छत्र अनोपम मह र
कि कलन सा झूमक लेरमुक्तारी॥२॥ चपलन अम्बु होउ चलत हैं संग ललितु
पजत हैं चक्र विभारी॥ दिग्ग डोर पचरंग पाट की करग हैं कुंज विहारी
॥३॥ विरहत ब्रज वि थुनी वृंदा वन गोपी जन मैनुहारी॥ कुसुमा
वली वरषत ब्रज उपर जो विंद जन बलिहारी॥४॥ हरे नरत्न
रागमल्लार॥ देखो माई सुंदरता को पागा॥ हरि ब्रज भूमी हरी दुमबेलि
हरि गिरधर सिर पाग॥१॥ हरे हरे मोर हरि सुक सेना हरि भूमी अनु
राग॥ राजत हरि मन हरन राधिका निरखि दास बडभाग॥२॥ म
ल्लार॥ हरि प्यारो सावन आयो॥ हरे हरे मोर फिरत मो हन संग हे
रिव सत मनभायो॥१॥ हरि हरि मुरली हरि सं ग रे चोह रि भू मिसु

खरा ई॥ हरेहरे बनराज लटुमवेली हरिहरि पाग सुहाई॥१॥ हरि हरि
सारी सबपहेरे चोली हरी रंगभीनो॥ रसिक प्रीतम मन हरित भयो है
तनमन धन सब दीनो॥२॥ पातिबस्त्र॥ राग मलार॥ धरें सिर प्यारे
पीरी पाग॥ पीतांबर पेहेरें अति झीनो निरखि सखि बढ्यो विवाग॥१॥
ते सोई चीर वढ्यो प्यारी के चोली रही उर लाग॥ श्री विठ्ठल प्यारा दियन
रस लंपित बनि भरि अनुराग॥२॥ मलार॥ सो भामाई अब देखन की
बार॥ जो कईन परवतके उपर मोरनकी पतवार॥१॥ ठाढे लाल पीतप
ट ओढे मुरली मधुर रसाल॥ मोरचंद्रका माथे सोहे घुघुचिनके हार
॥२॥ घनगरजत अरु दामिनी दमकत नेन्ही नेन्ही परत फुहार॥ सू
रदास प्रभु तीन अघे हें आखियां होय लिखि चार॥३॥ मलार॥ बरस
रे सुहायो मेहा हरि को संगम पायो॥ भीजत देपी तीब रसारी नई नई
बूंदन आयो॥१॥ ठाढे हें ललिता राधिका मोहन राग मलार का हु गायो॥
परमानंद प्रभु लरखर तरलोल करत अपनो मन भायो॥२॥ मलार॥
आजु में देखे कुवर कन्हाई॥ प्रात समे निकसे उपवन संग स्याम घटा
चढि आई॥१॥ पीतवसन पेहेरे तन सुंदर कसुंभी पाग सुहाई॥ मुक्ता
माल करत उर उपर मुरली मधुर बजाई॥२॥ कह

की सोभा मोपै वरनी न जाई॥ श्री विठ्ठल गिरिधर देखै तें कोहु कलनप
राई॥ २॥ मल्हार॥ रंगनी को कुही चोरी चोरी॥ हरित भूमि ता में कसुंभी वे
र सखी मो हो॥ औरु वनी जोरी जोरी॥ १॥ नवल पीतांवर और ठो गिरधर
लोलन घटा नो तनगोरी॥ पावस रितु सुख दास चतुर्भुज स्वामिनी
विलास न वनवकी खोरी॥ २॥ स्याम वरन॥ मल्हार॥ स्याम घन कारे क
रे कारे री वादर रितु पावस की है कारे॥ [illegible] कारी कोयल वन वन
बोलत मोर करत है नकारे॥ १॥ कार धुर बाधर छूटत है कारे कारे॥
काजर भारे॥ कार मदन सदन सूर प्रभु कार कारे चीर नसमारे॥
२॥ कुल्हे के॥ मल्हार॥ रही फव स्याम छवी लीपाग॥ तापर कुल्हे
स्याम सिर सोभित मोर चंद छवि विलोग॥ १॥ स्याम अंग परनी लव
स न छवि किंकिनी शब्द सुहाग॥ तसी येवन स्याम [illegible] ग स्यामा
स्याम अंग छवि विलाग॥ २॥ स्याम सुभग तन नख सिख स्यामा स्या
म भई उरलाग॥ स्याम रंग रंगी रंग स्यामा स्याम रंग अनुराग॥ ३॥
यह जोरी अवचल श्री स्यामा स्याम रंग वड भाग॥ सूर स्याम स्यामा
छवि निरखत प्रेम सिंधुरस पाग॥ ४॥ मल्हार॥ नयो नेह नयो
मेह नयी भूमि हरियारी नव लदुल्हैया रे नव लदुल्हैया॥ नव

लचातिक मोर कोकिला करत सोर नवल जुगल भोर नवल उल्हैयां
॥१०॥ नवल कसुंभी सारी पहरें स्री राधा प्यारी ओढनी के अंग संग स
रस लुल्हैयां ॥ नंददास बलिहारी छबि पर वारडारी नवल ही पाग ब
नी नवल कुल्हैयां ॥ रा० मलार ॥ आजु स्याम घन की उनहार ॥ भले
उनै आए हैं सांवरे देखि सखी रूप सकुमार ॥१॥ इंद्रधनु कमानो पी
त पिछौरा दामिनी दमकत भार ॥ मानो बगपंगति माल मोतिन की
चितवत चित्त विचार ॥२॥ जनु गिरिराज करनी धरि राख्यो अव
न सुनत मनुहार ॥ सूरदास प्रभु हम से पतित कों कोन उतारे पार
॥३॥ मलार ॥ अब मेरे नैननि कों धोखें भए ॥ की धो स्याम घटा
पंथ गमन कीये स्याम जलद हुनये ॥१॥ के घन घोर गंभीर पता
पउ डिक्के ग्वालिनी प्रति टेरति ॥ के दामिनी कौंधति चहुं दिसतें
सुभग पीत पट फेरति ॥२॥ के बगपांति भोति बहु सोभा के उरमा
लहु मोतिनके । वन मोर मुदित नाचत हैं बरुहा मुकट छीउ लनी
॥३॥ के बनमाल लला लउरत जल के सुरपति घनधार ॥ सूर
दास प्रभु रसिक निहारि उमगि राधा करत बिहार ॥४॥ कुंडके

पद॥ राग मलार॥ आजु पट पीत की छवि पाई॥ स्याम घटा जुरि सघ
न दे। खियत नान्ही नान्ही बूंद आई॥१॥ मोर मुकुट शिर सुभग विराज
त इंद्र धनुष की गति ही गई॥ कानन कुंडल दामिनी दमकत बर्षत नी
र सुहाई॥२॥ मोतिन माल मानो बगपति सुंदर रूप रलाई॥ सूरदा
स प्रभु कहा लो बरनो यह छवि की अधिकाई॥३॥ मलार॥ देखो
माई सुंदर ताको देस॥ अंग अंग छवि मदन मनोहर राजत रूप
नरेश॥१॥ मोर मुकुट गहे वर गिरि सीवा अलक झलक कवहुं
लेस॥ मुख छवि कोटि विकट कै गठ गाठे मन न ही करत प्रवेश॥
॥ सा ग्रीवा मोर मुजानंदी नंद उर सागर सतवेस॥ गति विहंगक
टि सिंह मृग आदिक नव जल वेली वेश॥२॥ जंघा कदली जनाभि हृ
दे हर न लख मानिक मन लेस॥ तन सव भूमि दरित रोमाव
लि दे खियत रूर प्रवेश॥३॥ मलार॥ माई री स्याम घन तन
दामिनी दमक पीतांबर फहरे॥ मुक्त माल बग जाल
ही न परति छवि विशाल मानो भनी की अपर हरे॥१॥ मोर मुकु

ई ऽ धनुक सो सुभग सोहत मोहत मानन नी हृती पर हरे ॥ रूप्पनी
नन प्रभु पुरंदर को सोभा निधान मुरलिका घोर घरहरें ॥२॥ टिपारे
के पट्ट ॥ पावस नटन सो अखारो वृंदावन आवनी रंग ॥ निर्त्तत गु
न रास वरूहांप वी हा श्र ९ उघटत को किला कलगावति तान तरंग
॥१॥ जलधर ताल मंदृ मंदृ सुलनक संचगति भेद उरपति रपमान ले
त सरस मृदंग ॥ जो विंद प्रभु जो वर्दन लिंघासन परवेरे सुर भीस
वा सवरी रूप नलित त्रिभंग ॥२॥ मलार । वृंदावन कनिक भूमि
निर्तत ब्रजनंदपति कुंवर । उघटत श्र ९ सुमुखी लेत गग तत तत
नत थेई थेई गति लेत सुघर ॥ १ ॥ लालकाछि कटि कीं किंनी पग
नूपुर रुणुझुणत वीचवीच मुरलि धरत अधर । जोविंद प्रभुके
मुदित सखा करत प्रसंसा प्रेम भर ॥२॥ मलार ॥ मदनमोहनव
नदे पत अखारो [illegible] रंग ॥ सुफ लसंच गति भेद नरु हा चं दुनि
र्तत करत कोकिला कूहूं कूहूं तान तरंग ॥१॥ उघटत
पी हूं पी हूं करें मधुव्रत गुंजमाल सरस उपंग ॥ जो

सकःनमना लहित नःव● धर.लाहुथरनाभतम.ऽ॥५॥मनी
गाणिदीधनमःऽग.लेभेदनाना नलनाचत नप.नवंचलेगा
लिकोकि.नाउन.नापति पनीमाउ.पलितमा. ●सुरनाज
लिनाललीहु.लाउ. गार. भुनीहालिषतल नतुनु कउकुतु नमुज
नाजलाताणनसनर्कि. पहु तुमलहुलापकाकु ननिकल.नहोउ
नताना॥

॥अथहिंडोराकेपद॥ रागधन्याश्री॥ रोप्यो हिंडोरो नंद गृह मुहूर्त शुभ
घरि देखि॥ विश्वकर्मा रचि पचि रच्यो सो हाटक रत्न विशाल॥१॥
हिंडोरना हो रोप्यो नंद आवास हिंडोरना हो माणिमे मोतिसिखवा
सा॥ हिंडोरना हो विश्वकर्मा सूत्रधार हिंडोरना हो कंचन खंभ सु
ठार॥ कंचन खंभ में सुलाल जडी डांडी श्याम भ्रमरा फबि रहे हीरा
पिरोजा सुकनक मणीमय जोति चहुं दिसि जगमगे॥ चित्रस्फुटि
क प्रकाश चहुं दिसि कहाक हों निरमोलना कहे कृष्ण दास वि
लास निशदिन नंद भवन हिंडोरना॥१॥ दोहा॥ सोलेसहस्र
ब्रजसुंदरी निरखि स्याम सुहाए॥ अति आनंद हुलसि के जु
वजन हिलि मिलि गाए॥१॥ हिंडोरना हो सुवजन हिलिमिलि
गाये हिंडोरना हो उर आनंद न समाए॥ हिंडोरना हो निरखी
स्याम तिहारि हिंडोरना हो सोलसहस्र ब्रजनारि॥ टेक॥ सो
लसहस्र जुरिकि आई उलटी फिरी न भुवंन गई नवननव
लसुरंग रावे अचित तनमन नमें नई॥ पीत लेहेंगा

री स्याम कछु चाहे कहे कृष्णदास विनोस निश दिन सुव जन ही
लि मि लि जाये ॥२॥ दोहा ॥ रुनु क रुनु कन नूपुर वजे कंकन कुनि
त रसा ल । परम च तुर वन वारी है सो झु लावत सुंदर ना रि ।२
हिंडो रना हो झु लावति सुंदर नारि हिंडोरना हो परम चतुर वन
वारी ॥ हिंडो रना हो रम कनि झम कि विशाल हिंडोरना हो किं
किनी कुनी त रसा ल ॥ टेक ॥ कुनित कंकन रुणित नेपुर ज टि
त रो ना सा हहीं उरउड़त अंचर मदन वेरष देखि गिरिधर मो
हहीं ॥ बसी त फूलजु सिषिन वेनी गुपत प्र[illegible] जरठ जना वंही क
है कृष्णदास विनोस निस दिन सुंदर नारी झु लावही ॥३॥ दोहा
गावत सु घर सुमेद सो तान मान वंधान रिंझी देत वृषभानुज
सो हरि गुन सकल निधान ॥४॥ हिंडो रना हो हरि गुन सकल नि
धान हिंडो रना हो श्री स्यामा जू परम सुजान ॥ हिंडो रना हो गावत सु
घर समाज हिंडोरना हो मुरलि मधुर धुनि वाज ॥ टेक ॥ तान मु
रली वेनु वाजे ताल गिरिधर गावही हरखि सुरप[illegible] कुसुम वर
षे नभ नि शान वजावही ॥ हरखि केकरदेत तारी गति प्रकासु

सुजानवहो कहे कल्याणदास विलासनि स दिन हरि सुनसक लनिधान ॥ ४
दोहा॥ सबे नैन भरि देखही सहज गोपनट नेष॥ जे सुख गोकुल मेंल
हे सो नहि वैकुंठ रे। षग॥ हिडोरना हो जे सुख वैकुंठ नाही हिडो
रना हो सो सुख श्री गोकुल मांही॥ हिडोरना हो सहज गोपनट
नेष हिडोरना हो सबही नैन भरि देख॥ टेक॥ नैन निरषत वेनमी
ठ मैन को टिक वार ही भुज भरे भामिनी हरे हरी मून कहत कछु
नही आवही॥ स्याम सुंदर नंद नंद लाल नीलाप टगो जनावही
कहे कल्याणदास विलास निसदिन रह सुखश्री गोकुल मांहि॥
५॥ दोहा॥ श्री यमुना तट संकेत वट निश दिन वही विलास॥ कुं
जको गिरिधरकी सो हृदय बसो कल्याण दास॥ ६॥ ११॥ भुजीर
तै बुन दर्पन सो जित बिद्रुम रुचिर मयार मानहुं रविश देषा
वहीं भुज भुज युगल पसार॥ लोलम निविस्न वन ने प्रति मि
लेमरक तडार। उतरी रविर थते चले मानु यमुना वहे बिविधा
र॥ टेक॥ बिबि धार धारा धसी अध नई फट कपडु

तहां बिच बिच तिरछी बिच मिले मानु गगन तें नैसंग॥१॥ अति कलि
त मनी मजीर इत उत चरण पंकज रंग हिलि मिलि लिलत लवत्र तिवि
व सो जित सरस्वती मानु रंग॥ मानहुं मुदित मराल के कनक कीनी
झुनुकार पियसंग शोभित लाडिली दृषभानु गोप कुमार॥टेक॥
तहां कुंवरी व्रखभान शोभित स्याम सुंदर संग मानहुं नौतन जल
द में जैसें तरल ता तडित तरंग॥२॥ मनी मेम हम लल अंगी नार स्यो
न वरंग रंग हिंडोर कोटि मन्मथ मोद मोहन नवल नवल किशो
र॥ इत उत लंजीनि वसंत तन की झलक लोचन कोर बदन विधु
के लुब्ध जानु उडी उडी मिले चकोर॥टेक॥ उडि उडि मिले चकोर
मानु लिलित बलित सुवेन॥ मानहुं भुज वासुके संग नागि
म धुकर सेन अतन में बीड़ि गकीये निरखत मंडलि ब्रजनारि॥
मा नहुं संग सहित तालिये विधि रचि के चनवार अधउर्घ देत
झकोर इत उत झलक मोतिन माल॥ सो समें सावन जानि केव
ग पोति उडी उडी रसाल॥टेक॥ लाल अंबर चुनरी उत पीत पट फ
हरात॥ सूर समें ओपमा न कोउ मोपे बरनी न जात॥३॥ ॥

-राग मल्लार॥गोपी गोविंद के सुरंग हिंडोर नां झूलन आई हो॥६०॥श्री
खंड खंभ नग चार सहित जु मरुवे मोर बनाए। तहो पाटि जिन कनक
तन मराउ डांडी जटित जराए॥ हेम पटुली नग ध्वहीरा पूंज नो बन रा
ए। तहो सखि विविधि विचित्र राग मल्लार मंगल गाए॥१॥ नंद ला
ल पावस रुत बनी व्रज बाल विहरत संग। बोलही ते दाद्दुर मयूर प
पैहा करत कोकिला रंग॥ बरहन्त पत बचन मुदित अलि चको
र विहंग बन भद्र चार गोपाल झूलत राधिका अरधंग॥२॥
जल भरित सरोवर सघन तरु वर हरी तमही बहु देश॥ घन स्या
म मध्य जु मेत बग ईव सी इन्द्र धनु बसु देश॥ गगन गर्जित बीज
चमकत मधुरे मेह गुरु सेष। कुजही ते स्याम स्या विक लशिषि
ल मुकलित केश॥ ३॥ ताटंक तिलक जु जटित रजक के पोच पि
रोजा लाल। आरक्त बंकित नर प्रसीसी तब नैन नैन विशाल॥
कर बलय कुना किंकीनी कटि चारु गज गति चाल। सुरन
सुर मुर रिपु रंग रंजित सखा संग गोपाल॥४॥ ।राग

...आबत्न॥ झूलत नंदनंदन हिंडोलें। कनक खंभ मयार पटुली लागे
रत्न अमोल॥०॥ सुभग सरस सुदेश डांडी रची विधना गोल॥ मानं
हुं सुर पति सुरसभा ते पठई दीनो हिंडोल॥ जबही रु पति सबही कें
पति विहसि लगति डुले॥ स्यामा स्याम मिलि जु गावत उघटत ता
ल अमोल॥१॥ त्रिदिशपति सजि चढि विमानन्ही निरखत नेनस
लोल॥ एक मुख कछुक हि न आवत भए मगन मनडोल॥ सखीन
सतसाजि लीने बोलत मधुरे बोल॥ रूप नेनन पीवत तहो विधु
हृन नेनन सलोल॥२॥ ल्योरति पति देखि के छवि ईश दिक जु
ब्रीजोल॥ सूर इह छवि गोपगोपी पावे अमृत कपोल॥ हरि देख
मुनि कुसुम बरखत नेनन्ही रुक रोल॥ जय जय सुख बोलत स
बही आनंद हृदय कलोल॥३॥६॥ राग मल्हार॥ सरस हिंडोर
ना माई झूलत श्रीगोकुलचंद॥०॥ दोउ खंभ कंचन के मनोहर रत्न
जटित सुरंग॥ ताहां चारु डांडी सरल सुंदर निरखि लजित अ
नंग॥ पटुली पिरोजा लाल लटके झूमका बहुरंग॥ मरुवे तमालि
क चूनि लागी विच विच हीरा तरंग॥१॥ कलप द्रुम तरु छांह

सीतल त्रिविधि मंद समीर। तहां लता लटकै भार कुसुमनि परसी ज
मुना नीर॥ हंस मोर चकोर चात्रक कोकिला अलि कीर। नवनेह नव
ल किशोर राधे नवरंग गिरिधर धीर॥२॥ ललिता विशाखा हेत सों
टा फूलि अंग न माए। तहां लाडिली सुकुमारि उर पल स्याम उर लप
टाय॥ गोर स्याम लै अंग मिलि दोउ भए एक ही भांति। नील पीत दु
कूल रा जित दामिनी हरि जात॥३॥ नवकुंज पुंज फुलाय फुलवल
सहचरी चहुं ओर। मानहुं कवलनी कवल फूल्यो निरखि नवल कि
सोर॥ ब्रजवधू त्रिनतोर डारत देत प्रान अकोर। कृष्णदास को प्रन
वास दीजे नागर नंद किशोर॥४॥३॥ राग मलार॥ आली री फूल
त नंदकुमार। हरनी नैनी हंसगमनी सजे सकल सिंगार॥०॥
सुरंग खंभ कदंब के जहां मिले मलक तडार। तहां लाल लडोंडी स
रस सोर विपिन विरहे स्त्रधार॥ कनक पटुली जटित हीरा गढी सु
घर सुनार। चहुं ओर तरुनी अरु नव सननी किंकिनी झनकार
॥१॥ रंग भरे उतंग उर जनी झलके बौतिन हार।
हरत अंबर लै सलला बेबार॥ मृगमद अगर

सकेउदृगार। सुखभरे पानती स्याम स्यामा दोउ परमउदार॥२॥
जीतगावे सुखद केरस रीतकी चटसार। गानसुर घट ग्रामसा
धेतानताल अपार॥ रीझ रीझ जलहीनीजे जम्पो रागमल
र। पिक मोरकुहुकें को किलानी सुरनपरिहार॥३॥ तहां मे
वरषेरस भरे जलफुहीवारंवार। नाजततिजल पटातलालेत
जिवेद विचार॥ छवि कवि मधुसूदनाबलिहारी को ठिकमा
चिरंजीयो पर्वतस्याम स्यामा दोउ जगतआधार॥४॥८॥ राग
मलार॥ गोपीजो बिंद के सुरंग हि डोरना झूलन आई हो॥०॥
गुननाम निर्मल परम पावन प्रथम भूमि सुदेश। अंगुरी
अंगुरीन आनि मिलिन रचित चित्र चहुं दीश॥ रचित पुरद
परम सुंदर वय्र रंग सुरंग। घन हेत हरि हीडोरना तहांचिर त
विविध तरंग॥१॥ चहुं दिश पय्र पराग रंजित पारिजात प्रन
त। रसलुब्ध कोकिल कलरव मधुपसरसबसंत॥ घ
नघोर जलधर धरनि उन्मत्त मुदित कुहूक तमोर। तहां वि
मल सरोवर विविध सारस चक्रवाक चकोर॥२॥ विचखंभ कं
(चनमरुमानहू रचित रुचिर निर्मा

म्यामानिकअतिमनोहर उदित तरनीसमानी॥ भ्रमरानि हादिम
मेंअलिगनमध्यराजितनीलाम्बरवामनोहररत्नलंकृतशुभ्रशो
भितकीला॥२॥बिनलालपर्मरसालडोंडी विश्वकर्मासाजि।पटु
लीपिरोजाविचमुक्तालाल विचिविचभाज॥।पर प समपानि बि लो
ललोचनवदन इंदुसमान।नवनेहनवसलसाजिकूलेंसुघरसु
दरसुजान॥झाकरवीनवेनाताललतरजितसरससुरपीनाक।
किंकीनीकंकनशब्दनूपुररसहितरसएकताल॥कामिनीकोमल
नचनबोलेविहालिप्रेमगोपाला॥दामिनीदमकेदूंदुभक्के गगनइ
वेरसाला॥५॥पितुपीउपपैयाशब्दमधुमिवमदनउन्मत्तबोल।न
वनिधिसुहेग्रहप्रतिनिवासिनीशेलघोवहि•डोल॥हरिहितहर
खेअतिसेसुंदर निरखिनारीनिवास।राधिकारतिरवनगीरीधर
कृष्णदासनिवास॥६॥२॥रागमल्लार॥प्रथमपावसमासआरंभ
गनघनगंभीरगाजातहोलनवेही दामिनी दिशापूरनेअतिप्रबंड
मीर।मोरचात्रकवनकोलाहलमधुरेबोलनिबोल॥गो

लति कुंजवितन सतसखा सग कलोलन॥ गोपीजो विंद गुन विमल परम
हित गावही॥१॥ तहां वकेदा दुर मोर कोकि लकूठ पावस धीर। ताहां
छुटनदी अपार उमंगित मिलि वमसुधा नीज॥ हरियारी त्रिनमहीचं
डुवधूगन अतिमनो हरलाग॥ वलमद श्री के बधेनु चारे नंदके अनु
राग॥२॥ तहां कंदरा गिरि चढि हेलि करहिं वाल विनोद। तहां जाय
बो जत तरुस्य कोटर मक्षिका मधु पोद॥ केऊ बोलै पक्षी वानी कोऊ गा
वेगीत। कोउ तजाने जो पक्षी ना अन्य गति विपरीत॥३॥ तहां चक्र
वाकू चकोर चात्रक हंस सार समोर। सारस सारो सुआ भृंगी करही
वहु। हि सरोर॥ वाटिका सरोवर मध्य नलिनी मधुप करें मधुपान
। नंद जो कुल रूप पालै अमरपति अभिमान॥४॥ तहां राचे हिंडो
रो धवल वानी काश्मीर सुखंभ। हीरा प्रवाला लालन लाजे ओर बहुआ
रंभ॥ करें चित्र विचित्र चित्रित तीर धनुष संधान। जे सेरा मरावन
सुध्य क्रीडा है खिलै अनुमान॥५ तहां वहुत गोरस माट मथन नाबि
ल त कंकन चीर। मक्षिका शिर गूंधि वेनी श्रवण श्री नित वीर॥ कन
कवरन सुठा सुदेरी अमि पव चनर सालन। प्रेम मुदित मुरारि चित

धरिमावलरागमलार॥ ह्रीं तहो हो तमंगलघोषघरघर जहां न्मा अनंत। वैकुंठनाथ दयाल श्रीपति सोहे श्री भगवंत॥ सब देव मुनिवर वदत जदुवर भए पूर्णकाम। एसें वेद बानी वदत निसदिन भक्त जन बिसराम॥१॥ जन्म कर्म अशेष महीमा शेष सारद भाखे। देवकीनंदन नाम पावन त्रिविधि दुःख तें राखे॥ चरन नख मनि देखि तो अति तिमिर अविनाश॥ मन कर्म वचन गुन गाये परमानंद दास निवास॥८॥१०॥ रागमलार॥ येमिलि फूलत रंग हिंडोरना॥ फूलत फूलत मनही मन॥ अरुन पीत वर वेसन बिरा जित अति गोरे सांवरे लनरी माई॥ बरनबरन सारी सुरंग सुहाई गावें आसपास जुवती जन॥१॥ तैसी ये दामिनी दमकत छिन ही छिन तैसें दिस दिस तें उमडे घनरी माई॥ तैसें ई मोर कुलाहल तऊ कोर मोर बोलें पिक चातक चहुं चरी पंत॥२॥ जब हरि हरखि देत झोटा बोलें विवस त्रिया हांहां न नंदरी माई॥ सौभाग लहि ता जाधर प्रभु उरलाई लई नरी माई॥३॥ ११॥ रागमलार॥ हिंडोरना हो।

बेंअहो मेहि घरि एक झूलत होउ॥ ते सोई मित किन होहु प्रानपति
मोहन उर आवे ए सें अति रस रंग झुलावे ॥१॥ कबहुंक पटुली नवे
ठी पे प्रानपति ओर साखि सबनी कठवो लायो॥ तिन सों मिलि के म
दन मुरली धुनी समुदित राग मलार गायो॥२॥ अब हो उ तरुं तुम
झूलो प्रीतम झोटा देउ जे तुम देह खायो॥ सूरदास प्रभु मदन मो
हन पिय सोई करो जैसें तुम सतु पायो॥ ३॥१२॥ राग मलार॥ हिंडो
रे माई झूलत जुगल किशोर॥ ललिता चंपकलता विशाखा देत
हैं तन झकोर॥१॥ तेसेई पावस रितु सुखदायक मंद मंद घन घोर॥
तेसेई जान करत ब्रज सुंदरी निरखि निरखि प्रिय ओर॥२॥ कोटि
कोटि मदन छवि उपजत होत सखी मन भोर॥ नंददास प्रभु गिरि
धर राधा प्रीत निवाहक ओर॥३॥१३॥ राग मलार॥ मोहन प्यारे
को सुरंग हिंडोरना झूलन जैये हो॥०॥ ब्रज रसिक मोहन सुंदरी
सब कहति हसि हसि बेन। पावस काला गे पालगे कुंजब सतु
हैं सुखचैन॥ सखी सकल सुहागनी तेज पति दे दे सेन॥

टेक।सावनमासहिंडोरना पियहमहीं देहुगढाय।झूलेंगेगोकुल
ग्वालनी गिरिधरनगोकुलराय।।बोलि विश्वकर्मा ल्यावो तबगढन
ल्यायो नझेर।चंदनखंभसुदेश अमर बन्यो मरुअनमेर।पटुली
मयारसवारिकेहो डांडी अगरउकेलि।।टेक।गावेगुनगोपालही क
कहि चाहु चहुं दिसहोत।स्यामा स्याम समीप झूलत देतपहिलें ओ
प।।२।।रमकिरहत हिंडोरना पियपीतांबर फहरात।राधिकाजी
वरशीसतें अहीरहिर हिओंचरहोत।।तहां लटकी भुजकी ओर भा
मिनी निरखिमुरि मुसकात।।टेक।तैसेये दामिनी लवत घनमें त
सोई वर्षत मेह।तेसीये राधा चूनरी भलिभीजलागेदेह।।३।।नी
लकंकंचुकी पीत मोडत परमस्यामसनेह।लपटीजपटे देलझोटा
तेसेंही गर्जत मेह।।तेसेंई कांपत भामिनी पियसंगलवलसनेह।
टेक।नदिहो ब्रजपतिरायसों हसिहसि कहत कुमार।व्यासदास
जोपालन प्यारी प्रीति परति निहार।।४।।१४।।रागमलार । रंगही
डोरना हेआलीरी श्रीवृषभानजूके द्वार।।हिंपरी न

नगजगमगात लडांडी चार। पहुंलीसो चित्र विचित्रा। जित कनक कलश
मधार ॥१॥ चहुंओर नवलकी शोरस जनी सुघरसव व्रजनार। श्रृंगार
षटदश वेश वटदशता नता लअ पार ॥ वीनामृदंगम लार धुनि सुन
वे कुंवर नंदलाल। नवसखि भेषवनाय अद्भुत आ एम दनजोपाल ॥२॥
नवसखि छवि निरखि सुंदर हसी बोली वाम। तुम कोन पे गोकी कुंव
रर वनी गवनी कहा की भाम॥ व्रजवास पुर तुम कहो रहो है बसो
को नहीं गाम। अब लोन में देखी सखी तुम कहो पिता को नाम॥
३॥ व्रजचंद मुसकसो छंद मुख नवव धुबोलि वेन। नंदगाम सों
गांम नागर बसत हे सुखचे[illegible]न॥ सुन भाषमन अति लोषडपजी
झूलीवे तुम आन। कर प्रेम प्रीत पति तदोउ मिली सुघर सुंदर जोन
॥[illegible]॥ यह सुनललिता विशाखा कहति पियसमुझाय। व्रजवास
नहीं पे स्याम सुंदर हे कुंवर नंदराय॥ तिहारे दर्शन पर्श कारन स
खी भेष बनाय। सनमान कर हो प्रानप्यारी लेहि संग जुलाय॥५॥
सुन सुनेवचन रसाल रस नव वधू लीये बुलाय। मन लिही सहित हि
डोरे झूलेवो लमधुरे गाय॥ जनरंजन अरुन वकुवरी आनंद रंजर
धो वरषाय। रस वेहो श्री हितमाधुरी सुपदेत अखिन अघाय॥ ६॥

रागमलार॥ नटवर झूलत रंग हिंडोरे॥ धरत चरन पटुली पर मोहन
कर सों परसी कर जोरें॥१॥ पीत वसन वनमाल विराजत नारी सुर
गहीं ओरे॥ राग मेघ मलार मिलि षट राग रागिनी की जोरे॥२॥ स्यामा
स्याम एक संग झूलत झोटा देत झकझोरें॥ सजल स्याम घन कन
कवरन तन मानिनी मान हीं तोरें॥३॥ जोरिअ विचल तेज विराजि
त कुंडल वर हीं ओरे॥ गोपालदास प्रभु गिरिधर राधा प्रीत निवाह
क ओरे॥४॥१६॥ राग मारू॥ हिंडोरे झूलत नवल विहारी॥ संग झूल
त वृषभानु नंदनी प्रानन हु तें प्यारी॥१॥ नीलांवर पीतांवर की छवि
घन दामिनी अनुहारी॥ पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागत रूप सदा
सव लिहारी॥२॥१७॥ रागमारू॥ रंग हिंडोरना हो झूलत नवल वि
हारी॥ मरकट मणिमय अवनी सी झलके रायो अगर अटारी॥१॥
कंचन मणिमय अवनी सवारी दिनकर किरन पसारि॥ पचरंग पा
ट सुघाट सुमांडली हो रीप रम चित्रकारी॥२॥ देषत वृंद चंदु
दी राध्या के छवि की वानड धारी॥ इत उत तें झूला १ त्रे

म विविलस ब्रजनारी॥ ३॥ नान्हीनान्ही बूंदन रमझमबरखे लागत हे सुखकारी॥ नाचत मोर चकोर कोकिला अलिदादुर ललकारी॥ ४॥ छाहे रह्यो रंग जित तीत ते के लको तू फुलनारी॥ इत तें उमड्यो घुउत तें घुमड्यो दामिनी आन रुवारी॥ ५॥ बाजत ताल मृदंग झालरी और नूपुर झनकारी॥ कुंजभवन में रच्यो हे हिंडोरो विहरत लाल विहारी॥ ६॥ या छबि की उपमा कह वे को सारदा कोन विचारी॥ सेषमहेस पार न ही पावे गने गने श॰ अधिकारी॥ ७॥ वरनु कहा वनायको नविधि कनीक बुध हमारी॥ सुब समाज ब्रजराज के उपर रसीके शाव लिहारी॥ ८॥ १८॥ राग मारु॥ हिंडोरे झूलत रंग रंगीलो॥ नवनी कुंजरस पुंज सदन मो छविलो छैल छबीलो॥ १॥ नए नए भूषन वसन अंग अंग नए एन नए नेह नवीलो॥ नववृषभान सुता नंदनंदन महारस मत्त रंगीलो॥ २॥ निरखि इत नव तरुनी मन मनहरनी चहुँ दिस रह्यो छबीलो॥ निरखि हरखि झुलावत गावति तान तरंग रसीलो॥ ३॥ सारस हंस च

कोरमोर पिककूजत मधुपमतीलो॥ सजनसखी लखिद्दंपति सुख
नन निवासवसीलो॥४॥२९॥ रागमारू॥ फूलत नंदकोनंदहिंडो
रे फूलत॥ वटसंकेतमेंरच्योहीडोरे संगराधासुखकंदु॥१॥ तेसें सघ
नकुंजवनफूले त्रिगुनसमीरवहतसुगंध॥ तेसें दादुररटतरस
नेरदामिनीदुरदुरमंद॥२॥ व्रजजुवती फूलगावति आनंदु गावत
गीतसुछंद॥ मुदितनागरवलनिरखि स्यामकें रंकीयेदुःखदुंद
॥३॥३०॥ रागमलार॥ फूलोतो सुरत हीडोरे [illegible] लाउं॥ मरुवेम
यारकरोंचितवतकी तनमनखंभवनाउं॥१॥ सुधिवुधिनी
कुघिडोंडीवेजननेहनिछौनाबिछाउं॥ ग्रतिग्रोसरधरंकत
लाक चिप्रीतधुंजाफहराउं॥२॥ गुरुजनकहुकंकिलकनिलवे
कोंनेहनीरवरखाउं॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनकुंलाउं एकि
पाउं॥३॥२१॥ रागमारू॥ फूलत गिरिवरधारी हि
टयमुनाकोपरममनोहर संगराधिका प्यारी॥१॥
ईसकलव्रजजुवनितावरदसनबनसारी॥ नाव

तकूलहल हेत परस्पर लारी॥२॥ चात्रक मोर चकोर कोकिला सूरो सा
रससारी॥ भ्रमित भ्रमर कूजत हैं रसभर लागत हैं सुखकारी॥३॥
हेव सवे मिलकुलुमनी वरबलमुनि मन छूटी लारी॥ यह सुख निरख
निरख सचु पावे परमानंद व लिहारी॥४॥ २२॥ राग मल्लार॥ झूल
त नटवर भेष कीये। शोभित तरुन वेदिका माथे मुरली कर लीनी
ये॥१॥ कसुंभी पाग सुरंग पिछौरा मुक्तामाल नहीये॥ रमक झमक झू
ले प्यारी संग व्रजजन संग लीये॥२॥ आसपास व्रज जुवती ठा
डी यह सुख नेन पीये॥ श्री विठ्ठल गिरिधर नंदनंदन स वय हृदु
विदे खि जीवे॥ २३॥ राग केदारो॥ स्यामास्याम हिंडोरे झूल
त॥ रसकी वात परस्पर मिलवत अंग रेवाह धरि झूलत॥१॥
कबहुंक आनंद रसभरे गावत कबहुं लल की सुधि
सब भूलत॥ रसिक प्रीतम की वानिक निरखत आनंग नही
समतूलत॥२॥ २४॥ राग मल्लार॥ हेम हिंडोरना हो माई ए हरि प्या
हे है सेगा॥०॥ कनक खंभ स्वार डांडी नग लगे हैं लाल चुनि विर

चित्रमयारमऊ वेवम्योहे१२मसलाज॥ भमरा पिरोजा पीतपटुली नजेहं रत्नेविसाल रहूलनहूले नवनागरी हो नवल श्रीगोपाल॥१॥ सजलजलधर धुमरे धुरवा धार धसिचहुं ओर। चपला चहुं दिस चमकही होदादुर करे घनघोर॥ कोकिला अलि कीर कूदन रटत चात्रकमोर। रवनी रागमलार रसवसकीये श्रीनंदकिसोर॥२॥ हरित भूमि सुदेसातरवर भले हे कवलसुरंग॥ बकुवारू चकुई हंस सारस बतक वगुलालीने चातकसंग॥ बकुवारू चकुई चकोर कोकिल वने हे विविध विहंग। सरससरोवर निरखिके मन लाजित कोटिअनंग॥३॥ सुभग युवती नार जोवन चलती चाल मराल। चंदवदनी लंक केहरी अंवुजनेन विशाल॥ संगार सोरह साजिके हो वनिचली हे ब्रजवाल। मानहुंकलकुरंग के संग मुदित हे मगमाल॥४॥ चहुं ओर चंपो मोगरो मरुवो चंबेली जाय। वेल विषु जगुलाव कूदो मालती महकाय। केतकी करना कुंद रसवस रहे भ्रमर लोभाय। श्रीजूलाथ विलासमाधो रहोकर रु चिपाय॥५॥२५॥ राग मलार॥ कान्हकुवरके ग्रुरंग हिंडोरना झूलेकुवरी राधा॥ सुवर्ण वरन सुरवंभ होउ सरल सुभ

गसुठार। उतचितमरुवानगजडेमानुभ्रमराकार। मनिषचितडोडी
लोलपटुली पना पांचसुचारु॥ रच्यो रुचिकर विश्वकर्मा सूत्र धरी सूत्र
धार॥ १॥ गोरस्याम शरीर सुंदर युगल कुशल किशोर। नील पीत नीचो
ल अंचर फरहरत छवि जोर॥ दामिनी संयोग उभय गिरा गंभीर मृदु
घनघोर। जुवतीमंडलमध्यमानुं चितें चात्रक मोर॥ २॥ देत झोटा परस्प
र हसि प्रिया प्रियअति धीर। श्रकव्रजपति इंद्र धनुष कि कुसुमबिगु
लनीनीर॥ टूटे हार बर षत मुक्ताल रहे र बंध नंदनंदन नीर। हरित भूमि
सुठारि सुंदरि तरनी तनया तीर॥ ३॥ लाल पहिरें सारी सुही सावरी क
रत हैंगुनगान। राग मेघ मलार मिलि रव — गीतीकी तान। निरखि
रहे विधुन की सुरथके व्योम विमान। देखि माधोरसिक दंपति रहे
स्वरति पति प्रान॥ ४॥ २६॥ राग मेघमलार॥ छबीलो लाल लो संग
ललना झूलति नवल सुरंग हिंडोरे॥ शोभित संग गोर स्याम पियरोप
टक सुंभी सारी जटित मानक मनि पटी लाग बैठे एक जोरे॥ १॥
तैसीये हरित भूमि तैसीए घोरी सुंदह तैसी एग्वालतनीय तैसीए घन
मधुर घोर॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिवर तैसीए सुख दासी लधा पि
यप्यारी अरुन छवि रतिपति चितचोरे॥ २॥ २७॥ ७

लगमल्हार॥ हिंडोले हरिके झूलीयेहो यों कहतकें लब्रजनारी॥०॥ एकगग
नसघनसुहेस। लित तिलर हें वादुर छाय। जो पांगना गोपालजूसों कहे
तिगहेंगहेंपाएं॥ अवकोन लोडुलावेहो पियसुनो हो गोकुलराय॥ ग
गनहार हिंडोलना पिय बेगलेहो बुलाय। हमहीं डोरें रहस झूलें तुम पिय
देहो झुलायँ॥२॥ एकबनी हें बनिबनि खिहस सुंदर चुनरी झीनकाय। एक
जरदलहेंगासरदर बिशालि मानो हों कमल प्रकाश। स्वेत अंगीपाकु चन
उपर भ्रमर भूलेवास। रुतवसंत विलास आवन फूले प्रगट पलास॥ ए
कहरी केहरसको पिय बो होत हीं वो होत पियास॥२॥ एकबने हें कोकि
लकंठ निर्मलकरे दादुर सोर। हंससारसकी रवनमें बहोत लवेचकोर
कारी घटामें स्वेत बगदल दामिनी बहु ओर। तेसें श्रीयमुना जोरदे बिय
त लेंसही अंबर घोर। तेसेंही रटत व पियरा बि म विचट उकित मोर॥३॥
एकएकएकनी ओट हुंयकें कर ली झरा झकोर। एकएकएकनी ओट ग
डी हसति हें मुखमोर। एकएक एक लि हेत तारी कर लिहें रंगरोर। एकसखी
गोपालजूसुं चलीहें तिनकातोर। एकएक छुवें पें आगर प्रियरा रवित
तोहे मरोर॥४॥ एकबहोत भीर अहीर गोकुलनंद जोर ' एकउ'

नमजीवनसुफललेषत निरखि प्रानआधार। एकपावनेवरओरफे
हुर घुघुरी घमकार। गोपालजूकी भावती पीउ घरत वारंवार। तेंग
पानज्ञानगावें शोभित नंदकुमार॥५॥रुद॥ राजमलार॥ आली री
फूलन लस्यामा स्याम॥०॥ होउ रवी भाविध्व कर्मा वना ए काम कुंद्रच छ
ए। जटित चूनी भरित नग सब लाल हीरा लाये॥ वो हो त विद्रुम
वो होत मुक्ता लित ललर क निकोर। वहु रंग रेसम वरुही वरु हा
हो लरंग फकोर॥१॥ स्याम स्यामा संग फूले सखी देत फुलाय। स
वे सरस सिंगार कीते रूप वरनी न जाय॥ नील सारी लाल लेहें गाज
रदें अंगीया अंग। रोमावली नयी होय जमुना त्रिवलि तरल तरंग
॥२॥ लवलि षल षन हीजात मानो अंक देखो चारु। भमर भर मि
तवनगए छिपज एके हरि हारु॥ चालि देखि मराल रंजित गये सर
तजगेह। यह जानत ज अभिमान गजालि र अजहु डारत खेह॥३॥
देखि सखी होउ कनक केसे शंभु धरे वनाय। नही हीय श्रीफल सुंदरी
मानो कमलक लीसो हाय॥ वीच मुक्तामाल मानो सुरसुरी धसी धाय।
पार चक विवारक कवा दिवस मिलत न आय॥४॥ देखि दशन अनार

कसे हसि जब मुसकाय। दमकि दामिनी निरखि कछु विवो होरी गही
छिपाय॥ कंज खंजनि नैन मोहे उडि लफपट निभोर। विंबके हिंगकी
रवेड्ग हित नाहि न ठोर॥ ॥ बहुं जूथ जूथनि जुवति गाठी कोउ ग
ठी जेला। कहुं तरुली गीत गावें कोउ करे हैं खेला॥ कहुं दादुर को कि
लाकहुं वो लत चातक मोर। बहुं ओर चकित चकोर के गए देखि
रहे वही ओर॥ ॥ देखि सखि एक होत अचरज राहु शशि एक ठ
र। उडत अंचर लसत वेनी लपट झपटनी भोर॥ कनक जटित
जरावबेंदी कवि जो उपमा पाय। राहु शशि रवि मिले अजमें ती नोउ
दय आय॥ ७॥ निरखि शोभा सहचरी मिलि कोउ उडगन अघाये।
सबे फुला बेला लजा डिली हरखि मंगल गाये॥ नही होय रसना को
टि दस जब जपत जनम सराये। छबि नारायण दास के प्रभु मो पे बर
नी न जाए॥ ८॥ २५॥ राग मोरु॥ कुंज ही ओर नाहो निज सुख पुंज वि
तान। तहि फूले सुंदर स्यामा संग स्यामा रूप रस प्रवीन। जा के सद
रसिक आधीन॥ १॥ कतिक खेल पचरंग वनि डांडी। जटित

गरी॥ पल्लव खचित पिरोजा बिच बिच बकनि ककलनसा जगमगरी॥३॥ ग
जमोतिन सों डंडी गूंथी चौकी चमकि सुरंगी॥ रमकत झमकत गही गहील
रकत मोहन मदन त्रिभंगी॥३॥ मरूवे वेलतन ध्वजा झालरी हुती जहं रं
गरखी सुतरनी॥ झंकारत झोटनमें जानों कोकिला शब्द उच्चरनी
॥४॥ चहुं ओर द्रुम वेली फूली लता सघन गंभीर। जब रमकत झ
मकत हो मिली ज्यों झलमल जमुनानीर॥५॥ सारस हंस चातक च
कोर पिक नेह हरी के पेठे॥ फूलत लता द्रुमन तन दीसत एसें जु
रि जुरि बैठे॥६॥ विजय सुभाव कीये घन संपति उलहार विपन पर
भाई। गरजत तरजत मधुर मधुर सखि कोकिला शब्द सुहाई॥
७॥ सहचरी गान करत उंचे सुर श्री वृंदावन गाजे। मधुर मंजीर राग
नेउधरत आम सुभट पखावज बाजे।८। नीलांबर पहिरें नवनागर लाल
कंचुकी सोहे। नीलि जलगी श्याम जलसों उर जन प्रीतम को मन मोहे॥९॥
लट सगबगी सुलाल वदन पर सीस फूल उलटा नों। पिया की चोली गि
रिधरको चंद्रहार अति सोहत उर झानों॥१०॥ डगर सा लरस भरी मोह
सोहा थि हासि अर्घ जनावे॥ दुरनि मुरनि मे चितवन अखियां लाजची
मन लजवावे॥११॥ फेलिरल्यो सोरभ सगरें सखी कुमकुम कर दमा
गरको कहां लगि कहें मतमयो नरनें मावज दोघर उरको॥१२॥

राग कान्हरो॥ फूलन तर ईव तिलय घनकुंज मध्य फूलन के रच्यो है हींडोरना। फूलन के खंभ दुग डांडी च्यार फूलन की फूलन की चौकी बनी लगे बहुर लेश्रमें लनना॥१॥ फूलन के आभूषन अंग अंग क बिरहे फूलन के बसन बिराजित अति छबि फूले फूले बिराजित मदन चित्तचोर ना॥ फूलन की चुनरी कसुंभी सारी कंचुकी फूलन के दर्पन का वि अधिक अतोलना॥२॥ फूल रही कुंजबारी फूल तहें सुकुमारी फूली फूली गोटादेत मधुर सुर गावत गीत मृदु बोलना॥ रसि कराय की छबि वृंदावन को हिराम वारडारों है लि हलि घुंघट खो लना॥३॥ राग कान्हरो॥ श्रीमद वृंदावन स घनकुंज पोहो पपुंज मधुप गुंजत हा रच्यो मोहन लाल कुसुम हिंडोरना॥ केवरो के तुकी बेलचंबेली कुंद जाही जूही नि वारी राय बेल महकारी॥ त्रिबिध त्रिगो तिरखंभ रचे रजत अधिक अतोलना॥१॥ पटुली र चित्र सवारि फूलन सों मरुवा सुरंग डांडी च्यार अति छबि सोहत है री तहां गीत मधुर सुर ब्रजवधू बोलना॥ फूलन की सारी कंचुकी. न

री लैहेंगा फूलनके पेहेरें आइं झुलावन पियको इंद्रवधू सी डोलना
॥२॥ रंग भरे मूरति अनंग भरि अखियां सखियां सोहत संग दे
त हैं झोलना ॥ कृष्णदास बलिहारी राजत सी तन प्यारी प्यारी
न होत अंग तें जैसें मृगांगना ॥३॥ अथ पंचपदी हिंडोरा ॥ राग
मल्हार ॥ तरणिकरणावली प्रतिभटः प्रभा सुभग डोलिकाया
मपि नृत्यति तरां ॥ सरस आनंद नर रलिक जन तापरम मन
सि तामरस सुरसती नितरां ॥१॥ व्रजवधूटी व्रजमती वा नुकु
लपवन तरु व्रजे व्रजत ले व्रजगमयेति तरां ॥ लडितकादंबि
नी नयन कुरंगनी सुमन सरस तमिह सुखपति तरां ॥२॥ अल
मनल सेतु लो ते तु नितं विनीव सनानि कांचनानि वहति सु
तरां ॥ यमुनाजुना धुना क्रीडयनूद्दत्ता विपर्ययपति प्रति विन
तां तु नितरां ॥३॥ सुरकुसुम संकुलित भ्रंग कुल संवलित
लतावलि तालसमेत्वी ईप्सति तितरां ॥ ईप्सनुपमामिह किमपि सु
क्रिया जयति यत्तत्तदीयमिह कंपयेति तितरां ॥४॥ सभाकि

तनवलित्रिगी यते तिजसुखंमकसुसुखं नरिवर्त्त सुलतो॥ सुकरस
नावभरितंसुवि घयासुमिहसहगोवेष्वरअभनतुसुलतो॥५॥
रतिपंचपदी हिडोरो॥ राग नेघमलार॥ सरस हिडोरनो फूलतचं
दनव गिर्यो वनायो॥ कोकिलाकलकीरकूजतकुंजनशब्द सुहाय
सुगल्बेनवं दनकेअनोपमडांडी सुभगसुठार। पटुलीविरिजाज
टितविद्रुमगढिसुघरसुनारि॥ मधमलजनाजालजहूलतसहच
रीसकुमारि। संग्रसुरमिलतानउपजतमनुहिंतरागमलार॥
१॥ सतवर्गचंपाकेवरोके लुकीअर्जुनवहारि। गुलदावकर
णासेवतिजाईजूहीकंजनिवारि॥ वेलिचंवेलीसरखंडीसोव
रनरत्नमंदारि। होनागुलाबगुलहस्तपाडरसघनघनकुलवा
रि॥२॥ कचिदाखदाडिमअगरखेवदामचिरोंजीअंजीर। नी
वूसदाफलनारंगीगलवेंतलुलसीजंभीर॥ जायफलसोपारी
नारिकेली किसमिसखिरनी खिजूर लूतवडहरसेव
अविअसवरोअंगूर॥३॥ जहां रहस्यवेठ सुघरपं:

करमनोरथ गिरिधरलालनको परमानंददास गाई ॥ ३ ॥ रागका
न्हरो ॥ ए ब्रज घोषनारि सुनसुन आई हें जू बनिठनि फूलनकुव
र लावरे ॥ श्रवनसु निसिंहद्वार झनकार जेहर नेहर ग्रनवट
बिछुना पाव लपाई निधरत सु ठर पद धरनी चावरे ॥ १ ॥ रम
क निझमक निफूलन फूलन घन दामि नि ज्यो प्यारी कों कौ
पे पीय हाव भाव रे ॥ कल्यानके प्रभु गिरिधरन रसिकवर
प्यारीकों लेई उठाई नी लेउ द धि मध्य संजकी सखी बेठी
ने हनावरे ॥ २ ॥ रागकानरो ॥ सुघरकदंब खंडी मध्य हलत
ई पाति रच्यो हे हिंडोरो फूलनको सवारि ॥ चहुं ओर द्रुम लताकु
करही लोभा देत बोलत चातक पिकमोर चकोर कीर पपेया
गगनविहारि ॥ १ ॥ केवरो केतुकी जाही जूही चंबेली बेलकुंद
मंदार कूजो नवलनिवारि ॥ विविधिभांति फूलनके खं
भडांडी पटुली रची फूले फूलेरु छीतदास नाथवलिहारी
॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥ रागमारु ॥ फूलेब्रजभानकुमार फूलहीडोरना ॥

डांडी फूलन खंभ फूलनके मरुवे फूलवनाए धरनी फूलपरस्यो
हीडोरो फूलहीवादर छाए॥१॥ भमर फूल फूलनके भुहरपुर
सीस फूल सिर राजे॥ फूलन मांग भवरभवी फूलन फूलजा लछु
बिछाजे॥२॥ टीकी फूल फूलके वेशर फूलनी नोरी सोहे॥ मा
ला फूलहार फूलनके दुलरी फूलसमोहे॥३॥ वाजूबंध फूल
केवांधे चूरी फूलवनाई॥ कंचन फूल रहे कर उपर फूल मुंद
रियाभाई॥४॥ सारी फूल फूलको लेहँगा अंगीया फूल विरा
जे॥ वेनी फूल रहीका उपर निरखि औरा पत लाजे॥५॥ जेह
र फूल फूलके पायल फुलअनवट छवि भारी॥ फूलकमल
लपर फूल विछुवा सूरदास वलिहारी॥६॥४०॥ राग मला
र॥ रसिक हीडोरना माई झूले श्रीमदनगोपाल॥०॥ हरिहि
डोरे हीरच्यो कुंजनी जमुनाकूल। तहां वेल चंपा मोगरा
के तुकीकेवरा फूल॥ निरखि शोभा थकि रहे निरगयो

मनकोझूलें। गोपी जुहरिसंगझूलेंहीं आनंदसुखकोमूलें॥१॥ बिलुलोजु
सुमीचित्रचित्रितमेनदी एहेंझूलें। वंक्रमोहलेगायवेसर सुबहीमरे
हेंतेंबोले॥ स्यामसुंदरनिकसिगोठ आपुआपुनीटोले। जावतरजम
लारहोउदेतहीऊरेझकोर॥२॥ धन्यधन्यगोपीसुफलजीवन करत
हरिसंगकेल। कृष्नकहेकहेनामबोलावतदेतहेंरसझेल॥ चिरं
जीयोसखिमदनमोहनफूलेजसोदाबेल। परमानंदसुनंदनंदनबब
रननिजचितमेल॥३॥ ४१॥ मलार॥ आजुवनउमंझरहीब्रजनारि
फूलीफिरतनिसंकझुलावतझुलवत प्रानपियारी॥१॥ एककुसुम
लेडारतउपर एकचितवतरहीगठी॥ एकआयधायमनमोहनपे
एकभरतअंक ठी॥२॥ नीलपीतअंगअंगविराजित औरसिंगार
सिंगारी॥ सूरसंगविलसतहें भामिनीनिकनहोतहेंन्यारी॥३॥ ४२॥
लार॥ हरिसंगझूलतहेंब्रजनारी॥ सावनमासकुहीघोरीघोरी
लेसीयेभूमिहरियारी॥१॥ नवचलनवबननवबात्रेकपिकननले
कसुंभीसारी॥ नवलकिसोरबामअंगशोभितनवब्रषभानदुला
री॥२॥ विद्रुमखंभरचितनगपटुलीडोडीसरससवारी॥ कुंभनदास

प्रभुमधुरजो टिको देतलालगिरिधारी॥२॥८३॥मल्हार॥ हिंडोरेमाईझूलत हेनंदलाल॥ गावतसरससकल व्रजवनिता बाढोहेरंगरसाल॥१॥ संगझूलत व्रषभाननंदिनी उरगजमोतिनमाल॥ कंचनबेलिछवि विपरीत जतप्ररुझीस्यामतमाल॥२॥ बाजतताल पखावज मुरली पगनूपुर झणकार॥ सूरदासप्रभुकी छबिऊपर तनमनडारोवार॥२॥८४॥मल्हार॥ झूलतलाल गोवर्द्धनधारी॥ बलिबलिजाउंमुखारविंदकी संगलीयेपियप्यारी॥१॥ मनिमयजटितहिंडोरोवन्यो है झूलतलसलितहितकारी॥ ललनादोउ ग्रतिरंजतहैं घनदामिनीछबिभारी॥२॥ सीतलमंदसुगंधपवनवहे कुंजघटाछबिन्यारी॥ दादुरमोरपपैयाकोले श्रवनसुनतसुखकारी॥२॥ श्रेणाऋतुजातनवरली को टिकामनुहारी॥ श्रीवल्लभप्रभुपदपंकजकी रजदासबलिहारी॥४॥८५॥मल्हार॥ हिंडोरेमाईझूलतहेनंदलाल॥ गोकुलेशप्रभूरणपुरुषोतमभक्तनकेप्रतिपाल॥१॥ इछिछबीलीचितवतचहुंदिसहरततिमिरकलकाल॥ मुखिकनचारुवहेवदनकमलकी केशरतिलकसुभाल॥२॥ वल्लभनिरखतत्र्प्रतिसुखबाढो गावतगीतरसाल॥ कहे ॰ न तयहसुखदेखतप्रेममुदितव्रजबाल॥२॥८६॥

रागमारुगोडी॥ हीडोरे नवरंग सजनी तहां फूले श्री नंद छत्र भराय॥ चलो देखनी जोवा जई ये यह सुख शोभा कहि यन जाय॥१॥ नवरंग खंभ कनक होउ सुंदर नवरंगी डांडी चारु सुहाय॥ नवरंग चोकी तकीया गादी नवरंग मोतीना झूमक थाय॥२॥ नवलनवलनवरंगी राधा नवरंग युवती ठाले वाय॥ नवरंग मोर कलाप करिने नवरंग जमुना जीलेहेरे जाय॥३॥ नवरंग पोहोप छबि व्रज उपर इंद्र मुदित तत्ती आनंद नीवाय॥ नवरंग भक्त तणा मन फूल्या माधवदास तुमजेपो जसगाय॥४॥४७॥ रागमालव गोड॥ हीडोरे फूलत गिरिवर धर शोभा वरनी न जावे हो॥ वाम भाग वृषभाननंदनी वसन अंग बनावे हो॥१॥ अति सकुमार नारी उरपत हे मोहन उर सिज जावे हो॥ नील पीत पट फेरा तहे घन दामिनी दुरि जावे हो॥२॥ मानो तरुन तमाल मध्ये का अंग अंग अरुझावे हो॥ जोरस्याम बदन विमरकत मनिमय कनिक बल लपटावे हो॥३॥ सुरत सिंधु विलसत होउ जन सबसह चरी सुखपावे हो॥ चतुर्भुज दास [illegible] गिरिधर जस सुर नर मुनिजन गावे हो॥४॥४८॥

रागमलार॥ कुसुमनी जोतिबनाई हिंडोरे कुसुमनी जोतिबनाई॥
नवलकिसोर मुरलीधर मूरत ढिगराधे सुखदाई॥१॥ छाहरही हे
बाहूराजित तित दामिनी की अधिकाई॥ दादुरमोर कोकिला बोले
नान्हीनान्ही बूंद सुहाई॥[illegible]॥ झोटा देत सकल ब्रज सुंदरी पवनचल
त सुखकाई॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधरनलालकी यह छबि बरनी न
जाई॥२॥७९॥ रागधनाश्री॥ फूलत सुरंग हिंडोरना हो फूलत न
वलजुगलकिसोर॥ बरलालिनी रसभरे मनमोहन सहसत ल
सतचितचोरे॥१॥ स्यामतमाल लाल रस लंपट गात करत घनघो
रे॥ पुलिक पुलिक प्रीतम उरलागत बरषत सुपनही [illegible] घोरे॥
र॥ नीलांबर पीतांबर अंब छबले चंचल चलत झकझोरे॥ दामो
दरहित गिरिधरकी छबि सदा रहो मनमोरे॥२॥८०॥ मलार॥
फूलत गोकुलचंद हिंडोरे॥ बामभाग वृषभाननंदिनी गावत अति
सुरजोरें॥१॥ तैसेई मोर पपैया बोलत सीतल पवन झकोरें॥ रसि
करायप्रीतमसंग फूलत हसत हसत चितचोरें॥२॥८१॥ रागनट॥ हि
डोरे फूलत हैं पियप्यारी॥ बर्षारितु नीके रंग लागत तैसीये भूमि हरियारी
॥१॥ रत्नजटित के खंभ मनोहर डांडी चारु सवारी॥ परमानंद दास [illegible]

मल्हार ॥ आजु सावन तीज सुहाई ॥ कदि हिंडोर गोपी सब
गहुते नंदनंदन जुर आई १ ब्रजनारी आदर दे बोली ले
नोमनो माई मेरो कुंवर कन्हैया जू ने ठुलसबव जो आई २
बेठी जाय हिंडोरे स्यामा गावत पावन नाई रसिकराय
प्यारी संग झूलत प्रभु के प्रेम मलपर ३ मल्हार ॥
सावन तीज हरियारी सखीरी बरसाने ब्रजभान गोप के
लल्ली भीर अति भारी ॥१॥ सुंदर हिंडोरे झूलत कीर
ति कुंवर दुलारी ॥ प्रीतम सखी झुलावत गावत सुर
कोकिल अनुहारी २ बरसावर ते बसन बिराजत
मनहुं मैन फुलवारी बनिता वाके नैन मेंव लिलि
खत नित नंदकुंज बिहारी ३

अथ पवित्राके पद॥ राग सारंग॥ पवित्रा पहिरे श्री गिरिधरलाल॥
सुंदर स्याम छबीलो नागर सकल लोक प्रतिपाल॥१॥ हरी मन हु
रष तुमारो मोहन संग सखी व्रजबाल॥ फूले फिरत मत्त करि नीको
अति आनंद नंद लाल॥२॥ देषि स्वरूप ठगी सी ठाढी देपति
लेके साज॥ परमानंद प्रभु परनो छीवरि आन पियाके काज
॥३॥ राग सारंग॥ पवित्रा पहिरे श्री गिरिधरलाल॥ श्रावण
सुदि एकादशी के दिन निज मंदिर बैठे नंदलाल॥१॥ सुवती
पूथ सब आई बधावन मोतिन भरि भरि थाल॥ मेवा सब
पकवान मोदक भरि ल्याई आरोगत सखा सहित सब ग्वाल॥
२॥ निरषत देव मुनि सब हरखत बरषत मेह रसाल॥ गो
विंद प्रभू दीजे पचरंग। पवित्रा नवल नवनीत नमाल॥३॥
राग सारंग॥ पवित्रा पहिरे श्री गिरिधरलाल॥ वाम भाग वृ
षभान नंदनी बोल लवनन रसाल॥ आसपास सब ग्वाल
मंडली मानो कवल अलि माल॥ कुंभन दास प्रभु त्रिभुवन मो

हनगोवर्द्धनधरलाल॥२॥ राग सारंग॥ पवित्रापहिरेकुंजविहारी तीनलोकपवित्रकीयेहैं श्रीविठलनगिरिधारी॥१॥ अतिहीपवित्रश्रीनामेंविलसत निरखिव्यकितभयोमार॥ परमानंदपवित्रकीमालाजाकुलकीव्रजनारी॥२॥४॥ राखीनाकीर्तन॥

राग सारंग॥ राखीबांधतिजसोदामैया॥ सकलसिंगारविचित्रबनावत संगसोभितबलभैया॥१॥ कनकरचितसिंघासनबैठनिजनिजकुलकीछैया॥ तालमृदंगशंखधुनीबाजत सुनियत व्रजमेंहोतबधैया॥२॥ करलेथारलालटबनावत कुमकुमतिलकसुहैया॥ देतअच्छतकरराखीबांधत उरआनंदवढैया॥३॥ भाजनभरिपकवानमिठाईमेवाबहुमिलैया॥ अतिसुगंधवासविराजेदेतआनंदैया॥४॥ इंदुरीपिंडुरीबारमुखपरजननीलेतबलैया॥ लेआरतिउतारततनुपरगोविंदबलिरतिजैया॥५॥ राग सारंग॥ सिंहपोरगोठ

नंदनंदन द्विजवर रक्षा बांधत आनि॥ परम पवित्र पाठ की डोरी
राखी रहीं पानी॥१॥ पढत वेद मंगल द्विज हरखित देत आसीस
सुजानौ॥ चिरंजीयो नंदलाल कन्हैया ब्रजजन जीवन प्रान॥२॥
हरख हृदि देव विप्रन कों हीरा मानिक दान॥ गोविंद प्रभु गिरि
धर मुख अंबुज सदा रहो या बान॥३॥ राग सारंग॥ राखी बांध
ती यशोदा मैया॥ सबे सिंगार सजे पट भूषन राम कृष्ण दोउ भैया
॥१॥ रतन जटित कर राखडी बांधी पुनि पुनि लेत बलैया॥ स
कल लोग साज आगे राखे नीके लेहो कन्हैया॥२॥ या छबि दे
खि मगन नंदरानी निरखि निरखि सचु पैया॥ चिरंजीवो यशो
दा पूत तिहारो परमानंद यश गैया॥३॥ राग सारंग॥ राखी बां
धत यशोदा मैया॥ सकल सिंगार सजे पट भूषन राम कृष्ण दो
उ भैया॥१॥ गावत गीत सबै गोपीजन घर घर होत बधैया॥ प
रमानंद दास को ठाकुर सब सुख करत कन्हैया॥२॥ राग सा
रंग॥ मात यशोमती राखी बांधत बल के श्रीगो ।लन्दे॥

कनक थार में कुमकुम अक्षत तिलक करत नंद लालके ॥१॥ नाना
भाँति आभूषन अंबर वारति मुक्तामालके ॥ रामदास प्रभु आपु
नी जनु पद परसत हैं लालके ॥२॥ राग सारंग ॥ राखी बांधति य
शोदा मैया ॥ विविध सिंगार सजे नाना विधि बेठे रामकृष्ण दो
उ भैया ॥१॥ गावति मंगल गीत युवति जन फुनि फुनि लेत बलै
या ॥ आरति करन करि न्योछावरि चिरंजीयो कुवर कन्हैया ॥२
सूत्र पाट राखी कर सोहत हरि हलधर दोउ भैया ॥ परमानंद दा
स को ठाकुर व्रज जनको सुखदैया ॥३॥ राग सारंग ॥ बेहेन सुभ
द्रा राखी बांधत बल अरु श्री गोपालके ॥ कनक थार भरी अक्ष
त कुमकुम तिलक करत नंद लालके ॥१॥ आरति करती बेह
नी न्योछावरि वारति मुक्तामालके ॥ आसकरन प्रभु मोहन
नागर प्रेम पुंज व्रज वालके ॥२॥

रागस्वयोबिलावलन॥ बालबिनोद भावती लीला प्रति सुनी लमुनि भाखी॥ साधु साधु तुमसुन है परिक्षित सकल देव मुनि साखी॥ कालिंदी के निकट नगर येमधुपुरी परमरसाल॥ कालनेमि उग्रसेन राजा ये कुल उपज्यो कंसभूपाल॥१॥ कहत शुकरायसों॥ हयेगएधेनरत्लपीतांबरआनंदमंगलचार॥ समुदित भई अनाहत बानि कंस कानि परी सार॥ याकी कुख अवतरी है जे सुतकरी है प्रानसंहारी॥ रथ तेउतरिकें शग्रह राख्यो करिहों प्रानसंहारी॥ कहत कैसरायजू॥२॥ तबवसुदेवदीन कै भाख्यो पुरुषन त्रियवध कहरी॥ मोकुलई अनाहत बानी तातें सोचत टरही॥ आगे वृक्षफल जा बिषफल वं दूप हो बिनकी लसरई॥ याहिरीतो कुं और बिहाउ कौन सो भली यउरई॥ कहत कैसराय जू॥३॥ यहसुन देवसके लमुनी नौखे रायनल्सीकीजे॥ तिहारे मान्य वसुदेव देवकी जीवदान दनदीजे॥ कीनो यत्लहै तहे निफल कहौ हमारो कीजै॥ याको हरत और तरे गो जे सुत सावधान है लीजे॥ कहत वसुदेव जी४

पहिलो पुत्र देवकी जायो लै वसुदेव दिखायो॥ बालक देख कंस हंसि दीनो सब अपराध छमायो॥ कंस कहा लरकाई कीनी नारद कहि समुझायो॥ जाके उदर तुम कर्त हो इष्ठी पति सो कुनि पेहै लै आयो॥ कहत मुनि नारद॥५॥ यह सुनि कंस पुत्र फुनि मांग्यो एहि विधि उत्र संहार्यो। कंस वंस को नाश करत हौं कहा लौ जीव उबार्यो॥ इहि विपति कव मिटिहो श्रीपति विधि यह कहा विचार्यो॥ तव देवकी भई अति व्याकुल तन की सुधि विसार्यो॥ कहत एउ देवकी॥६॥ धेनु रूप धरी भूमि पुकारी शिव विरंचि के द्वार॥ सव मिलि गए जहां पुरुषोत्तम अविगति अगम अपार॥ छीर समुद्र मध्य जहां पोढे बोलत आगम द्वार॥ उधरूं धरनी दनुज कुल मारूं जे नर तन अवतार॥ कहत प्रभु देव सो॥७॥ पंच तत्व पवन पानी ज्यों सोइ है जन्म विकार॥ पाखंड धर्म करत है पामर नाहिन वलत निहार॥ मारग छोड़ि कुमारग सो रति बुधि विपरीत बिचारि॥ अमृत छांड़ि सब विष अचवत हैं देत धर्म परगारी॥ कहत प्रभु आपही॥८॥ सुर नर मुनी और पशु पंछी सवे आसी सदीनो॥ जो कुल जन्म लेहो हमारे संग

जो चाहत सुख कीनो ॥ जेही माया विरंचि शिव मोहे ताही वा निक
र चिन्हो ॥ देवकी कुख अकरखी ले हिनी आपुनो आसन लीनो ॥
आप जग जीवन ॥ ९ ॥ हरि के गर्भ दे हु जननी के वदन उजास्यो ला
ग्यो ॥ तिहि छिन आय कंस भयो ठाठो देखि महा तम जाग्यो ॥ दि
न दस गए देवकी आपुनो वदन निहारन लाग्यो ॥ कंस काल जीय
जानि आपुने अति आनंद मान्यो ॥ कहत तब देवकी ॥ १० ॥ अवि
नाशी को आगम जान्यो सकल देव अनुरागे ॥ कछु दिन गए गर्भ
को आगम देवकी सूवदु भागे ॥ कहा करूं कछु नाहि उपायो चाहत
गर्भ दुरायो ॥ आठवो गर्भ देवकी जन्म नि वसुदेव निकट बुलायो ॥
अखिल लोक नाथ सुखदायक जन जनम धरि आयो ॥ आप जग
जीवन ॥ ११ ॥ माथे मुकुट पीतांबर ओठे उर सोहे भृगु देखे ॥ शंख
चक्र गदा पद्म विराजित अति प्रताप शिशु देख्यो ॥ तब देवकी ज
ई अति व्याकुल अद्भुत रूप हि देख्यो ॥ वे ठि निकट सकुचि पति नो
ले दुहनी अस सुख पेखे ॥ देव ल सुख पुत्र के ॥ १२ ॥ सुन देवकी हों
अन्य जन्म की तुम को कथा सुनाउं ॥ तुम मांग्यो छु हों दयो नाथ के

तुमसो वालनकपाउं॥ शिवसनकादिकआदिब्रह्मादिकध्यानध्यान नहीआउं॥ नन्दकवत्सलनहेमेरे विरदवीर है हीकहांलजाउं॥ होहुंज गजीवन॥१३॥ तबहीमायामोहअरुजाये पिउके तेवनलाजे॥ अ होवसुदेवलेजाहोगोकुल तुमहोपरमसुभाजे॥ घनदामिनीधर नीसोंकोंध्याजमुनाजलनसोंपाजे॥ वसुदेवजायधसेजवजलनमें लकलदेवअनुराजे॥ विकलनवसुदेवकी॥१४॥ आगेदेखेजमुना दहगहरीपाछेंसिंहदहाजे॥ गुल्फजंघकटिग्रीवानासिकातव लोंस्यामउछंजे॥ चरनपछलीपरसकालिंदीतहींसिंहजुआजे॥ उपरशेषसहस्त्रफनिछायोलेगोकुलकोंभाजे॥ आपवसुदेवजी ॥१५॥ पहुचेजायमहरिमंदिरमेंनेकुनशंकाकीनी॥ जागेनकोउ योगकीसैपतिलवहिगोदकरिलीनी॥ लेवसुदेवतुरितघरिआयोस कलघोषमेजानी॥ देवकीकुषअउतरिकन्याकंसप्रतिचवनमानि॥ कंसडरिमानिके॥१६॥ तहसुनिकंसखड्गलेधायोतवदेवकीआधीनी दहकंन्यामाहिबकंसबंधतेदासीजानीकरिचिन्ह॥करिकंसअधवै शानाशकोसमुझि कैशारीसकीनीनाजानिएदोहोमहावलअविग्यति

कहिकेचिन्ही॥कंसभयभीतसो॥१७॥ जैसेब्यालनगरुडकोंदेखेवे
गीचंचलताके॥ तेसें।सीहुआपमुखनिरखीपरेरूपकमेजाके॥
तेसेंकंसभरमअभीता एकमहल्योतजसभाके। गतिमतिजीव
नकीपतितेरेमृत्युहाथहेजाके॥ सोमदअभिमानके॥१८॥ प
रकततछिनलागई आकाशाईसोउभुजा बगलनपटाई॥ भईआ
काशबोधिसुरदेवी अबधीनीपरेआई॥ जैसेंमीनजलहीमें
क्रीडतसकेनमृत्युलखाई॥ वेतोकंसकाजकेप्रगटसोव्रजमें
पादवलई॥ कहीदेवीसत्यते॥१९॥ इहसुनकंसगयोदेवकीपे
जायबरनलपटायो॥ मेंअपराधकीयोशिशुमारयो लिखि
नमिट्योजाये॥ छमाअपराधकरोदेवकीकरजोरेविन
तायो॥ बालपहरपलेब्यासुखसोयोनेकनींदनहीआयो॥ कंस
विलनापके॥२०॥ देसदेसकोदूतपठायोकोपहेंननकेसो॥
अविगतिअजरअजीतअमरलोकरताकोंनजेसो॥ दिन
हीदीनसोपुरुबहोतहेंवढतअसुरवल

भोर बुहार ए पानि को माखन जैसो॥ कैसे मन मैंव संतोषो॥ २१॥ जागी
महेर पुत्र मुख देख्यो आनंद तूर बजायो॥ कंचन कलस द्वारे द्वि
ज त चंदन भूमि लिपायो॥ त्रिदिशपति वरख्यो कुसुम नि अति
फूलनि जो कुलन छायो॥ नंद कहें इछा सब पूजी मन वांछित फल
पायो॥ कहत ब्रजवासीयां॥ २२॥ आनंद भरे करत कौलाहल उदि
त मुदित नरनारी॥ नभ में अभय निशान बजौयो देत निशंके
तारी॥ नाचत महेर आनंद मन कीने पात व जावत थारी॥ सू
रदास प्रभु गोकुल प्रगटे दुष्टन गर्व प्रहारी॥ कहत ब्रजवासीयां
॥२३॥ राग आशावरी॥ धन्य यशोदा भाग्य तिहारो जिन एसो
सुत जायो हो॥ जाके दर्स परस सुख उपजत कुलको तिमि
र नसायो हो॥१॥ विप्र सुजन अरु वंदीजन मिलि सकल नंद ग्र
ह आयो हो॥ नौतन सुभग हरदि दूब दधि हरखित शीस वं
धायो हो॥२॥ गर्ग निरूपी कहे सब लछन अविगत अविनाशी
हो॥ सूरदास सुख समूह सु ब्रज में आनंद ब्रजवासी हो॥३॥२॥

॥श्रीगणेशायनमः॥अथवसंतकेपदलिख्यते॥रागवसंत॥ ॥
हरिरिहव्रजयुवतिशतसंगे॥विलसतिकरुणागणअतवा
रनवरईरतिपतिमानभंगे॥विभ्रमसंभ्रमलोलविलो
लैचनसूचितसंचितभावे॥कापिदृगंचलकुवलयनिकरे
रंचितवंकुलरावे॥१॥स्मितारुचिरुचिरतराननकमलमु
दिक्ष्यहरेरतिकंदे॥चुंवतिकापिनितंबवतीकरलंबितलघु
तचिबुकममंदे॥२॥उद्भटभावविभावतचापलमोहन
निधुवनशाली॥रमयतिकामपिपीनघनस्तनविलुलित
नववनमाली॥३॥निजपरिरंभकृतेनकुतैमपिवीक्ष्य
दिसीविलासी॥कामपिकापिवजाकरोद्गतकुतुकेनस्तुहासे
॥४॥कामपी॥नीवीवधविमोक्षसलीभ्रमुकुलितनयनी॥
रमतेसंप्रतिस्फुरितविलासिकरतलचंचितनिजवसनां॥
॥५॥श्रीयपदपंकजविपुलपुलकावलिद्विगुणितसुभग
सरिता॥ विभ्रमसंभ्रमजलदेचलमल उजायत

पिसमै हरणोरतिरणधीरा॥६॥ विभ्रमसंभ्रमगलहै चल
मलयाचितमंगमुदारं॥पश्यति सस्मितविस्मितमन
सासुहृशः विकारं॥७॥चलितकयापिसमैसकुरग्रहमल
सतरंसविलासे॥श्रीराधेलववपूरयतुमनोरथासुदित
मुदं हरिरासे॥८॥रागवसंत॥ललितलवंगलतापरिसि
लैन कोमलमलयसमीरे॥मधुकनिकर करंबितकोकि
लकूजतकुंजकुटीरे॥१॥विहरति हरिरिह सरसवसंते
नृत्यतियुवतीजनेनसमंसखी॥वीरहिजनस्यदुरंते॥
उन्मदमदनमनोरथपाथिकवधूजनजनितवीलापे॥
००अलिकुलसंकुलकुसमसमुहेनिराकुलवकुलकुला
पे॥मृतमदसौरभरभसवशंवदनवदलमाल
तमाले॥युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशु
कजाले॥४॥मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेस
रकुसुमविकासे॥मिलतशिलीमुखपाटलपटलकृतस्म

रसफलविपिनलोल॥५॥विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुण
करुणकृतहासे॥विरहिनिकृतनिकुंतमुखाकृतिकेतकि
दंतुरितासे॥६॥माधविकापरिमललिततेनवमालतिजा
तिसुगंधौ॥मुनिमनसामपिमोहनकारिणितरुणाकारु
रुणबंधौ॥७॥स्फुरदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलि
तपुलकितचूते॥बृंदावनविपिनेपरिसरपरिगतय
मुनाजलपूते॥८॥श्रीजयदेवभणितमिदमुदित
हरिचरणस्मृतिसारं॥सरसवसंतसमयवनवर्णनमनु
गतमदनविकारं॥९॥रागवसंत॥स्यामसुभगतन
सोभितछीटेंनीकीलागीचंदनकी॥मीडितसुरंगअ
बिरकुमकुमाभोरसुदेसीसरजनैदनकी॥१॥कुंभ
नदासमदनतनमनवालिहारकीयोनैदनंदनकी
गोदिधरस्याधरचीविधमानोजुवतीजनमनफंदनको २

रागवसंत॥ देखवसंतसमै ब्रजसुंदरी तजि ग्रामि मां
न चली वृंदावन॥ कुंदरताको पातिकिसोरी नवलितसा
जे सिंगार सुभगतजा॥ पागई तिह गोर देखि कुंचे दु
मल ताप को लित गुंजित अलि गन॥ कुंभनदास लाल
गि गिधरको मिली कुंवरी राधा रूप लेख मैं तिमन॥२॥
रागवसंत॥ गावति चली वसंत वधावण नंदराय दरबा
र॥ वानिकवाणि निवानि चोखमो खसो हजजनसवरे
कसार॥१॥ अंगी पाला ललित तेनसारी मूर्छमननवउ
र हार॥ वेनिगूथित हलाति निते ननप[illegible] रकहाक
होवर्ड ले नार॥२॥ मृगमद आनउ डोली आविं पां आजि हेअं
जनपूर॥ अकुली लवपीन इन होति तेउ जयावतीमोहन
जावनमूर॥३॥ पगतुते हाट कि[illegible] के हार कि
किनी खरघो विघ किंसु निमार॥ घोखघोखप्रति

गलिन गलिन प्रति त्रिभुवनकी जमकार ॥४॥ कंचनकुंभ लीसे पर लीने मदनतालिंधु तें भरके ॥ ता पै है पीतवसन अतनर चिमोर मैं जुरी धरिके ॥५॥ अबीर गुलाल अरगजा सो धो विधिन जात बिस्तारि ॥ मैं न सैन जो नारदें नको कमलनैन कमलनैन थारी ॥ ६ ॥ पो हो चीजाय सिंह पौरी जब त्रिभुवन जुवति समुदाई ॥ निज मंदिर तें निकसि जसोदा सन्मुख आगे आई ॥ ७ ॥ नई नीरजी तर नवनन में जहां ब्रज राजकिसोर ॥ नरतिभाव तें प्रान पियाकों घेर फेर चहु ओर ॥ ८ ॥ ब्रजरानी मुसुकानि फिर कें पकरन भई जब करकी ॥ जे संग सखी न खीक छुव ती यां मिसई मिस उतसरकी ॥ ९ ॥ कुमकुम रंग सों भरि पिचकाई छिरकत जसकुमारी ॥ बरजत छींटे जात दृगन में

हलिधरखुवल्लतोकमधकमैगलिंअपनीमीरखुलोते ॥१४।५

धनवेपो॥छनवारी॥१०॥ चंदुन बंदुन चो वाम घिके नी लि कै
जे लिपटावे॥ अलिकलि घलि तापाग लि घ लिंअतिकुन
वेवों धनंआवे॥ ११॥ मर लिनि संकम रें अंक वारी भुज
नजवी-च भुजमिले॥ मुनमद्‌गवालि वहति नछि का हूने
लिखेलरसरेलि॥१२॥ कायोरगमगो लिलित ग्र मैजा मयेखा
लिन मनभायो॥ तकरुकमेरु कीयेकहीविदि पोलालिन
कैगलिगायो॥१३॥ तालिमदृंजालो येम्रीरांमांपहें चें आईस
खेल
हायें॥ म चोमनिखचितवोकमें कवियेकाहा कहिंआवें
र
वत्रभु नत्रभुजारि धूनै क्रो देखे ही वनिंआवें॥१५॥ ११॥
रागवसंत॥खेलतवसंतजिरधरनलोल॥उउतंग्रविर
गुलोलि [redacted]के सर छिरकत नवल बाल॥१॥ लिपटावे
तचोवा अतिरसाल॥२॥ चंदन लोगफो होऊ गाल॥

देखतमन्मथ भायो विहाल॥ ३॥ श्रीगोवर्धनधर प्रभु ध
रायो॥ बलु भुज कृत बलिहारी जाय॥ ४॥ ॥ राग बसंत॥ चलि
राधे तोहि स्याम बुलावें। ले चल स्याम बुलावे देखे वेनु धरे मध
रे सुर तें तेरो नाम लेले गावे॥ १॥ वे देखो वृंदावन की सोभा ठौर ठौ
र कुसुम फूले॥ कोकिला नाद कूजत मन आनंद मिथुन विहंगम
फूले॥ २॥ उन्मद जोवन मनोहर कोलाहल ईह अवसर हे नीके
॥ परमानंद स्वामी प्रथम समागम मिल्यो भावतो जीय को॥ ३॥
॥ नवल वसंत नव वृंदावन नवल लाल खेले होरी॥ नई सुर नारि
नवल उफ बाजत नवल राधिका गोरी॥ १॥ कालिंदी तट नौतन सो
भा। नए नए चंदन कोरी॥ सूरदास स्वामी मनमोहन चिरंजियो
अहजोरी॥ २॥ वनसंपति फुली वसंत मास॥ रसिकन जन मन न
भयो हुलास॥ १॥ श्रीगोकुल फुल्यो अतिरसाल वाजे चंग मृदंग
उपंग ताल॥ सोहे सुंदर तीलक बनाय भाल। ग्वाल छिरके के
सर भरी गुलाल॥ ३॥ जन जन फूले अंग अंग॥ फ

लधर कृस्नसँग॥ फूले गोपी ग्वाल मिलि जुवति जुथ मानो प्र
गट भयो है काम दूत॥२॥ श्री वृंदावन फूलें कुंजै कुंज॥ जमु
नौ जल फूले करत गुंज॥ फूले कमल वल कलि। जीये भमर
वास॥ फूले खग बोलें आस पास॥ ४॥ श्री गोवर्द्धन फूले ठौ
र ठौर॥ फूले पट ०ल के सूर बमोर॥ ऐसी सोवन जो बार
मास॥ फूले यस गावें रामदास॥ ५॥ ९ ॥ खेलै लाल बसंत
श्री विठ्ठलेस मिलि पुत्र पौत्र सुंदर सदेस॥ श्री गिरिधर प
रमप्रवीन जानि श्री गोविंदराय गुन सुख निधान॥ श्री बा
लकृस्न गुन रूपरास॥ श्री॥ श्री रघुपति केलि कला विलास॥ श्री
महाराजाधिराज॥ श्री घनस्याम मन हरन काज॥ श्री वल्लभ
स्यापी कातिलक माल॥ श्री पटूर लाम धयम रकतर साल॥
२॥ सूरजोध दामोदर सुजान॥ श्री जगंनाथ हित नव
खान॥ श्री कल्यानरायम पै डित पीड़ित ज पार॥ श्री गोकु
लौध्रुव श्री कृस्न सार॥ ३॥ श्री लक्ष्मन रख जगटरूप॥
ऐश्री

श्रीद्वारकेश ब्रजनाथ रूप ब्रज भूषन पीतांबर कृपाल पुरु
षोत्तम ब्रज अलंकार बाल॥४॥ श्रीगोपाल वल्लभ कुमार॥
श्रीविठ्ठलराय रसिक उदार॥ श्रीदेवकीनंदन गुन गंभीर॥
अति प्रमुदित गोपाल वीर॥५॥ श्रीयशोनंदन जै देव जा
नि॥ श्रीद्वारकानाथ जगती जीवन प्राण॥ श्रीरामचंद्र सुंद
र सुहाल॥ श्रीमदनमोहन जगन्नाथ भ्रात॥६॥ श्रीबालकृष्ण
अरु गोपीनाथ॥ श्रीब्रजपाल प्राणेश साथ॥ पहेरे बसन त
न रंग रंग॥ बहु भूषन जटित नग नसु रंग॥७॥ सब जुरे आ
ए जमुना के तीरे॥ बहु भक्त माले लहो भई है भारे॥ गुन गं
धर्व नर्तन रास॥ संगीत निपुन है सी सुगुरे॥८॥ बाजे बीनी
बैन रबाब चंग गति मिलत ताल मोद [illegible]॥ बिच रुंज मुर
ज आव जउ वंग॥ सरसांरगी मीलत सुगंध॥९॥ पंचशब्द
नोवत ढोल भेर॥ सैनाईन फेरी मिलत टेर॥ बाजे अग
नीत बाजे क॥ जगाजत सब घोषग गात सुनाए॥ १०॥

चोवाचंदनवंदनअबीर॥छिरकेगुलालकेसरसुनीर॥तदपि
चकाईजलगुलापकोस॥डारतभरिभाजनकरतहास॥११
मिलगावतसरवसंतराग॥अनुरागवढ्योबलतसुफाग॥त
हांआएआगिरिधरनलाल॥नवनीतपायाविर्हूलासलै॥१२॥
श्रीवारकेसआलोशनाथ॥श्रीगोकुलेसआलोशसाथ॥श्रीमदन
मोहनदोउस्वरूप॥सेवाग्रहेग्रहेप्रतिएकरूप॥१३॥सुविहे
षदेषफलेकुमार॥प्रभुहितअंनेहितगोरवनारि॥सव
गावतसरसधमारगारि॥प्रतिविवसतनकीलैमारि१४
प्रभुहितमननसर्वसदेतगारि॥परविविसवसननभुषनउतारि
॥चितचकितगठिनिहारि॥गतिपैजमईमतिसकलहारि॥
१५॥सुखसिंधअबोधअगमअपार॥सबदेवमुनिपावतनपार॥इ
हजीवकाहाकहसकतवात॥परिकछुकहवैकुंचितजात॥१६॥रितु
वसंतरहफागखेल॥नितहोतहेब्रजमेरंगरेल॥सोरसपावननका
बहुतप्यास॥प्रभुपूरोवद्लभदासआस॥१७॥इतिवसंतसंपूर्णं

परिवाप्रथमकुंवरअतिवीरहलगोपीनसंग॥ताअमुरछदफवा
जेओरंअनेकसुखचंग॥१॥भरिडोलडोलकछ्ववेनुमदंग
उपंग॥रुदमुसकाकडुंदुभीओरजालरतरलतरंग॥२॥विवि
धिपखावजआवजझांझतालउफजोरी॥विचविचगोमुखसुनी
पतविसुरलीकीघोरी॥३॥ग्वालपरस्परराजेमनमेंजोरीहाथ॥दू
कोकनैकपिचकारईभरिभरिछीरकतगाथ॥४॥चलोसखवीदे
षनजैयेविहरतवीथकार॥सुनिमनिहरषिसकलजुवतीयाला
गीकरनसिंगार॥५॥नीलांबरलौतनसारीलहगालीलसुरंगा॥कं
चुकिलजीतकुचनपरगुडरमनहुअनंगा॥६॥सोधेसीसस
रकेसेरिवेनीसरससवारी॥मानोकनकखंभलेदिमतपन्नग
नारी॥७॥सीसफुलरच्योतिलकभ्रकुटिबीचचंदनरोप्यो॥
मानुहंसुपसुरसाध्योवानमनमथमानोकोप्यो॥८॥वेंदनमां
गमध्यअतिराजतजैंकंजसुठार॥मानोसिसेसिससीपरजारयो
अछलठार॥९॥नैनैंश्रवनचारुचकविराजे॥मानोससीकअ

कुरंग

चोवा चंदन बदन अबीर।।छिरके गुलाल केसर सुनीर।।तपि पी
चकां ई जल गुलाप नास।।डारत भरि भाजन करत हास।।११
मिल गावत सरव संत राजा।।अनुराग वढ्यो षलत सु फाग।।न
हो अरी मुरछि गिरि धधरन ताल।।नवनीत पाया विमूरं जाल।।१२।।
आधार केसर लोरा नाघ।।आगो कुल सर लोश लाघ।।अमिन दन
मोहन दोउ स्वरूप।।सेवा गरहे गेहे प्रति एक रूप।।१३।।सुबि है
बदे प फूल कुमार।।प्रभु हित अर्नेरि त जोषनारि।।सब
गावत सरस धमार गारि।।प्रति विवसत न कोई नारि १४
प्रभु हित मन सर्वस देत जारि।।परवि विसवसन भुषन उतारि
।।चित चकित गहि निहारि।।गति पंजन ईमति सकल हारि।।
१५।।सुखसिंधु अबोध अगम अपार।।सब देव मुनि पावत न पार।।इ
ह जीव का हा कह सकत बात।।परिकछु कहवे कुं चित लजात।।१६।।रितु
बसंत रह फाग खेल।।नित होत है व्रजमें रंगरेल।।सोरस पीवन की
बहुत प्यास।।प्रभु पूरो वल्लभदास आस।।१७।।इति वसंत संपूर्ण

परिवाप्रथमकुंवरअतिवीर हलगोपीनसंग॥ ता जमुरन्ह प्रफवा जेजोरअनेकसुखचंग॥१॥भरिडोलडोलकछ्ववेनुम्रदंग उपंग॥ दिन्हमुस्काकंदुंदुभीओरभ्जालरतरलतरंग॥२॥विवि धिपखावूजमावजकॉन्ह तालउफजोरी॥ विच विचजोमुखसुनी पत विमुरलीकीघोरी॥३॥वालपरस्पर राजेमनमेजोरीहाथ॥ कूका कवेकपिचकारईभरिभरिछीरकतगाथा॥४॥चलोसखलीदे षनजेयेविहरतसीघद्वारा॥सुनिमनिहरषिसकलजुवतीयाजा मीकरनसिंगार॥५॥नीलांवर लीतनसारीलहगालीलसुरंग॥ कं चुकिलालीलकुचनवरगुजरमनहुअने॥६॥सोधेसीसस रंकेवेरवेनीसरसलवारी॥मानोकनकसंभलटिकुमतपन्नग नारी॥७॥सीसफुलरचोतिलकम्रकुटिवीचवंदुदेनरेपो॥ मातुहुंसुपसुरलाध्योवानमनमथमानोकोप्यो॥८॥वंदनमां गमध्यअतिराजतजैकंजसुठार॥मानो सीससलीपरडासेयो अछूतठार॥९॥नेनैंश्रवनचारुचक्रविराजे॥मानोससीकंञ

कुरंग

वनीपर देषीयतारविरघुसाजे ॥११॥ नरनसिखजोंजुवतीवनीग
ईसवेंसिंघद्वार ॥ स्मारोफगुवादेहुमोहननंदकुमार ॥१२॥
काहेमोहनरायमाजोकाहे ओलेलेहु ॥ कुमुदहंदजोनिक
सिनेवेकोदेखाईदेहु ॥१२॥ फगुवाकोमिसजुगेहरिदर
सनकीआस ॥ देखिकैजियतरतलोचनमरतपास ॥१३॥
जुनिमनहरषजसोमतीउनकोवआसनदीनो ॥ कुंमकुम
जलसोंघोरिसवनिमुखमर्दनकीनो ॥१४॥ वरनवरनप
टोपैंदीयोमोदभरिभरिजुदायेमागाईजू ॥ इहविधनंद
घरनीव्रजकीतरुणीपहराई ॥१५॥ जतसवनमनहरित
सुदीतमनदेतआसीस ॥ तुलारोकुंवरजसोमतिजिवो
कोटिवरीस ॥१६॥ नीजदेषेनेनसिरातअघातनपावतप्या
स ॥ तिनकोचरणकमलजोपावेमाधोदास ॥१७॥ १॥
नंदगांवकोपांडेव्रजवरसानेआयो ॥ अतिउदारहंषभा
नजानिसनमानकरायो ॥१॥ पांडेजूकेपायनकोहसी

हसीसिमनि वायो पाय धोय न्हवाय प्रथम भोजन करवायो।
२॥ धायभाई सजनी पुहलु धोकर भायो॥ भानु भुवन भई
भोर फागुकी खेलन चयो॥३॥ सासी सिर तें फूलेल तेल अंग
गमलकायो॥ हनुमान की प्रतिमा जानी तेल चढायो॥ ४
काजर सों मुख मांडी वेंदन कौ हूका बैठी नायो॥ फारे कलसहि
अवतमानो चपरा चपकायो॥५॥ गज गामनी गोछेनत।
किलेतु कमालपटयो॥ देह धरें मानो फागुन खेलन भजमें आ
यो॥६॥ कहुं चैदन कहुं वेंदन कहुं चोवा चरचायो॥ रतुवसीतजा
नों केसु कों कुसुम फुलेलन छायो॥७॥ काहु गुलाल नि माला काहुन
लगो पहरायो॥ मानाग ज घुटाना वृच गजगर हावनायो ८
रंग रहत वो हरी यन अंगराती हैं आवो॥ गुंजनको गहनो
जोहित सवपहरायो॥९॥ माधे तें मोहनी नें छाघ कोमाटा
ठोलायो॥ मानौ कुकाचेड धस्याम गिरिवरनु न्हवायो ॥१०॥
सोदिकोदि भई खोदि लागतेजल हरे रायो।

धुरत्वरणी इक आयो ॥११॥ लग त ईत डिग डिगायु ॰ अग लगायो
॥ मानुह सुघर संगीत तार पट ताल व जायो ॥१२॥ मयो जनेउ दू
र छूटि पाप न लपटायो ॥ मानहु चतुर चंद्रानी राह पर फहरायो
१३॥ चंच ॰ चल वैद मुखि चहुं दिस तें गुलगु लगु लचायो ॥ ली
यो रंगु गाये घेरी नरे नाना कहि आयो ॥१४॥ श्री राधा राधा क
हें ॰ मउ नो बोल सुनायो ॥ भरी भान की कुंवरी सरन हुं ति हारि
आयो ॥१५॥

॥ कीरत जू आय लागि ला
गि तातो ॰ पय पायो ॥ लो ल्यों खेलै तहोरी ब्रजपति ह्लू ले आयो
॥१७॥ सा चे स्वांग न साजें सवें समूह सुहायो ॥ तपा व्यास को
रूत धूत सुकदेव व नायो ॥१८॥ सनकादिक चारयो निगि
ज्यो संन्यास रूप हायो ॥ घर सत आया यो इउ स्वांग मउ नम तन चायो ॥
१९॥ ब्रज विधन कै विचा कि चमें लोट लोटायो ॥ चार वदन
को स्वांग भी चतुर चतुरानन आयो ॥२०॥ पंचानन पांचों

॥सुखसुंसंगीतबुजायो॥हरिकोहिए चावुरोसो नारदनाचन[illegible]यो
२१॥रिबिनैदकैलासहिजैत्र धरिगालवजायो॥ महादेवपट
तारदेतपटपट प्रभुपायो॥२२॥होहोहोहुँ ईरहे हांसिन हसायो
मायामेंमुनिहिरए नारदललहलहरायो॥ कामकामीनीनुपोस
वनको।चितचुरायो॥ललीताजोरीगाठिलालको।पाह[illegible]पोसु
॥२४॥गठिजोरेवृषभानरायसुजायरजुरायो॥नवलमाकेमो
रकोमारीमारबनायो॥२५॥ पीतपिछोरी तानिधूघिलोमेउ
पछायो॥होरीको।आहारीकेरिहलहोपरनायो॥२६॥फाउ
नकीगारिनकोसारना चोरूपगायो॥होरिनकोपकवानसुभा
भरिमोदिनखायो॥२७॥फूलीफागुकीफगुफबोजिनईहरखगा
यो॥जिनहरिघंनस्यामवासवरसानेपायो॥२८॥ २॥जोपानैद
रायघरमां लगनफगुं आई॥प्रभुदितकरहिकुलाहलगाव[illegible]हि
रिसुहाई॥१॥तिनमेंसुस्परधिकालागतपरमसुहाई॥अव
एकअजमनाआगेंदईहेपगाई॥२॥जसोमतिमाति

कछु मुलीमांनि माला सब न देखु मन भाई॥ मनि माला लेक हारीं मोह
न देखु देखाई॥४॥ बिनु देखे सुदर सुख नाहिं नपरत रहाई॥ मात
पिता सुत गृह लोगन तजि बिख माई॥५॥ सुनि के प्रेम बचन हा
मोहर हई दिखाई॥ घर मेले पनस्याम सजा मारि मो मिनि स्या
ई॥६॥ नख सिख स्यंहर रूप की मानो स्याव न अधिकाई॥ ह
रि ब्रजवधु निहारि कै निधि [illegible] मानो पाई॥७॥ अरगजा
चंदन बंदन चंदन चहुं दीस तेल लै धाई॥ भरति भावै तै लालहि
करनि कनक पिचकाई॥८॥ मीडि नक रहिं कपोलन एकलै
काजर आई॥ हरखपरस पीयु अति सप स्के हरी सब लपटाई
॥९॥ यह लीला अति ललीत सुं [illegible] तो नैद ग्वाना मैं नमाई॥ ग्वा
लोगन छुंबन रसन न हि स्कर रूत सुरकाई॥१०॥ कुच भुज बिच
की चमची अति श्रम की रूप टाई॥ अबै चर स्तुपट जोरी रीरु
सकुचित सिंगरनानई॥११॥ देवति सउ भजसं पति को उपीवतन
अघाई॥ जस मतिउ डी लसु हित सब हनकी करत बडाई॥
॥१२॥ परदेकु लै आम्रखण चो ला हीय मैणाई॥ जस

मति अति प्रफुलित भई ॥ कुंवरी सब पहराई ॥ १३ ॥ ईहमेरे आंगन
[redacted] म ह आगो भाई ॥ निकसी ईत आली सजी यो ले ऐसो
हनराई ॥ १४ ॥ ईह ब्रजमाधो धरा सर हे नित नै द्वै हाई
नैन भवन सुख भयो लाल की किरत गाई ॥ १५ ॥ ३ ॥ ॥
बरसाने की गोपी फगुवा मांगन आई ॥ कीयो जुहार नंद जु ति
तर भुवन जु लाई ॥ १ ॥ एक गौं नाचत एक गावत एक ब
जावत ताल धरी ॥ कहे मोहन रायदुरि हे मैया देत न तगा
री ॥ २ ॥ अरघ तदे ते तनै ईरानि भवनि जभाग हमारे ॥
प्रीतम सजन कूलवधु हैरवे हरसत ठजारे ॥ ३ ॥ सुन कु
कुंवर मेरा राधे अवहिं जिन मुख मांडो ॥ जेवत स्याम
सखन संग जिनी पिच्ची काई छाडो ॥ ४ ॥ केसर बोहोत
अरगजा छिल मोहन पर डारो ॥ सीतल गे कोमल त
न तुम हि जियेन बिचारो ॥ ५ ॥ अंबर उपर हेर हि होड
मैया तन तोटि ॥ बरजत भरत कुं मकुं मानी रद्द तन
मन की कोटि ॥ ६ ॥ कहत रोहनी नसो हा आली जो लत आगे

जावभरो ब्रजराजे मोहन नहीं जे मागे ॥७॥ मोहन मांगें पै पतो ही
न हम हम हूं दे है हो ॥ जाप कुंवर के पलटे जो चाहौ सो लेहो ॥८॥
सुबल सुबाहु सुनत लखि चातक ज्यों ॥ कंचन माट भरे दधि
लेगो पिन बिरन्नाए ॥९॥ ग्वालन गो पै सुख सब हम लत है है कि
लकारी ॥ दूध लायो भीतर तें लछि रकी सब ब्रजनारी ॥१०॥ जो
सुख सोभा बाढि कहत का हा कहि आवो ॥ ललीता कुंवरी
कुंवर को अंबर गहि नाहि ल्यावे ॥११॥ भए निरंतर निति
प्रति रतिवंत भवन बाला ॥ जि दिपरवत जालिन में हार डो
रमा विसाला ॥१२॥ प्रभु कुंवर ब्रजवासी घट कों नको मा
नें ॥ कहत में पा मेघा जे न जाप भरो वृषभानै ॥१३॥४
॥ हो हो बोलत डोलत मोहन खेलत होरी ॥ सुरधुनि सुनी
ब्रज हुहूरी घर घर तें सब होरी ॥१॥ नागरी गुन आगरी रस
सागर नेश लीली री ॥ तिन में सरस कहत लिलाजित राधागोरी
॥२॥ उतवालि मोहन गोहन जाप कुंवर लब कोरी ॥ सब हिं सं नत
नख मेव सुख न सत नोरि ॥३॥ ताल मृदंग उपंग चंग वे सा उफ गो

री॥आनकहूंउनीमहूननेहिनाहिनधनिघोरी॥४॥वैहनवें
हूनचुकाभाट भाटिनिनेझोरी॥भरतिभाव लेजाल हिमुखल
पदावतरोरि॥५॥मगमहमलेयकस्रकेडिसलकेसरघो
रि॥अरगजालोंधेलिवसुगंधुकोटि गजखोरी॥६॥जाजगई
सर्वभाजसगावेंगादिसुभोरी॥इतयाधालजीताउततेंचलिमो
हनजोरी॥७॥भोमाचंडभगावलिजुपकरेभादिकोरी॥पक
रिपेंचमसोंआईकटिकझोरझोरी॥८॥कुचकपोलकचप
रसतेतजिआरजकीचोरी॥गहिगहिगिरिधरश्रीराधाजु
भुजनलवोहमरोरी॥९॥छिनीमुरलीमालाअरुकटिपात
पीछोरी॥गोपानकोंपहरायगहेंगिरिधरनजतोरी॥१०॥
वेसलायकेंपीहाघवहेरंगभाजनेकोरी॥धमारपरीसुरिजा
ईटेकेंसवब्रजकीपोरी॥११॥ललिकोवालविगोकेंकोऊव
रजोनरहोरी॥स्वांगसवेंगुनचावेंनपावेंजानिगहोरी॥१२
नैनआंजिमुखमांजिस्यामलिरगुंछिउरोरी॥होहोहो
हिउठवतलालपीछोरी॥१३॥मोहनकोंपहरावत

खनछोरी॥ काम्यो आपवनायपागवधिलजिडोरी॥१४॥ मूलि
र ध्योसवग्गो फूलैंचौंन लगीरजोरी॥ लपटैलनतनसुखआलि
अंगसैंघहीलनोरी॥१५॥ रच्यो रसखेल फागु जुगल वरके नीक
सोरी॥ सतत माधौ मनमद न गोपाल न डर होरी॥१६॥ ५॥
उंदरस्याम कुजान सारो मनि [illegible] इहकुको हापेंजारिजु॥ वडेलो
गके आगनवरनत सकुच होत जीय भारीजु॥१॥ को कहि
सके पिता कौ निरलें जाति पांति को उजानेजु॥ जाके जीयजै
सी आवतु है तैसी भांति वषानेजु॥ या माया कुटिलन हितें
न चितवत कौन बडाई पाई जु॥ उंहि चंवलसवजगतवियो
ओजहां तहां भई हसाईजु॥३॥ तुम मउलि प्रगट होय बारेतें
कौन भलाई कीनीजु॥ सुकवधू उतमे [illegible] जेन ला एक लेइ प्र
धमन कोहीनीजु॥४॥ वसिदसमास गर्भ माता के उनी आसक
रिजा एजु॥ सो घर छांडि जिनि के लालच के गए सुत पराएजु॥
॥५॥ बालेटे हि ते जो कुल गोपीन सुने भुवन न डोटेजु॥ केनि 10
सीकै तलहांपे हिंहैं कलोंहधि हधि के भाजन चाटेजु॥६॥

॥आपक हाय धनि के ठोटा भात रूपन लों माग्यो जु॥ मान भे
गफिरि दुजे ता छे नें कुसींको चन लाग्यो जु॥७॥ जरि काई न
तें गोपिन के लुंम सु नें भुव न ठोरु जु॥ यमुना नात गोप
कंन्यान के निपट निलज पट चोरे जु॥८॥ सब कोको उर
हत वालो बरबि खेर ल अभ्रमो लेजु॥ गरे मुंजा सिर मोर पर
वागापन के सं ग डोलेजु॥९॥ वेनु बजा त विलास कोए
व बलो लेप राई नारी जु॥ लेवा तें मुनि रान छू भाने कार्ह
संक विसारी जु॥१०॥ राज सभा को बैठन हारे को न सिषा
तं में घना चेजु॥ अन्जन हित राजा मारग में कुमेव जा दे रव
नरा चेजु॥११॥ लैले भ नें राजन की कन्या पे धो कौन भलाई जि
सते भांमा जुगो त में आहि उलरी चाल चलाई जु॥१२॥ अ
घुनी भुभद्रा आप हि ब्याल का हरी अर्जुन सी ग भजाई जु॥
भोजन करहा सा सक तके घर पाहो जात लजाई जु॥
वेन पिता की सा सक हावें नें कुढुंना जन आ।

परहीनीज्जुनिधातोऽप्रखिललोकमकुराईज्जु॥१४॥मोहन
वैसोकरनचटचेटकजेम्रमैत्रसवजानेज्जु॥ताहितेत्तुमम
लैंभलैंकहिमलैंभलेंजगजानेंज्जु॥१५॥वरनोकहांज
थामतिमेरीवेहोपारऽनपावेज्जु॥द्दासजगनाथप्रभुकी
माहिमागुनगावतउरऽग्रावेज्जु॥१६॥६॥ ॥मनवमेरेको
ईछापुरीऽप्रायोमासफागुनकोनीको॥लाजसकुचित
जिसाकनकीहोरीगस्योकरस्कूकरपीयको॥१॥ऽअवमे
रोकोकुकहाकरेगोयहतोहेंऽप्रासरऽहोरीकोमेनभरी
मुरत्त ब्रजपतिकोदेखेदुखमीटेगोजीयको॥२॥७॥रागतेजस
री॥ ॥रंगीलोहोयुविासेनेनारसभरे॥नेनानाचतमुदित
ऽप्रनेन्दे॥ बंखनरीटसेमोहामत्तहोऊकेसेंद्वहतनघे
रें॥१॥स्यामसेतनदातेरंगरंगमानोचीत्राचितेरें
॥कुंजनद्दासप्रभुगोवर्द्धनधरस्यामसुभगतन
हेरें॥२॥८॥ ॥

छाडि दे कुयह ग्वालि प्यारे कमल नयन मनमोहना ॥ आवति जा
त सदा रहि भोर कनुहन देखी रीत ॥ मन होनि अवन निसुनि
स निकसें होय प्रतीति ॥१॥ गोहि घिरा पडंठि भोर हिः मारग रे
कत आई हों ॥ चोहरि चिवानक सीस तेमटु कांपि देत उदाई ॥२॥
एसो तुम कुन तुजि यें अरक सैं रहत गहिवाहि ॥ मात पीता भैया
स नें सामि परेवन माहि ॥३॥ हसत हिमें मन मुसकत हो कहि
कहि मीठे बोल ॥ सत मित ओं पाई पै यह गोरस नि मोल ॥४
तुलसी जप्रभु चीवल करि खियो चितवनि नैन विसाल ॥
रति जोरि मिसि दान के गोवर्द्धन धर लाल ॥५॥९॥ ॥ होरी
के खील रभावत ये पाहि आनन है हों तुसें ई आजे वारे वनी आए जा
गे भाग्य हमारे ॥१॥ नेनरि नरि भरि फगुवो हौं लेहो ॥ गोरा चं
दन अरु अरगजा के सरके वसन ह्वै हो ॥ जुअग स्वामी सो क
हत स्वामि निमिलित नतप त जुगाहे हो ॥२॥१०॥ ॥

परहीनीज्जु निधा तो ऽ अखिल लोक ग कुराई ज्जु ॥१४॥ मोहन
वैसी करन चरचेटक जैम मै त्रसव जाने ज्जु ॥ ताहि ते तुमम
लैं भले कहि भले भले जगजानें ज्जु ॥१५॥ वरनो कहा ज
थामति मेरी विद्दो पार ऽ न पावै ज्जु ॥ हास जगजार प्रभु की
महिमा गुन गावत उर ऽ आवै ज्जु ॥१६॥ ६॥ ॥मनवमेरेकी
इछा पुरी ऽ आयो मास फागुण को नीको ॥ लाजसकुचित
जिसा सुनन की होरी गरयो करस्सुकर पीयको ॥१॥ अवमे
रो कोउ कहा करे गो यह तो है ऽ अो सर ऽ होरी॥ को मेन भरी
मुरत अजपति को देखे दुखमीटे गो पीय को ॥२॥ ७॥ रागतेजस
री॥ ॥रंगीलो हो अविनासेन नारस भरे ॥ नेनाना चतमुदित
ऽ प्रनेन्दरे ॥ ध सेज री टसे माहा मत होउं के से हरहत न घे
रे ॥१॥ स्याम सेतन ता ते रंग रंग मानो चीत्र चितेरे
॥ कुंन न हास प्र भजो व है न धर स्याम सुभगतन
हेरे ॥२॥ ८॥ ॥

छाडिदैकुयहबानिप्यारेकमलनयनमनमोहना॥आवतिजा
तसदारहिऔरकहुहनदेखीरीत॥अनहोनिश्रवननिसुनि
स्तनिकैसेहोयप्रतीति॥१॥गीड़िघरीयउठिभोरहिमाखनरो
कलआईहों॥चोहरिचानकसासतेमटुकाहीदैतढुराई॥२॥
एसीलमकुनतुझियेंअरकनैंरहतगहिबाहि॥मातपीताभैया
सनेंसाझिपरेवनमाहि॥३॥हसतहिमैंमनमुसकतहोकहि
कहिमीठेबोल॥सतमतक्योपाईयेयहगोरसनिमोल॥४
तुलतुलसुजनप्रभुचीवतकरिखियोचितवनिनैनविसाल॥
रतिजोरिमिसिदानकेगोवर्द्धनधरलाल॥५॥९॥ ॥होरी
केखीलारभावतपोहिजाननदैहोंतैसेईनागेबारोबनीआएजा
गेभाग्यहमारे॥१॥नैनरिभरिभरिफगुवाहोंलैहों॥चोनाचं
दनऔरअरगजाकेसरकेलसन्हवैहो॥कुअम्यस्वामीसोक
हतस्वामिनिमिलितनतपतबुझाईहो॥२॥१०॥ ॥

॥माई री वरसाने तें इनि ई गाम गोहि तहें ब भोन को आयो ॥ नं
द सुवन कौ वै भवन अंग क्रत निरखी परम सरूप पायो री माई
॥१॥ वाय धो वाय कें जल अंग च वायो घेरि आई ब्रज नारि॥
वाप लाग नों कहत फूनि फूनि गावत होरि की गारी॥२॥
एक ति चोवा आगे पानि मर्वो मन न के मुख लपटायो॥
एक कपोल गम रोरत मीडत कर तन अपनो भायो॥३॥
एक घर बैसी घेरि अरगजा माथें लेग हें नायो॥ एक तौ पक
रि फेटफ कसोरति एक लोक रपायो॥४॥ एक मोटी या
जे त चोर ची त एक तो तारी वजावे॥ एक तौ पकरी पोति
या फ टक तो हसि हसि बांक च ढावें॥५॥ त क अंग चान
क के पाछें तें आंखिन मेरई गुलाल॥ मीडत दइ गयो क
हत तुजाई हुं मोको पास्यो वाली॥६॥ एक निवासा खारी
छांछि लेमाथें ते जहां नारी॥ इतय हत एक डले ये अ

गनितवांभनकीनकसाई ॥७॥ डिग डिगा लमारजा
उकोचितवमोहि तानि ॥ हा हा हि हास्यो तुमजीतिधा
डिदेहुजाजमानि ॥८॥ वएकक हे का हि पकरिपटिकि
पाकेस्रवननिकीसुखदीजे ॥ एक कहे हो हा हा नाके
घरी एक हसिलीजे ॥९॥ हसपरस्पर सवैब्रजनारी
सवैहीनयहवीचारी ॥ इतनीकहत अ थाई तेंतवआ
एकुंजविहारी ॥१०॥ जो देखे तो भावन को एघेरिरहि
ब्रजबाला ॥ मुखपटुकादैनिरखिनिरखिमुसमुसकांनि
नैदके लाला ॥११॥ भलिमानसहो भलो आदरकीयोभ
लो भोजनकरवायो ॥ कनउकुंवरजुसगरी उगाईनाना
भांतिनचायो ॥१२॥ एकनिगुलगुला एगुलचाएएक
निकनिकोहमीकादीनो ॥ जानतहो अपने मनमे जैस
पउनाईकीनो ॥१३॥ कियेकीचायमेरैतईछुहरीपा

पीठ कगइयाति॥ इन नर पति तें होउ रूपत हो धक कर
दुकर करे छाति॥१४॥ जल ले जीता पक पर रूग इकाबोस्या
मस्याम कहि टेस्यो॥ पांडे जूकी जंलोत पीठ पर लोल
क मल ल करपे केस्यो १५॥ एकनि मो कों ले न सेन है नेननि
रंभौं जन कालो॥ एक ति मन न हारि लीयो चित्त तें चित
आंखिन मे रूका ही नो॥१६॥ कह्यो स्याम ज अज हो
व कलो ह मल तु मारे वो ह लक्ष्य पाये है॥ जो मागो सो
ई तुम को मन मान्यो फगुवा हो दे ह्वो॥१७॥ हा तुलम तो गति उ
दार हो तुम सें तुम ही दानी॥ जानि ज्यो जो धर्मे जग जान न चौ
र हर न स्तुति जानि॥१८॥ जो सा स्कर का दया की जे तो ह लखा
य छुडावो॥ तो ह म छाडें पांडे कों पांडे ना वे तुम गावो॥१९॥
काहे न पाडें गुन जगत करो हरी सेन है ई दृग मारी॥
मज न भयो त व ना चे ले ज्यो गावत हो हो होरी॥२०॥

॥बाधलगो ठिवेर फू लाई टेढी पाग बनाई॥ आधी कुवार
बोधवा पांडेउ अद्भुत फागुन चाई॥१२॥ जा निजु जन
न बो लोकि कें दुटि दे खत नें दसना॥ निरखि निरखि ने
नननि कौतुहल मन नहीं मन मुसकानी॥२२॥ इंद्रादि
कें भूलाहिकु पसीक रसन न सव रहे लुभाई॥ हमन भए
ब्रजे चेनि हरि हरि व लोमन न पाछिताई॥१२३॥ मन
दी विमाभी र ब्रजे उर में सुर कुसुम बरखावें॥ निरख
निरखनें नानि कल्हूहल सुर विन तामें गल गावें॥२४॥
धन बांभनि धन्य धम्न नें इकुल धधन्य धन्य भे
अकी नानारि॥ धन्य धन्य ब्रज के ब्रजवासी स्याम घनव
हारि॥२५॥१३॥ माई री खंभधा नें तें वां भन आयो भरि
होरि कीगाबि व भरुवा॥ घेरि लियो घर मांजु लुगाई
न सुउ लगाइ न कीच॥१॥ काहु जई ललिता पपूंद नीका हु

कीयो कजरारो सिंठीपी ठोगो छुनलपटोई॥ वो भनको क
हा रचारे॥२॥ कांहु गुहै फलगो पहस्रो काहु गुलरी माला
लारी है रु महिरु नजावे हसी हसी ब्रजकी बाला॥३॥ जसोमति
लोपो वचीय बापरे निर्मल नीर न्हवायो॥ नए वसन पह
रापगुदीतें लेरु लगो उसरायो॥४॥ लवर वाभवन घरक
के गो ठो पहरे ऊजरे कपरा॥ एक ग्वाली नी ग्राए उलेंडूरी
सरसी चु भारि कपरा॥५॥ देखि वि मललगपो चेतुर खेगम
लमलै यह गावे॥ प्रति रिवलेबार मुध बापाडे खेले हास
खपावे॥६॥ परकु लोय व दुन टेठो करे विफस्यो रवा भन
नचे॥७॥ गहनें औ पमारि दे भरुवा हमसो फगुवा चाहे॥
काहु कानवपसकें गुलची काहु एगी वाहे॥८॥ जानि सास
रको वहवाभन मोहन केछुन कहे हो॥ क्रस जीव लच्छिस
पकेग्रमु हरि वकुर्लिसकु च्छिहलसिरहे हो॥९॥ १२॥

बाजीवर आगे ठैसा वरे है।। पामें जो जीया को कुनर कोंन ।। छ
०।। शंक शाह दुनी सकनि जित तीत तेंघारि आई अजन ना
री ।। वहन नी जो ककुंवर रास धे कौंन ठो है आसन मारि
।।१।। हसि उद्धत अश्व खभोंनुं नें दुनी राव रजतर है हु ।। को
न कारन रूपत वसी को बनन जी जैहे पजहा ।।२।। को न दि
शा लेतु मग आए राव लकाहा को मन सा जाए ।। आउन
साधि उनिकै वेठे देखन देश वताय ।।३।। सिजी पन्नव सु
तिन व दुवा खर्चै दुनको खोरी ।। मेरे जी पएसी आवत
हैं कथा अविसास्यो है गोरि ।।४।। सुकरी विभूत नह ई राथा
को अब चलै हैं बाजीवर जारी ।। मन हरि लीनी तन कवित
व नि मे गोह नलागी कुं धारि ५ नगर नगर प्रति भव
न भवन प्रति निलिहीन फिरत उदास ।। नैन चकोर

राधा के हरि हर सब की है प्यास ॥६॥ रतन जतन करि म
न मो ल्यो है निरखन नैन की कोर ॥ जऊँ लाय जीवन च
न माधो भांत लागी होउ जोर ॥७॥ १३॥ ॥ संकर गाहे
री खेलें सांवरो ॥ श्री वृंदावन मास संकर जि ॥ ब्रज की न
वल नव नागरि ॥ घिरि आई सब साज ॥१॥ सरस बसं
त सुहावनो हरि नु आई संक रहे न ॥ माते मधुपा मधु
पानी को कोल कलरव वें न ॥२॥ फूले कमल कलिंद
जा के संकुसम संकर ग ॥ चंपक वेकुल गुलाब के धसोधे
सिंधु तरंग ॥३॥ संवलेस कवाकु श्री राम सो पठ ए सखी
सीवा ए ॥ बाजे साजे नोरंगीन वरं जीली न मोल मठाये ४
नरसुर रुऊं फ बांसुरि भेर नी को भर हर ॥ फूकी न परी
हुकि केउ चिगा ई आति हरि ॥५॥ अबाज को मे म कहा के

होंकेसरसोघटप्रुटिकेचनकीपाचकांईयामारतहेत
किउटि॥६॥अाधिअधिकअविरकीचोवामचीकीव
फलोंके रेलफूलेनकीचैदुनवैरनवीचा॥७॥अजकी
नवलअनागरीकेदरीसुरदार॥खेलनआईसवेंघे
रिश्रीराधाकेवंदरवार॥८॥फूलदरागहेंहाथसो
मारतवांहउठाय॥अेचलचैचलफिररहेपनेन
नैनेननचाय॥९॥श्रीराधाकीपियसखीललीताओ
लउभाय॥छूलकटिछुटेहोछिराकिकेंहसिभाजी
उहकाय॥१०॥नारीकोंभेख वनायकेंपरयोसखासिखा
य॥अातिअधिककहावती ललीता मेंहीजाय॥११॥
जेउककीफूलकीहोनीश्रीराधाहाथ॥आईअचानके
अोचकातांकिमारेहाथ॥१२॥अजकीवाचीसाकरीउतजमुना
कोघाट॥वलिदाउकोंगोजकेहोनेंगाठेंकपाट॥ २३॥

हलधर हे तुम महाबलि सां चैं तुम बली रासि॥ बलि को बलि जु कहा भ
यो॥ गहि बांधे रजपाल॥१४॥ नैननि आंजन अंजि कें सोधे उ
पर ठाढि॥ पांय परनि ब्रार पर हुये रसिकी रासि बीचारि॥१५॥ फिरि भा
जी सब हैं इग आबन दीने औरि॥ मई न उपाय जु जाय कें गहि ला
ई बिर जोरि॥१६॥ गिरि धारी को कर बांम सौं बर मारयौ गहि पाय॥
तिन को भार कहा भयो ललीता लैति उठाय॥१७॥ घर में घेर स
बें चली श्री राधा को संग लेत॥ हूं उज्जन सबे चपि जाय के नें
नानि को करब सहेत॥१८॥ तब ललीता हसि करयो श्री राधा
को सिर नाय॥ नीलांबर सौं ठापि कें मुरु सु घो मुखि काय॥१९॥
उत श्री दामा अन गरोई तब लीला अति नोनें॥ बीच बिसारव
सा बिई मुरली मांग ति औ लें॥२०॥ सब नाबी हैं बभांन के मई
न सब बाल को नैन ब॥ स्याम मनते को मिलि नी पाव सपकी नो सब
गो व॥२१॥ परयो मइ उन्मानसी गही ठी ठ महा मइ जोत॥

।छिनु ऑरें छिनु ऑरें हि छ्याकयो खेलत छैल॥२२॥मदन
मदन गोपाल कों हलधर कों लेआउ॥श्रीराधा कि दिसजा
य कें चायो हैह सियाऊ॥२३॥श्रीरमा हंति यों कह्यो मेरो ई
मय॥ने कुंह मारे स्याम कों नेननि कों मधपाई॥२४॥भाग स
गसवें वस जो खेलत फागु विनोद॥राधा माधो वैठार ही सजप
नी की गोद॥२५॥म्रुखन हैंत जसोमति पोंची पांन छवैल॥टा
उ टीक टिकाव लि हार हमेल॥२६॥श्री विठ्ठल नैं पद पभ नो
पवर्नें ईरेण न ताप॥छित स्वामि गिरिधर मिले मेटे तन के ता
प॥छुटी मो॥२७॥ ॥९४॥ ॥

राग --- माघशुक्लनवमीजबआई॥सुरनरमुनिसबभए
हरखाई॥श्रीरणछोडपूरणपुरुषोतम॥सच्चितघनलीला
कारपरमानंद॥साकारपरमानंदप्रभुजबप्रगटहोगआ
नंदभयो॥शब्दजयजयहोतचहुंदिशआनंदसिंधुमैंरी
को॥आदपुरुषलीलादिखाईनंदनंदनजेकरी॥श्रीवदने
अवतारपूरणभक्तहेतनरवपुधरी॥
जनकेगुनकछुकहतनआवे॥ब्र सवरे
सनकादिकजाकोध्यानं
सुरवरटलसदाहैं॥सह
पायोपारनुअजको॥नरदेहमा
अपनोकीयो॥पर्यटनकी
है बीकारणे॥कर्णदक्षिणपै घ

करुणामय श्रीरण छोड़ प्यारे ॥ करत कृपा सब दोष निवारे ॥
सरणागत सब जीव उधारे ॥ नो दोष्यार कों तुच्छ कर डारे ।ति
नो ध्यारें तुच्छ करि के अधिक ॥ आनंद सब दीयो ॥ महाप
तित सब जीव देखे रूप बहु विध प्रगटीयो ॥ नाम रूप विभे
द कर के जगत में पउधारीयो ॥ सदानंद लोकार शा शिसु
ख देखत ही मन दुःख गयो ॥ ३ ॥ सत युग श्रीव धर्म अर्ध
श प्रगटे ॥ मत्स्य कच्छ बाराह नरहरि भये ॥ भक्त हेत अ
वतार भयो जब ॥ सतयुग कार्य कीनो ते ही ॥ छिन सब ॥
कार्य कीनो मे ही ॥ छिन में रूप अद्भुत धारीयो ॥ वेद नायर
स सुधा दीनो धरणी मान वढाईयो ॥ भक्त हित नरहरि
प्रगटे दैत्य दंदय विदारीयो ॥ भक्त माहात्म्य प्रगट की
नो भक्त दोष निवारीयो ॥ ४ ॥ त्रेता युग द्विज वर वपु धा
र्यो ॥ बलि दा जाकों रसातल पठायो ॥ परसुराम
रूप भार उतार्यो ॥ बार इक्कीस दुष्ट न ही राख्यो ॥

रामस्वरूप कुंवरा सुखमास्यो एकपत्नी व्रत धास्यो॥ नर्मीद पुरुषो
त्तम लीला भार एक छोड प्यारो अवतस्यो॥ अवतार लेके रूप ध
रि करै भक्त वांछित पूरीयो॥ माया वादन शाय करके ब्रह्म को
स्थापित कीयो॥ ५॥ द्वापुर में लीला वपु धास्यो। उभयस्वरूप ध
र जगत उधास्यो॥ संकर्षण और कृष्ण रूप धरि॥ कंसादि
क सब दैत्य सिंहारे जब॥ दैत्यको संहार करके अधिक सुख
धरणी दीयो॥ कोमल नैवर एप्रतापना हास्य भू मंडलमें
प्रगटीयो॥ अबनी पें पद पधरा रख्यो। भक्त कार्य विचारी
यो॥ श्रीकृष्ण संकर्षण अज रहुव भक्त सुधारस पाई
यो॥ ६॥ कलियुग श्री पूरण पुरुषोत्तम॥ प्रकटे श्री वल्लभ
रूप अनूपम॥ एक रूप बहु रूप दिखाए॥ मायावाद सब दु
र नशाए॥ शास्त्र सब को देख निर्णय कीयो माया मत खंडत
शब्द जय जय होत चहुं दिस भक्ति पथ भुवमंडलमें॥ ताको
स्वामी रसा छोड पूरण ब्रह्म सुख हित प्रगटीयो॥ दृष्टि सें सब

दोषनष्टायें भक्तमाक्रूपादि पाजीयो॥ ७॥ श्रीवल्लभकुल आदि सनातन॥ ब्रह्म शिवादिकरटतनिशि दिन॥ जाकेचरणकमल अतिसुदूर। जसछायोअति अवनीमंडलपर॥ श्रीगोकुल जस इनधरणीमंडलमें अपनेोकार्यसारीयो॥ पुष्टिपथकोउद्धार के भक्तिपथविस्तारीयो॥ कृपाकरके शरणलेके दोषसब दूरी कीयो॥ पंचदोषनरहे एकोपुछिसों निवेदनको यो॥ ८॥ अष्ट पदी चित्तमेजो ईधारे। सुनेसुनावेजो चित्तधरलावे। श्री रणछोडचरणचित्तलावे॥ एको क्षणनहीउने बिसरावे॥ उनीकोंजवचित्तधार्यो दुःखगयोसवत्तेही सत्ते॥ भक्तहितअ वतारधरकेकार्यकीनो वाहीसमें॥ यथारुचिकछुवर्णआये जानीयेयहितासहे। उद्देशसनिरोधलीलापहीकलनको आसहे॥ ९॥ राग ---- आजुलाग्योआनंदमबधर अ ज भयोआनंद। श्रीरणछोड प्रगट पुरुषोत्तम सच्चिदानंद

रामस्वरूप कुजनरासुर मार्यो एकपत्नीव्रत धर्यो॥ मर्यादा पुरुषो
त्तम लीला प्रचारण छोड पधारे अवतर्यो॥ अवतार लेके स्वरूप ध
रि करि भक्तकों हित पूरीयो॥ मायावादन शाय करके ब्रह्मकों
स्थापित कीयो॥५॥ वापुर में लीला वपु धार्यो। उत्तम स्वरूप ध
र जगत उधार्यो॥ संकर्षण और कृष्ण स्वरूप धरि॥ कैसा दि
क सब दैत्यासिं हारे जबे॥ दैत्यको संहार करके अधिक सुख
धरणी दीयो॥ कोमलनवरण प्रतापमाहात्म्य भूमंडल में
प्रगटीयो॥ अवनी पें पद्मपधार्यो भक्तकार्य विचारी
यो॥ श्रीकृष्ण संकर्षण ब्रजराज हुव भक्त सुधारस पाई
यो॥ ६॥ कलियुग श्रीपुरुषोत्तम॥ प्रकटे श्रीवल्लभ
स्वरूप अनूपम॥ एक स्वरूप बहु स्वरूप दिखाए॥ मायावाद सब तु
रत नशाए॥ शास्त्र सबको देख निर्णय कीयो मायामत खंडन
शाद्ध जयजय होत चहुं दिस भक्तिपथ भुवमंडल में॥ लाखा
रणी रण छोड पुरुषोत्तम ब्रह्मसुख हित प्रगटीयो॥ दृष्टि सें सब

दीवनप्रगाये भक्त पाकुंपद पावनी ये॥ [illegible]
सनातन॥ ब्रह्म शिवादिक ररटत निशि [illegible]
जप्रतिसुंदर। जसछायो प्रति भवनीमें [illegible]
सद्दनधरणिमें दृष्ट अपनो कार्य सारीयो॥ [illegible]
के भक्तिपथ विस्तारीयो॥ कृपाकरके शरण लेके [illegible]
कीयो॥ पंच दीवनर हे एको पुछिसों निवेदनकीयो॥ [illegible]
पदी चित्तमेजो ई धारे। सुने सुनावे जो चित्त धरध्यावे। [illegible]
रण छोड चरण चित्त लावे॥ एको चोपाई हे उने निसरा दे॥
उनीको जब चित्त धार्यो दुःखगयो सबदेह। [illegible]॥ भक्त [illegible]
वतार धरके कार्य कीनो वाहे। [illegible] ध्यानचिकष्ट वर्णं आये
जानीयेप्य हिदासहे। उद्दै हाल निरे [illegible] कउनको।
आसहे॥ ५॥ राग ---- आनु नये [illegible] चार आ।
जन्म यो आनंद गआर रणछोड [illegible]

नेंदकंद ॥१॥ जगतमें उतपर तो मत बाजे कुसुम निवर्षत कंद ॥
जाशव को नितमें जालगा वें प्रगटे हरणौ [redacted] ॥२॥ शिव सनकादिक
करत तप अहनिश कोई हरणी वृंदा जगतात त प्रवतार जु
धरके कीयो मायामें लरवे ३ ॥ ३ ॥ शेवक सब हरखित मन मन
में गी वे तगीत सुख्य दे ॥ नाचत कूदत कर तब धाई मनमेव
कु आनंद ॥४॥ प्रगट होय सब अपने कोने दो बन वा रवे
दे ॥ उदे दास चरनन को आस निज प्रतिपी बेमकरें दे ॥५॥
राग ---- मा धकु नवमी जय आई घर घर बजत बधाई
श्री रघु कोई हरणी पुरबो तब प्रगटे है सुखदाई ॥१॥ श्री जोव
देनवि सुनीत वेदकी धुनी करवाई ॥ विप्र आसीस देत सब
मिलके यह सुलति जुबनराई ॥२॥ विप्र बचन सुनत हो मे
हे में कदो सब जन मन भाई ॥ जो मांगे सोई सोई पाए हैत गे
वेकुंन ताई ॥ ३ ॥ नाचत नर गावत नट तब धाई है बिन

जपसवमाई॥ जो सुत है ब्योनहै यसो ए। सोई मीर एक्षोडराई॥४॥ पुष्प ब्रह्म साकार प्रगट हुय जा या वादन जोई॥ उहे हास चर पानकी आसा रह तसहीअपधिकाई॥५॥ रागमलार॥ झूले माई मद नमोहन पियप्यारी॥ ब्रजबनिता सब हरख झुलावें जोटा देत सुखकारी॥१॥ दादुरमोर पपैया बोलत घ न दामिनी अनुहारी॥ रमकि झमकि बुंदन बरखत हैं प वन चलत हितकारी॥२॥ ललितादिक सब नाचत गावत देत परस्पर तारी॥ मदनमोहन पियाके संग झूलत श्री वृषभानदुलारी॥३॥ यह सोभा कछुकह तन आवत भई मूर्ति हरि यारी॥ मधुर मधुर बोल त पिय प्यारी घनगर्जत अति भारी॥४॥ रागमला

र होउ मिलि गावत हैं समाज सब बारी॥ बलि बलि जाउं मधु
र सोंदि का दासको दास बलिहारी॥ ५॥ राग मारू॥ रंग हिं
डोरना हो झूलैं श्री ब्रषभान कुमार॥ आसपास ब्रजबानि
ता गढी ब्यारो है रंग अपार॥ १॥ ब्रज जुवती जु नीव
ले गावत सब जसो लै सृंगार॥ हरख निरख मुख देखल
पियके प्रेम मुदित ब्रज जीवन॥ २॥ वह सुख शोभाक
हत न आवत बोली सकल ब्रज नारि॥ मधुर मधु
र बोलत पिय प्यारी री लाल नंदकुमार॥ ३॥ मंद मं
द मुसकात हैं होउ मिलि हंसत बीच न ब्रज नारि॥
बलि बलि जाउं पिय प्यारी की दासको दास बलि
हारि॥ ४॥

मलार॥ सुंदर नवल हिंडोरे झुलत दोउ॥ स्याम बरन तन निरखि
कसित मालि कुवर वरन तन गोरे॥१॥ नीलांबर पीतांबर की
छबि घन दामिनी की घोरे॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज
बिहारी मुसकनि थोरे थोरे॥२॥ राग मालव॥ मदनमोह
न व्रषभानलली मिलझूलत सुरंग हिंडोरे॥ सोहत सी
स एठ माफेटा सरस कसुंभी रंग बोरे॥१॥ कटि राजत
पट पीत स्याम के [illegible] सुरंग तन गोरे॥ अंस निबाहु
धरे जु परस्पर चितवपल द्रगकोरे॥२॥ थंभन ला
गि झुलावति गावति ब्रज तरुनि चहुं ओरें॥ रतिनाय
क ब्रजपति की छबि परि रीझि डारत त्रन तोरे॥३॥
मालव॥ नवल लाल गोवर्द्धनधारी झुलत सुरं हिं
डोरे॥ संग लीये व्रषभान नंदनी रमक

तेसीयनवलनवलव्रजसुंदरी आईहिं कुंडनजोरें ॥ निरखनिरखवेकमलनवदनपर हसतसवेसुखमोरे ॥ २॥ वरनवरनपेहरेतनसारी नवलनागरंगवोरे ॥ श्रीविठलगिरिधरलमनमोहिल चपलनेनकीकोरे ॥ ३॥ मालवा ॥ श्रीविठलरायलालगिरिधरको कुलवनसुरंगाहिंडोरे ॥ सुंदरवदननिहारतफिरफिर चितवनिनेनाजोरे ॥ १॥ अलिसोनितसिरपागसवारी केशरकेरंगवोरें ॥ करमेकूलंओरचिबुकवदनपरझलकतथोरथोरें ॥ २॥ तेसीयसंगराधिकारानी छविलागततनगोरे ॥ श्रीविठलगिरिधरकूलतजवजुवतिनकोचितचोरें ॥ ३॥ राग---- ॥ मदनमोहनलीगतघेकूलतरंगव्योअतिभारी॥ गजवनितावलवदेजलहरसें अति

सुख आनँद कारी॥१॥ दादुर मोर पपैया बोलत अंबरग
जैत भारी॥ रसिक रसिक कुंदन बरसत है पवन बहत
सुखकारी॥२॥ पिय प्यारी संग मोहन बोले सुनो हो ब्रज
जनारी॥ घन गर्जत डरपत तुम क्यों हो मेरे प्राणपिया
री॥३॥ यह सुख शोभा कहँ लग आवत झूलत न घो
ष कुमारी॥ मोहन मधुरे को दाहवें हास को दास बलि
हारि॥४॥ मलार॥ झूलै माई रसभरे रंग हिंडोरे॥ प
चरंग पाट पवित्रा पहिरे हसत हसत मुख मोरे॥१॥
सँग झूलत वृषभान नँदनी चंचल नैन चकोरे॥
बलि बलि जाउँ यह छबि पर दास को दास कि
सचोरे॥२॥

रा॰ मं॰ ॥ अहे माइ गोसाईं ब्रज सुंदरी झूलन सुरंग हिंडोरे ॥
बरन बरन पट पहिरे तन स्यामा दीन वचन नौल किसोर रंग बोरे ॥१॥ झूलत
संग लाल गिरिधर रस अति छबि बैन दामिनि कोरें ॥ नेन्हीं नेन्हीं
फुही परत बादर तें स्याम घटा घन घोरें ॥२॥ अति आनं
द भरी सब ग्वाल प्रीतम को चित चोरें ॥ श्री विठल गिरिध
र रसभीजे प्रेम तरंगिन झकोरें ॥३॥ मा॰ लव ॥ झूलत लाल
गोवर्द्धनधारी झूलत ही रंग लाग्यो हो ॥ स्यामा संग लाव
ते झूले लोक लाज भय भागे हो ॥१॥ अति सुकुमार ना
रि डरपत है मोहन उर लपटावे हो ॥ नील पीत पट फेह
रात है घन दामिनी छबि पावे हो ॥२॥ सुर नर मुनि सब कौ
तुक भूले निरख निरख सचु पावे हो ॥ चत्रभुज प्रभु
गिरिधरन लाल जस सुर नर मुनि मिल गावे हो ॥३॥

झूलत गोकुलचंद हिंडोरे झूलत सब ब्रजनारी ॥ स
त शोभित वृषभाननंदनी पहेरें कसुंभी सारी ॥१॥ पच
रंग डोरी करि गही लीने डांडी सर सलवारी ॥ आस क
रण प्रभु मोहन नागर गिरि गोवर्द्धन धारी ॥२॥ मा
उव ॥ झूलत हैं राधासुंदरवर सावनसरस हिंडोरे ॥
दुहुं ओर रस झुकत वा ओर रंग ब्रज जुवती चितचोरें ॥१॥
वरणवरन पहेरें तन अंबर प्रेम विवस दृग जोरें ॥
किलकत हसत सबे रसजपके रत कामत्रियाचि
तचोरें ॥२॥ तेही औसर बरखत रसबुंदन चहुं दिशा
घन घोरें ॥ कल्यानके प्रभु गिरिधरनी जे प्रति दे
त प्रीत पट छोरें ॥३॥

रागवसंत॥ खेलतवसंतविठलेशराय। निजसेवक
सुखदेवनआय। श्रीगिरिधरनाथुनाथ। गोविंद
नाथप्रियकारीनाथ। श्रीबालकृष्णछबिकहि
नजाय। श्रीगोकुलनाथजीनाहिसाय। रघुनाथ
नाथअमरनाथ। यदुनाथनाथचोवासंगाय॥
२॥ घनश्यामदासकेटनमनाव। सबबालकखेलन
एकदाव। तहांसुरदासनाचतहैंआय। परमानंदको
रेंगुनगाय। ३॥ चत्रभुजदासकेशरमादभनाव
छीतस्वामीगुनकैकेजाय। नंददासनिरखिछबिक
कहिआय। गोविंदजनदासबीनावजाय॥ ४॥ सब
गोविंदवालकछिरकेआय। कोउनाचतहैंहसमुसु
नाय।

सबबालकबीलेहोहोआय। उडौंअबीरगुलालधुंधरकाय॥५॥ पिचकारीरंगडलछीटेजाय। कोउकेकंतकूलेनअपनेजाय। कोउचोवाजेछिरकेबनाय। बाजेतालम्रदंगउपंगआय॥६॥ बिचयाजलसुरचंगसुरलीजाय। कोउअंडकलेकुंअरसोमिलाय। एकनाचलगानुउरवजाय। बानोसुखसनुउरकलुकघोनजाय॥७॥ सबबालकनीनेअंगसुवाय। श्रीगोकुलघरघरसुखहीछाय। सोजाकहेकहाकविजुबनाय। यहसुखसबसबकदिखाय॥८॥ सुरकुसुमनिबरखतहैंआय। सबगावैंमीठीगारीभाय। नवअपनेमनोरथाकरतआय तहोंकृष्णदास बलिहारीजाय॥ ९॥

राग --- ॥ मदनमोहन पिया के संग खेलत श्री वृषभानदु
लारी॥ चलो सखी जहाँ देखन जैये रंग बढ्यो अति भारी॥ १
सज सिंगार चली ब्रज वनिता कर लै कोरन हेम झारी॥
रासमंडार पर स्वर गावत देत पर स्वर तारी॥ २॥
बाजत ताल पखावज मुरली पग नूपुर झणकारी
सखिजन सब मिल देत झकोला बिहसत रोउ बि
हारी॥ ३॥ यह सोभा कछु कहत न आवै सुनो हो
सकल ब्रज नारी॥ बलि बलि जाउँ पीय प्यारी पर
दास सकोदास बलिहारी॥ ४॥